अंक : 79 अक्टूबर-दिसम्बर 1997

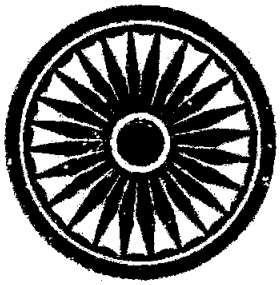

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

स्वतन्त्रता दिवस की पुकार

-अटल बिहारी वाजपेयी

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता-आजादी अभी अधूरी है।
सपने सच होने बाकी हैं, रावी की शपथ न पूरी है।।

जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आई।
वे अब तक हैं खानाबदोश गम की काली बदली छाई।।

कलकत्ते के फुटपाथों पर जो आंधी-पानी सहते हैं।
उनसे पूछो, पन्द्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं।।

हिन्दू के नाते उनका दुःख सुनते यदि तुम्हें लाज आती।
तो सीमा के उस पार चलो सभ्यता जहां कुचली जाती।।

इन्सान जहां बेचा जाता, ईमान खरीदा जाता है।
इस्लाम सिसकियां भरता है, डालर मन में मुस्काता है।।

भूखों को गोली नंगों को हथियार पिन्हाये जाते हैं।
सूखे कण्ठों से जेहादी नारे लगवाए जाते हैं।।

लाहौर, कराची, ढाका पर मातम की है काली छाया।
पख्तूनों पर, गिलगित पर है गमगीन गुलामी का साया।।

बस इसीलिए तो कहता हूं आजादी अभी अधूरी है।
कैसे उल्लास मनाऊं मैं ? थोड़े दिन की मजबूरी है।।

दिन दूर नहीं खण्डित भारत को पुनः अखण्ड बनाएंगे।
गिलगित से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनाएंगे।।

उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जाए, जो खोया उसका ध्यान करें।।

---

15 अगस्त, 1947 को लिखित

राजभाषा भारती

राजभाषा की त्रैमासिकी

वर्ष : 20
अंक : 79
अश्विन-पोष: 1919, अक्तूबर-दिसम्बर, 1997

☐ संपादक
प्रेम कृष्ण गोरावारा
निदेशक (अनुसंधान)
फोन: 4617807

☐ उप संपादक
नेत्र सिंह रावत
फोन : 4698054
सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा
फोन: 4698054

☐ संपादन सहायक
शांति कुमार स्याल
फोन: 4698054

नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्र-व्यवहार का पता:

संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन, (दूसरा तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

अनुक्रम

			पृष्ठ
☐ सम्पादकीय			3
☐ लेख			
1. समाज को समझने में इतिहास की भूमिका	—	बाल्मीकि प्रसाद सिंह	5
2. राजभाषा नीति कार्यान्वयन में राजभाषा अधिकारी की भूमिका	—	निशिकान्त महाजन	10
3. राजभाषा के रूप में हिंदी: संक्रमण की दशा ओर दिशा	—	डा॰ दामोदर खड़से	13
4. हिंदी साहित्य पर गांधी दर्शन का प्रभाव	—	डा॰ पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी	16
5. जन-जन की भाषा: हिंदी	—	डा॰ श्रुती शाम्भवी	23
6. कन्नड़ सरकार और अंग्रेजी	—	जगन्नाथ	25
☐ साहित्यिकी			
7. संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक इतिहास	—	डा॰ शशि तिवारी	26
☐ पुरानी यादें-नये परिप्रेक्ष्य			
8. पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह: हिंदी के प्रबल समर्थक	—	डा॰ परमानन्द पांचाल	30
9. डा॰ अम्बेडकर और उनका हिंदी प्रेम	—	रमेशचंद	33
☐ विश्व हिंदी दर्शन			
10. ब्रिटेन में हिंदी	—	लक्ष्मीनारायण दुबे	34
11. हिंदी—एक अंतर्राष्ट्रीभाषा	—	डा॰ जयंती प्रसाद नौटियाल	36
☐ भाषा संगम			
12. तमिल कविता गांधी: तेरा नाम जगत में—मूल	—	कवि: नामक्कल रामलिंगम पिल्ले	42
13. मलयालम कविता भारतेन्दु	—	कवि: जी॰ शंकर कुरूप्प	43
राष्ट्रपिता			44

	☐ **पुस्तक समीक्षा** (इस स्तम्भ में लेखक का नाम/समीक्षा का नाम पूर्वापर क्रम में दिया गया है) कच्ची मिट्टी के लोग; (विजय गोयल/विश्वनाथ प्रसाद कैलखुरी 'शास्त्री'), नाका बन्दी की बगावत; (शरत/डा॰ परमानंद पांचाल), काव्य में कृष्ण चरित्र (आलोचना); (डा॰ जयंती प्रसाद मिश्र/डा॰ सुधेश), रंगमंच के पांच रंग; (रिफअत सरोश/शांति कुमार स्याल), नया मन्वंतर; (चिरंजीत/डा॰ परमानन्द पांचाल), स्पर्श; (आराधना चौधरी/नेत्रसिंह रावत), स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा भागवत ठाकुर; (कमलेश्वरी प्रसाद मण्डल/शांति कुमार स्याल), देवमाला का हिमाचल; (शान्ति कुमार स्याल/सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा)	45
	☐ **हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह, 1997**	51
	☐ **कार्यशालाएं**	61
	☐ **समिति समाचार**	67
	☐ **संगोष्ठी/सम्मेलन**	70
	☐ **विविध** ●समाचार ●प्रतियोगिताएं ●प्रशिक्षण ●आदेश-अनुदेश ●पाठकों के पत्र	73

सम्पादकीय

पाठकों, राजभाषा भारती का अक्तूबर-दिसम्बर, 1997 का अंक आपके हाथ में है। आपको याद होगा कि जनवरी-जून, 1997 के अंक में हमने कहा था कि आने वाले अंकों में हम 15 अगस्त, 1997 से 15 अगस्त, 1998 तक पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मनाई जा रही भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के बारे में कुछ और लिखेंगे, कुछ और बातचीत आपसे करेंगे। आप इस बात से संभवत: अवगत होंगे कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ का यह ऐतिहासिक अवसर न केवल देशभर में बल्कि विदेशों में स्थित हमारे दूतावासों/मिशनों द्वारा अपेक्षित गरिमा और गौरव के अनुरूप मनाया जाता है भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ का एक आयोजन सचिवालय स्थापित किया गया है। मानव संसाधन विकास मंत्री की अध्यक्षता में यह सचिवालय भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के समन्वय अधिकारियों के साथ समय-समय पर बैठकों का आयोजन करके विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा इस संबंध में हुई कार्रवाई का जायजा लेता है और आगे के कार्यक्रमों के लिए भी दिशा-निर्देश देता है।

इस समय तक उक्त वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भारत सरकार के जिन मंत्रालयों/विभागों द्वारा आयोजन किए गए हैं उनका उल्लेख संक्षेप में नीचे किया जा रहा है।

रेल मंत्रालय द्वारा 16-17 अगस्त, 1997 को रेल डिब्बों में लगाई गई दो चल प्रदर्शनियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया है। इसमें प्रदर्शित चित्रों में देश की महानता और उसकी समृद्धता को रेखांकित किया गया है। यह रेल गाड़ी मार्ग में 200 से अधिक स्थानों पर रुकती हुई चलेगी। इसके अतिरिक्त हमारे स्वतंत्रता संघर्ष की गाथा तथा आधुनिक भारत के विकास को प्रत्यक्ष रूप से देखने का लाखों लोगों को अवसर मिलेगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महिला और बाल विकास विभाग द्वारा 15 अगस्त, 1997 से 15 अगस्त, 1998 तक देश के विभिन्न भागों में बाल उत्सवों का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् कुछ चुनिंदा बच्चे करीब एक सप्ताह के लिए राष्ट्रीय बाल उत्सव में भाग लेने के लिए नई दिल्ली में एकत्रित हुए। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की भूमिका और भारत की स्वतंत्रता पर आजाद हिंद फौज के प्रभाव पर प्रकाश डालने के लिए एक चलती-फिरती प्रदर्शनी का आयोजन संस्कृति विभाग के राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी का नाम "आजाद हिंद फौज से आजादी तक" है। यह अगस्त, 1997 में आरम्भ हुई और छ: मास में पूरे देश को कवर करेगी। स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर सम्पूर्ण देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिवस अर्थात् 2 अक्तूबर, 1997 को राष्ट्रपिता के प्रति अत्यंत कृतज्ञता प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि प्रकट की गई। अक्तूबर, 1997 को गांधी शांति फाउंडेशन द्वारा नई दिल्ली में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का 96वां जन्मदिवस मनाने के लिए एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा की गई। यह आयोजन भारत—50 सचिवालय की पहल पर किया गया। 13 अक्तूबर, 1997 से "शास्वत रूप ब्रिटिश संग्रहालय का खजाना" प्रदर्शनी आरम्भ हुई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति और ब्रिटेन की महारानी द्वारा किया गया। 23 अक्तूबर, 1997 को शहीद स्मृति यात्राओं का उद्घाटन समारोह चन्द्रशेखर आजाद के जन्म दिवस भावड़ा, जिला झागुवा में किया गया। यह आयोजन मध्य प्रदेश सरकार तथा स्वतंत्रता आन्दोलन समिति द्वारा किया गया। 31 अक्तूबर, 1997 को सरदार पटेल के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गुजरात सीनियर सिटीजन, बड़ौदा ने सरदार पटेल पर सार्वजनिक वार्ता और उनके छायाचित्रों की

प्रदर्शनी का आयोजन किया। नई दिल्ली में स्थानीय सरकार द्वारा आयोजित एक समारोह में सरदार पटेल की मूर्ति पर फूलमालाएं चढ़ाई गईं। 14 नवम्बर, 1997 को पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिन मनाने के लिए राष्ट्रीय बाल भवन में राष्ट्रीय एकता शिविर और "हम और हमारी स्वाधीनता" विषय पर 14-19 नवम्बर, 1997 तक बच्चों की एक सभा का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय स्थानीय केन्द्रों में आयोजित समारोह में सांस्कृतिक प्रदर्शनियों की व्यवस्था की गई। माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसमें भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई। "आई.एन.ए. ट्रायल" के आयोजन में 5 से 7 नवम्बर, 1997 तक आई.एन.ए. के 3 अधिकारियों के मशहूर ट्रायल की वर्षगांठ पर लालकिले में एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम "आजादी की दास्तान" आयोजित किया गया। इस समारोह में 3 नाटकों का—"आजादी के तराने", "खूनी बैशाखी" और "दिल्ली चलो" का मंचन किया गया। समारोह में आई.एन.ए. के श्री जी.एस. ढिल्लो और श्रीमती लक्ष्मी सहगल को सम्मानित किया गया। समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री, रक्षा मंत्री, दिल्ली के मुख्यमंत्री और दिल्ली के उपराज्यपाल ने पधार कर शोभा बढ़ाई।

लाला लाजपत राय के शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 17 नवंबर, 1997 को एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें भारत के उप-राष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली के प्रगति मैदान में जो भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला लगा उसका विषय भी भारत की आजादी की स्वर्ण जयंती था। डी.ए.वी.पी. द्वारा लोगों को भारत के शानदार स्वतंत्रता संग्राम और पिछले 50 वर्षों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी देने के लिए एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

ऊपरिलिखित कार्यक्रमों/कार्यकलापों के अतिरिक्त भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों/विभागों द्वारा भी इस ऐतिहासिक अवसर को हर्षोल्लास से मनाने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन स्वतंत्रता के उन अमर शहीदों की याद में किया जा रहा है जिनके सतत् संघर्ष, त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप ही हमारे लिए स्वतंत्र भारत की सुबह देख पाना संभव हुआ है। उन सेनानियों का यह निःस्वार्थ त्याग और बलिदान भारत की हर पीढ़ी हमेशा-हमेशा याद करती रहेगी।

जय हिंद—जय भारत।

—प्रेम कृष्ण गोरावारा

लेख

समाज को समझने में इतिहास की भूमिका

—बाल्मीकि प्रसाद सिंह

मैं अपने प्रतिष्ठित मित्र डा॰ चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे के. के. दत्त स्मृति व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। मैंने यह सम्मान और दुर्लभ सौभाग्य का अवसर मुख्यत: महान शिक्षक और विद्वान डॉ॰ कालीकिंकर दत्त की स्मृतियों के प्रति सम्मान के नाते स्वीकार किया। अपने छात्रों के प्रति उनकी अनुकम्पा के बारे में बहुत-सी कहानियां हैं। मैं पटना कॉलेज और पटना विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के स्नातकोत्तर विभाग के छात्र और व्याख्याता.... दोनों के रूप में उनकी कृपा का पात्र रहा हूं। मुझे 1964 की उस दोपहरी की स्पष्ट स्मृति है, जब मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियुक्ति के बाद जब मैं उनसे विदा लेने गया था, काली बाबू ने मुझसे इस खूबसूरत पटना संग्रहालय परिसर में साथ आने का अनुरोध किया था, जहां उनका अलग से कार्यालय था। वह अपने बंदगले की स्वच्छ पोशाक में थे और उन्होंने ड्राइवर को खूब धीमे चलने का निर्देश दिया। काली बाबू यह सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि उनकी कार किसी भी वाहन को 'ओवरटेक' न करे और मैंने देखा कि तेज गति से जाते वाहन, यहां तक कि कुछ रिक्शे भी उनकी छोटी काले रंग की कार को, जिसकी गद्दियां गहरे मेरून रंग की थीं, ओवरटेक कर रहे हैं। वह मुझे अपने कमरे तक ले गये, मुझसे कई सवाल किये और मुझे इस विदाई के समय कुछ राय दी और जब मैं उनसे विदा होने को खड़ा हुआ तो मैं उनकी नम आंखों को देख सकता था।

एक इतिहासकार के रूप में, उन्हें बिहार के लोगों, और इस महान राष्ट्र के लिये गहरा प्रेम और आदर था, जिसे उन्होंने ऐतिहासिक यथातथ्यता और मानवीय विवेक के साथ अपने लेखन में चित्रित किया। काली बाबू डॉ. आर. सी. मजूमदार, डॉ. एस. सी. रायचौधरी, डॉ. अल्तेकर और डॉ. नीलकण्ठ शास्त्री की पीढ़ी के थे। वह भारतीय इतिहास को उसके सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने में सफल रहे और इस देश के छात्रों की कई पीढ़ियों पर उन्होंने गहरा प्रभाव डाला और अब भी डाल रहे हैं। उनके विश्लेषण में इतिहास मृत अतीत नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक आधार है। किसी समाज की स्मृति को इस रूप में संरक्षित रखने की आवश्यकता है कि यह भविष्य के लिए आधार के रूप में काम कर सके।

कोई भी अनुसंधान, जो इतिहास और समाज के संबंधों के बारे में विचार करना चाहता है, प्रथमत: यह आवश्यक है कि हम कुछ शब्द इस बारे में कहें कि 'इतिहास' और 'समाज' से हमारा क्या तात्पर्य है। सभी अवधारणाओं की तरह इतिहास की धारणा की भी व्याख्या बहुत सहज नहीं है। सब से सरल रूप में कहें तो इतिहास किसी व्यक्ति अथवा समाज, राष्ट्र की पुनर्रचना से सम्बद्ध है। यह इस अतीत की रचना एक आख्यान के रूप में करता है। यह, जो अनुसंधान किया जा रहा है उसके विभिन्न पक्षों के मध्य अंतर्सम्बन्ध स्थापित करता है, साथ ही, उसी समय इस पर भी विचार करना चाहता है कि किस प्रकार व्यक्ति अथवा समुदाय अथवा राष्ट्र ने, जिस के बारे में चर्चा हो रही है, समय के साथ अपने को परिवर्तित किया है।

एक व्यक्ति के रूप में हम में से प्रत्येक के पास इसकी स्मृति है कि कैसे कोई समय के अंतराल में विकसित हुआ है। यह स्मृति, जिसे एक व्यक्ति अपने स्वयं के जीवनानुभवों के मानस में संचित करता है, एक व्यक्ति के रूप में उसका इतिहास है। जिस क्षण में इतिहास की व्याख्या इस तरह से करता हूं। यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी व्यक्ति के लिए स्वयं के बिना ऐतिहासिक ज्ञान के, या बिना ऐतिहासिक समझ के जीवित रह पाना असम्भव है। क्या हम, एक क्षण के लिए उस मनोवैज्ञानिक स्थिति की कल्पना कर सकते हैं, जिसे 'स्मृति लोप' कहा जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, 'स्मृति लोप' एक ऐसी मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति अपने अतीत के बारे में सब कुछ भूल जाता है। इस तरह के स्मृति भ्रंश से होने वाली आत्मविस्मृति भयंकर हो सकती है। इसका परिणाम होता है... अपने जीवन का मार्ग पार कर सकने में व्यक्ति की पूर्ण अक्षमता। जो कुछ एक व्यक्ति का सच है, वही समाज का भी सच है। एक व्यक्ति के रूप में खुद को समझने के लिए और जीवन का अपना मार्ग पार करने के लिए अपने जीवनानुभवों की स्मृति की जरूरत होती है; इसी प्रकार कोई समाज या राष्ट्र... जो व्यक्तियों का समूह है... अपने अतीत और अपने जीवनानुभवों की स्मृति की जरूरत महसूस करता है। यह स्मृति उक्त समाज या राष्ट्र को स्वयं की समझ, सामाजिक और नैतिक संतुलन और अपने भविष्य पर सार्थक ढंग से विचार करने की क्षमता देती है और भविष्य को साकार करने की ओर क्रियाशील करती है, जिसकी कि यह आकांक्षा करती है। इससे सुस्पष्ट है कि किसी व्यक्ति, या किसी समाज या किसी राष्ट्र के लिए स्वयं की ऐतिहासिक समझ कितनी आवश्यक है। इस तरह की समझ न केवल व्यक्ति या समूह को संतुलन और दिशा का बोध देती है, बल्कि यह उस अपने भविष्य की रूपरेखा तय करने में सक्षम बनाती है।

यह संगत होगा कि इसके अतिरिक्त कुछ प्रासंगिक प्रश्नों के द्वारा इतिहास ओर समाज के साथ इसके संबंध के बारे में अपनी छानबीन करें जो कि आज के व्याख्यान के विषय से उद्भूत होती है। इतिहास किस प्रकार लिखा जाता है ? क्या बहुत-सी विधियां हैं, जिसके द्वारा अतीत की रचना की जा सकती है अथवा एकमात्र विधि है, जिसके द्वारा यह लिखा जा सकता है या लिखा जाना चाहिए। इतिहास और विचारधारा के बीच क्या सम्बन्ध है ? और किस प्रकार इतिहास और विचारधारा का यह सम्बन्ध

वस्तुनिष्ठ इतिहास की अवधारणा को मापता है, यदि वस्तुनिष्ठता किसी प्रकार सम्भव हो? क्या समाज के भविष्य को आकार देने में इतिहास की कोई भूमिका होती है और यदि ऐसा है तो इस नैरन्तर्य में यह कौन-सी सुनिश्चित भूमिका अदा करता है।

मानववादी विद्वानों के समक्ष यह पहले ही सुस्पष्ट है कि 'हिस्ट्री' या इतिहास (जैसा कि हम अपनी ज्ञान-व्यवस्था में इसे परिभाषित करते हैं) एक ऐसा अनुशासन है जो समझ की पूर्णता का एक अभ्यंतर तत्व निर्मित करता है जिसे कि व्यक्ति और समाज स्वयं अपने बारे में और अपने चारों ओर फैली दुनिया के बारे में रखता है। इसे व्यापक रूप में लें तो ऐतिहासिक आख्यान अधिकांशतः स्मृति से लिखे जाते हैं : लिखित या मौखिक ब्यौरों से जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते चलते हैं। और फिर ऐतिहासिक विद्वत्ता के संरक्षकों द्वारा एक औपचारिक पाठ में परिणत किए जाते हैं। इसी व्यापक अर्थ में कि महान महाकाव्य भी, जो हमारी संस्कृति के सत्त्व की रचना करते हैं, हमारे समाज का इतिहास हैं। हमारी साहित्यिक विरासत में पुराण एक समान ज्ञान-संग्रह की निर्मिति करते हैं। ज्ञान के ये दोनों निकाय अंशतः सर्जनात्मक कल्पना का कार्य करते हैं और अंशतः स्मृति से लिखे जाते हैं, जो व्यक्तियों अथवा समुदायों के पास अपने की होती हैं। जैसा कि मैंने बताया उन्होंने समाज को स्वयं के बारे में समझ देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; साथ ही उसी समय वे हमारे समाज के भविष्य को आकार देने में आचरण और हस्तक्षेप के आधार थे।

जब कि इतिहास की परम्परा के पास हमारे समाज में बहुत विचारणीय पुरातनता है, इतिहास के आधुनिक अनुशासन के पास, जो आज हमारे उच्च अध्ययन संस्थानों में पढ़ा और लिखा जाता है, कुछ अलग वंशावली है। इतिहास समाज के लिए उसके अतीत की स्मृति की रचना, इस उद्देश्य से करना चाहता है कि मैंने पहले से ही इसे महत्त्व दिया है। तथापि ऐतिहासिक आख्यान की रचना, इतिहास के आख्यान की रचना से काफी भिन्न प्रक्रिया है। ऐतिहासिक पाण्डित्य, जैसा कि हम इसे अधिगम के औपचारिक केन्द्रों में समझते हैं, 18वीं और 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक ले जाता है और ऐतिहासिक आख्यान विद्वानों द्वारा अतीत के राजनीतिक अभिनेताओं द्वारा प्रोद्भूत अभिलेखन के माध्यम से रचे गये। इस प्रकार, जिस आधार पर ऐतिहासिक आख्यान रचे गये, वह उस आधार से नितांत भिन्न था, जिससे इतिहास का आख्यान रचा गया। इतिहास के इस चरित्रांकन से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास-लेखन-कार्य के लिए क्यों अभिलेख पर आधारित प्रलेखन नितांत आवश्यक है।

आधुनिक काल में जब इतिहास के अनुशासन को निश्चित रूप दिया गया, तो मानववादी विद्वानों के मन में तीव्र इच्छा थी कि मानवीय कार्य-व्यापार के बारे में समझ और जानकारी हासिल की जाए, जो कि उन्हीं निश्चितियों पर आधारित थी, जिन्होंने प्रकृति और पदार्थ के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान को चित्रित किया था। यह विश्वास कि वैज्ञानिक जगत में स्थापित ज्ञान के प्रकार को मानवीय कार्य-व्यापार में प्रतिचालित कर पाना सम्भव है, प्रत्यक्षवाद कहलाता है। और जब 19वीं सदी में आधुनिक इतिहास की नींव रखी गयी, प्रत्यक्षवाद की विचारधारा का बौद्धिक जगत में व्यापक प्रसार था। इस मनोवेग के तहत कार्य कर रहे विद्वानों का विश्वास था आभिलेखिक प्रलेखन के जरिये वे मानव अतीत के बारे में ज्ञान पैदा कर सकते हैं, जो कि उसी प्रकार यथातथ्य होगा, जैसा कि किसी भौतिकशास्त्री द्वारा जड़ पदार्थ के व्यवहार बारे में अथवा किसी रसायनशास्त्री द्वारा कार्बनिक या अकार्बनिक पदार्थ की संरचना के बारे में प्रस्तुत ज्ञान।

तथापि 19वी सदी के इतिहासकारों की प्रत्यक्षवादी मान्यताएँ बहुत समय तक नहीं स्वीकृत रह पायीं। क्योंकि शीघ्र ही इस बात की प्रतीति हो गई कि मानवीय क्रिया व्यापारों से रू-ब-रू होने में, विद्वान-सामाजिक अस्तित्व को समझने में व्यस्त थे जो कि वैज्ञानिक जाँच की विषयवस्तु से गुणात्मक रूप से बहुत भिन्न था। कार्बनिक या अकार्बनिक जड़ पदार्थ से भिन्न मानव के पास अपने चित्त में प्रतिभा का एक चैतन्य अधिष्ठान था; इसलिए उसके विचार और क्रियाओं का निर्धारण या विश्लेषण जड़ पदार्थ के व्यवहार या संघटन के अनुरूप नहीं किया जा सकता।

संसार के 20वी सदी में प्रवेश करने के साथ इतिहासकारों के समक्ष स्पष्ट होता गया कि मानव सम्बन्धी खोजबीन के लिए प्रत्यक्षवाद एक भ्रामक निर्देशक था और यह भी कि यद्यपि मानव सम्बन्धी ज्ञान यथातथ्य हो सकता है, उस पर वस्तुनिष्ठता या निश्चिति का दावा करना कठिन था, जैसा कि प्राकृतिक विज्ञानों के साथ इसे सम्बद्ध करने की हमारी प्रवृत्ति है। वस्तुतः उसी समय प्राकृतिक विज्ञानों में भी निश्चितता की अवधारणा खण्डित हुई।

यह सभी एक तरफ हमें इतिहास और विचारधारा के सम्बन्ध की नयी पड़ताल की ओर ले जाता है तो दूसरी तरफ, इतिहास—समाज के भविष्य को आकार देने में जो भूमिका निभाता है, उसकी ओर। हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि प्रलेखन, जिसे इतिहासकार अपने आख्यान का आधार बनाते हैं, इतना व्यापक और प्रभूत है कि अध्येता को एक सुव्यवस्थित सिद्धांत की आवश्यकता महसूस होती है—एक विश्व-दृष्टि; अथवा एक विचारधारा, जिससे वह कच्चे आंकड़ों से अतीत के बारे में एक आख्यान की रचना कर सके। सभी ऐतिहासिक लेखन, इसलिए मान्यताओं और पूर्वधारणाओं पर आधारित होता है। फिर भी, हम अनुभव से जानते हैं कि ऐतिहासिक आख्यान दो अंतःसम्बन्धित खण्डों से बने होते हैं। एक खण्ड, जिसके पास इसके बारे में 'वस्तुनिष्ठता' सुस्पष्ट गुण होता है; और दूसरा खण्ड जो उन मान्यताओं और विश्व-दृष्टि की ओर काफी झुका होता है, जो आख्यान को आकार देते हैं और इसे एक भविष्यत्कालिक धार देते हैं। उदाहरण के लिए, हमारे स्वतंत्रता संग्राम की महाकाव्यात्मक कथा के बारे में विचार कीजिये। इतिहासकारों में इस बारे में मतैक्य है कि महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक संघर्ष के कारण भारत स्वतंत्र हुआ। एक दूसरी दृष्टि है कि 1857 की सशस्त्र क्रांति, दक्षिण और उत्तर-पूर्व में जनजातीय विद्रोह और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय सेना द्वारा निभायी गयी भूमिका के बगैर भारत का स्वतंत्र हो पाना सम्भव नहीं था। तीसरी विचारधारा जिसे हाल के वर्षों में मान्यता मिली है—वह किसानों, औद्योगिक मजदूरों और स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका को लेकर है; जिसे गौण अध्ययन के नाम से जाना जाता है। एक चौथी दृष्टि हमारे सर्जनात्मक लोगों—लेखकों, कवियों, संगीतकारों, नाट्यकारों, चित्रकारों, पत्रकारों और अन्य लोगों—के महत्वपूर्ण योगदान को उजागर करने वाली हो सकती है, जिन्होंने सामाजिक सुधारों और स्वतंत्रता आंदोलन को अर्थ दिया। इसलिए इतिहास का अनुशासन समझ और चैतन्य उत्पन्न करता है, जिसका 'किसी समाज के आशाजनक, सम्भव और वांछित भविष्य' पर अत्यधिक प्रभाव पड़े हैं।

मेरे विचार में सामाजिक प्रक्रिया मानवीय गतिविधि के समूचे स्वरग्राम को समेटती है जो आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक लक्ष्य से सम्बद्ध है। मेरा यह भी विश्वास है कि छात्रों की प्रत्येक पीढ़ी के लिए समाज की समझ अपरिहार्य है। भारतीयों के लिए इसकी प्रासंगिकता को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जा सकता क्योंकि हमारी सभ्यतापरक उपलब्धियाँ हमारे 5000 वर्षों और उससे अधिक इतिहास के दौरान प्रकृति पर टिकी रही हैं। वस्तुत: भारत के संस्कृति ने, जो ईसाई युग के काफी पहले विकसित की गयी थी, भारतीयों की आनुक्रमिक पीढ़ियों को एक मनोभाव; एक मूल्य व्यवस्था और जीने का एक मार्ग दिया जो समय के अंतराल और जनसंख्या में भारी वृद्धि के बावजूद उल्लेखनीय नैरंतर्य के साथ बना हुआ है। यह आज भारतीयों को एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कर रहा है, जैसा कि इसने इनके लिए अतीत में किया है। पहली ई. में भारत एक अत्यधिक विकसित सभ्यता था और ईसाई सदी से पूर्व साहित्य, कला, नृत्य, नाटक, कविता, अर्थ-व्यवस्था, ज्योतिष और धर्म के क्षेत्र में भारतीय उपलब्धियाँ पिछले दो हजार वर्षों के दौरान भारतीयों को प्रभावित करती रही हैं। इस तथ्य पर गर्व किया जा सकता है कि चीन को छोड़ कर भारत एकमात्र ऐसा देश है, जिसने समय-समय पर अपने को नवीकृत किया है और नवीकरण या अभिनव प्रयोग का कोई भी बड़ा कृत्य अपने अतीत से बिल्कुल विलग नहीं रहा है। अपने लम्बे इतिहास में हमने बहुत-सी गहराई से जुड़ी मान्यताओं को खारिज किया है, लेकिन उसी के साथ, हमने अपने पुरखों के प्रति आदर और गर्व को बनाये रखा है।

मानवीय गतिविधि के कई क्षेत्रों में हमने तीव्र विकास किया है। 1800 में कोई व्यक्ति भूमि पर आराम से एक दिन में 24 मील की यात्रा कर सकता था। यह यात्रा 8 घंटों में पूरी की जाती थी, प्रति घंटा 3 मील की तेज गति से। यह किसी व्यक्ति के लिए असामान्य बात नहीं थी कि वह रात्रि भोजन के लिए 12 मील जाये और फिर 12 मील चलकर घर वापिस आये। थॉमस कार्लाइल (1795-1881) कभी-कभी रात्रि भोजन के लिए राल्फ वाल्डो इमर्सन (1805-1882) के साथ भोजन के लिए इतनी दूरी तय करके आते थे, ऐसा इमर्सन अपनी अंग्रेजी टिप्पणी में बताते हैं। कार्लाइल घोड़े द्वारा यह दूरी कम समय में तय कर सकते थे, लेकिन वह गरीब थे और उनके पास घोड़ा नहीं था। 21वीं सदी के लिए भविष्यवाणी है कि कोई व्यक्ति कार में बैठकर आराम से 100 मील प्रतिदिन यात्रा कर सकता है और वायुयान में औसतन 1000 मील से अधिक की दूरी तय कर सकता है। सूचना के क्षेत्र में हम 'सुपर राजमार्ग' के दौर में पहुंच गये हैं, जो न केवल विश्व के दूसरे क्षेत्र से सूचना प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि एक साथ कई व्यक्ति इसमें साझेदारी कर सकते हैं।

पुरुष और महिलाएं, पदार्थ और सूचनाएं अब विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक अत्यंत तीव्र गति से यात्रा कर रही हैं, जैसा पहले सम्भव नहीं था। यह भौगोलिक संचालन सूचना-क्रांति के द्वारा और तीव्र हुआ है, जो किसी व्यक्ति को, न केवल शारीरिक गति के माध्यम से चीजों को देखने और बेहतर जानने की अनुमति देती है, बल्कि बैठने और विभिन्न देशों के टेलिविजन, ई. मेल, समाचार पत्रों को देखने की सुविधा प्रदान करती है और इस तरह उन्हें सूचनाएं प्रदान करती है। वस्तुत: सूचना की गति ध्वनि से तेज चलने वाले यानों से काफी तीव्र है।

संसार में बहुत से लोग हैं, जिनका विश्वास है कि हमारी दुनिया की अखण्डता की अवधारणा 20वी सदी के मध्य में सामने आई होगी, जब किसी ने पहली बार अंतरिक्ष से आंखों और अंतरिक्ष यात्रियों के कैमरों की मदद से पृथ्वीग्रह को देखा होगा। अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखना निश्चित रूप से अधिक क्रांतिकारी था, लेकिन एक विश्व की परिकल्पना और एक विश्व परिवार की कल्पना निश्चित रूप से काफी पुरानी थी। सदियों पूर्व, भारतीय दार्शनिकों ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी, जिसका अर्थ आज भी उतना आधुनिक है जितना आने वाले समय में रहेगा, और वह घोषणा, जिसे संस्कृत से मुक्त रूप में रूपांतरित किया गया है, इस प्रकार है:

"वे छुद्र-मस्तिष्क वाले हैं जो इस संसार को अपने पूर्वग्रहों द्वारा विभिन्न प्रकार के विभाजनों और सीमांकनों के साथ तुच्छ बनाते हैं जो संसार के लोगों को विलग करते हैं। वे, जो उदार चरित्र वाले हैं और व्यापक दृष्टि रखते हैं उनके लिए पूरा संसार एक परिवार है।" (उदार चरितानाम्, वसुधैव कुटुम्बकम)

भूमण्डल की सदस्यता के दार्शनिक पृष्ठपट, संचार रूपांतरण और सूचना क्रांति के बावजूद, जिसे आज हम देख रहे हैं, एक समाज की योग्यता पर निर्भर करता है कि वह इन परिवर्तनों को अपनाये और इस विस्तृत संसार में अपनी भूमिका अदा करे। इस संदर्भ में, व्यक्ति के कौशल का बहुत महत्त्व है और व्यक्तिगत कौशल की प्राप्ति सीधे अध्ययन संस्थाओं की निपुणता और उनकी क्षमताओं से सम्बद्ध है, केवल परम्परागत दर्शन और वैश्विक घटनाओं से नहीं।

बिहार के इतिहास के साथ गाहे-ब-गाहे मेरी मुठभेड़ में मुझे एक युवा प्रशासक के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली जो 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उत्तर बिहार के पहले बंदोबस्त अधिकारी के रूप में नियुक्त हुआ। उसका मुख्यालय मुजफ्फरपुर था। मैक गवर्न युवा था और जब वह अपनी रिपोर्ट के प्राक्कथन में लिखता है कि वह बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में पुस्तकों द्वारा परिचित है और वह इसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव करना चाहता है तो वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के इतिहास के युवा छात्र की दृष्टि की नवीनता का परिचय देता है। सभ्यतापरक उपलब्धियों की शब्दावली में उत्तरी बिहार के भूगोल की उसकी समझ, उसे वर्तमान दरभंगा और मधुबनी जिले के गांवों में ले जाती है क्योंकि इसी भूमि में न्याय और योग दर्शन उत्पन्न हुए थे। वह यह देखकर स्तम्भित रह गया कि मिथिला के लोगो की विश्लेषणात्मक क्षमता युगों के अंतराल में अपनी चमक खो बैठी है और वे गरीबी और अज्ञान के डूबे हुए हैं लेकिन अब भी कुछ चिन्गारियाँ शेष हैं। उसने आश्चर्य व्यक्त किया कि ऐसा क्यों हुआ लेकिन उसने इसका उत्तर नहीं दिया और इस उत्तर न देने के लिए इस तर्क का आश्रय लिया कि बंदोबस्त अधिकारी की रिपोर्ट में इन प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

रामधारी सिंह दिनकर ने हिमालय पर लिखित अपनी प्रसिद्ध कविता में कुछ प्रासंगिक सवाल उठाये हैं और यही बेहतर है कि मैं उसका कुछ अंश उद्धृत करूं :

तू पूछ अवध से राम कहाँ?
वृन्दा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ कहां इसने खोई
अपनी अनंत निधियाँ सारी?

री कपिलवस्तु! कह बुद्धदेव
के वे मंगल उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गये हुए संदेश कहाँ?

वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी-शान कहाँ?
ओ री उदास गंडकी! बता
विद्यापति-कवि के गान कहाँ?

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

तू मौन त्याग कर सिंहनाद
रे तपी! आज तप का न काल
नव-युग—शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल।

दिनकर जी की इस कविता ने किशोर और किशोरियों को प्रभावित किया और स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान कार्य के लिए प्रेरित किया। यह कविता आज बहुत प्रासंगिक है, क्योंकि बिहार की अर्थ-व्यवस्था और राज्य व्यवस्था में तत्काल सुधार की जरूरत है।

इस तरह के प्रश्न पूछने आवश्यक हैं, क्योंकि बगैर पूछे इतिहास उत्तर नहीं देता। तथापि, यह भी सच है कि इतिहास मात्र इसलिए भी उत्तर नहीं देता कि किसी ने प्रासंगिक प्रश्न पूछा है। मेरे विचार में पहली आवश्यकता वर्तमान को समझने की है और यही वह समझ है जो हमें सांस्कृतिक विश्वास, स्वभाव और यहां तक कि उत्पादन प्रक्रियाओं के प्रभाव में परिप्रेक्ष्य में आधारभूत निवेश प्राप्त करने में सक्षम बनाएगी। यह भी सच है कि विश्व के लोग बिहार के लोगों का सिर्फ इसलिए सम्मान करने नहीं जा रहे कि 2500 वर्षों से भी पूर्व पटना विश्व का सबसे खूबसूरत और आधुनिक नगर था अथवा नालंदा विश्व का सर्वोत्कृष्ट विश्वविद्यालय था अथवा लिच्छवियों के यहां प्रतिनिधिक गणतंत्र था। यह सच है कि हम पाणिनि, आर्यभट्ट, कपिल, चाणक्य और अन्य कई के वंशज हैं। लेकिन इसी के साथ आज हम कहां हैं? इस स्थिति को हम मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में कह सकते हैं :

"हमारे दादा को हाथी था, हम सीकर लिये फिरते हैं।"

क्योंकि हम नयी सहस्राब्दी में प्रवेश कर रहे हैं, कुछ निश्चित विशेषताएं हैं जो सम्पूर्ण विश्व के लिए उभयनिष्ठ होंगी। ये हैं—कम्प्यूटर, टेलिविजन, विज्ञान की जानकारी, जिसमें बाह्य अंतरिक्ष और बाजार की अर्थव्यवस्था शामिल है। प्रत्येक समाज को इस नये संसार में प्रतिस्पर्धा के लिए कौशल विकसित करने होंगे। यह किसी व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धियों और उसके व्यावहारिक ज्ञान से सम्बद्ध है। कोई व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत अथवा मस्तिष्क की आधारभूत समृद्धि के होते हुए भी भविष्य को हाथ से जाने देगा, यदि उसने नयी प्रौद्योगिकी में प्रवीणता नहीं हासिल की है। मैं कविता, दर्शन, लोक साहित्य, गीत, संगीत, स्थानीय भाषाओं और धार्मिक विश्वासों की भूमिका को नकार नहीं रहा हूं, लेकिन ये अपने आप में किसी समाज को इस प्रतियोगात्मक संसार में अपनी महानता स्थापित करने का अवसर नहीं देते।

हम स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ एक वर्ष भर चलने वाली समारोह-श्रंखला के रूप में मना रहे हैं जो 15 अगस्त 1997 से प्रारम्भ हो रहा है। अपने समकालीन इतिहास का निकट से अध्ययन उद्घाटित करेगा कि कहां हमने गलत दिशा पकड़ी है, खासकर बिहार के संदर्भ में। फिर भी यह अवसर नहीं है कि हम अपनी उपलब्धियों या कमियों की सूची बनायें। प्रत्येक समाज को अतीत की गलतियों के प्रति एक स्वस्थ उपेक्षा भाव विकसित करना चाहिए। हमें निश्चित रूप से इस असंतोषजनक यथापूर्ण स्थिति को बदलने के लिए कार्य करना चाहिए अथवा कुछ अनुभूतिक्षम प्रेक्षकों के विचार में प्रारम्भ और अधिक स्खलन को रोकना चाहिए। अंततः अपनी दृष्टि उठानी होगी।

पहली और प्रधान है शिक्षा। 50% से अधिक हमारे लोग अशिक्षित हैं, जिनमें 70% महिलाएं हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम इसे एक सामाजिक चुनौती के रूप में लें। इस बात पर भी जोर देने की आवश्यकता है कि अकेले साक्षरता बिहार को एक महान भूमि और बिहारियों को महान व्यक्ति नहीं बना सकती। लेकिन यह आधारभूत है। सूचना प्रौद्योगिकी में हुए नवीनतम विकास की मांग होगी कि हम अपने बच्चों को अविलम्ब कम्प्यूटर का प्रशिक्षण तीसरी कक्षा से ही देना शुरू करें। कम्प्यूटर वर्तमान, साथ ही भविष्य की भाषा के रूप में उभर कर सामने आया है, जब कि कम्प्यूटर स्वयं तीव्र परिवर्तन की प्रक्रिया में है। भारत के कुछ भागों ने भारतीय क्षमता प्रदर्शित की है और इस भाषा में प्रवीणता हासिल करने के लिए बिहार उस समूह में शामिल हो सकता है। यह कोई कठिन सांस्कृतिक कार्य नहीं है, बल्कि इसके लिए प्रशासनिक प्रबंध किये जाने की आवश्यकता है।

दूसरी महत्त्वपूर्ण चीज है—स्वैच्छिक क्रिया का क्षेत्र। आवश्यकता है कि स्वैच्छिक संस्थाएं तेजी से वृद्धि करें। इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि वे प्रामाणिक हों और आधारभूत विषयवस्तु और सिद्धांतों, यथा कम्प्यूटर शिक्षा, पर्यावरण, जनतांत्रिक अधिकारों, सार्वजनिक निधि के उचित उपयोग और इसी प्रकार अन्य चीजों से सम्बद्ध हो। पंचायतों को निधि के हस्तांतरण और पंचायत स्तर पर एक नये नेतृत्व के उभार के साथ एन.जी.ओ. को सक्षम होना चाहिए कि वे 'सार्वजनिक धन' को थोड़ी संवेदनशीलता के

साथ देखें और दूसरों की चेतना को तीक्ष्ण करें। इससे धन का उचित और सम्पूर्ण उपयोग हो सकेगा। यह—कृषि के विकास, उद्योग, सुरक्षित पीने के पानी की आपूर्ति, आवश्यक वस्तुओं की सार्वजनिक वितरण प्रणाली, स्वास्थ्य की देखभाल और दूसरी नागरिक सुविधाएं के क्षेत्र में भी गतिशीलता बढ़ायेगा। अपना हित-साधन करने वाले समूहों के विरुद्ध सम्बद्ध नागरिकों का यह नया मोरचा एक बेहतर समाज की रचना को सुनिश्चित करेगा, जिसे हमारे बच्चों के बच्चे पायेंगे।

तीसरी चीज बिहार के सम्बन्ध में बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक कार्यक्षेत्र में नेतृत्व से सम्बन्धित है। जो शिक्षित हैं और जिन्हें अच्छी शिक्षा का लाभ मिला है, उनकी सामाजिक जिम्मेदारी बहुत अधिक है। यह सुनकर आप सचमुच निराश होंगे कि बिहार के उच्च पदस्थ और शिक्षित व्यक्ति बिहार में रहना नहीं चाहते। अपने विद्वानों, अध्यापकों को न केवल भारत के विभिन्न क्षेत्रों, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में भेजने की हमारी शानदार परम्परा रही है। बहुत-से लोग नहीं जानते कि असम के महानतम विद्वान और शिक्षक शंकरदेव के पिता मिथिला के थे। बिहार के लोगों ने न केवल भारत में उच्च पद प्राप्त किये हैं, बल्कि बिहार मूल के लोग दूर देशों में प्रधानमंत्री तक हुए हैं। पिछले सौ वर्षों के दौरान हमने अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, पत्रकार और दूसरे दक्ष लोग बंगाल, साथ ही दक्षिण से प्राप्त किये हैं और हमने उनका सम्मान किया है। बदले में उन्होंने न केवल शहरी केन्द्रों बल्कि बिहार के सुदूर गांवों में सेवा की है। मैं अपने गांव बिहटा के डॉ. एन.सी. पाल और जी.डी. कॉलेज, बेगूसराय के अपने अंग्रेजी शिक्षक प्रो. एम.ए. बोस को कृतज्ञता और आदर के साथ याद करता हूं। इसलिए यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हम अपने सक्षम लोगों को बिहार के बाहर शहरी केन्द्रों में तेजी से खो रहे हैं, जबकि उनकी जरूरत अपने गृह-राज्य में है। मैं लम्बे समय तक सरकार में रहा हूं, इसलिए सरकार के महत्त्व और उसकी सीमाओं का मुझे अनुभव है। यह प्रत्येक समाज के अभिजात वर्ग की जिम्मेदारी है और विशेषकर बिहार के अभिजात वर्ग की, जहां बाजार की शक्तियां अभी विकसित नहीं हैं कि विकास के एजेंट की भूमिका निभा सकें।

समकालीन इतिहास हमें सिखाता है कि यह वांछनीय होगा कि इन दिशाओं में दृढ़प्रतिज्ञ होकर बढ़ें। हमारा प्राचीन इतिहास बताता है कि हमारे ऊपर इस सम्बन्ध में न केवल ऐतिहासिक जिम्मेदारी है, बल्कि क्षमता भी है। महात्मा बुद्ध के वचन इस संदर्भ में आज भी प्रासंगिक हैं :

"और कोई भी हो, आनंद, या तो अभी या बाद में मैं मरूंगा, उसे स्वयं के लिए दीपक बनना होगा, और अपने लिए आश्रम बनना होगा, उन्हें अपने लिए कोई बाह्य आश्रय नहीं लेना होगा, बल्कि सत्य को अपने दीपक की तरह पकड़े रखना होगा, ... अपने अतिरिक्त किसी अन्य की ओर सहायता के लिए नहीं देखना होगा—ये वे हैं—जो उच्चतम शिखर पर पहुचेंगे। लेकिन उन्हें सीखने के लिए इच्छुक होना होगा।"

कृपया मुझे महात्मा बुद्ध द्वारा उच्चरित अंतिम शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करने की अनुमति दें जो उन्होंने 463 ई.पू. में अस्सी वर्ष की वय में अपनी मृत्यु के पूर्व कहे थे—

"अब, ओ सन्यासियो, मैं तुम्हें सम्बोधित करता हूं। यौगिक वस्तुएं क्षय होने के लिये ही हैं। गम्भीरता के साथ संघर्ष करो।"

सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

हिन्दी ... माता का दूध

एक बार श्री काका साहब कालेलकर ने गांधीजी से कहा कि अपने जमाने में मराठी की उत्तम सेवा करने वाले महाराष्ट्रीय देशभक्त श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर अंग्रेजी के बड़े भक्त थे. वे कहते थे - अंग्रेजी तो शेरनी का दूध है

गांधीजी ने तुरन्त कहा, "दुरुस्त है, शेरनी के बच्चे को ही शेरनी का दूध हजम होगा और लाभ करेगा. आदमी के लिए अपनी माता का दूध ही अच्छा है, हम अपने को शेर नहीं बनाना चाहते ! हमारी संस्कृति की जो विरासत है वह हमें संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, इत्यादि देशी भाषाओं के द्वारा ही मिल सकती है"।

गांधीजी ने फिर कहा, "हमारे साहित्य में अगर कोई कमी है तो उसे दूर करने में ही हमारा पुरुषार्थ है । अंग्रेजों ने पुरुषार्थ के साथ अपना साहित्य बढ़ाया इसलिए अगर हम अंग्रेजी को ही अपनी मातृभाषा बनायेंगे तो वह आत्मनाश ही होगा, सांस्कृतिक आत्महत्या होगी "

भाषा

मन के विचार और भाव, शब्दों में प्रकट करने की साधना शिक्षा का एक प्रधान अंग है। स्वस्थ प्राण या मन का लक्षण ही है - भीतर और बाहर की देने-लेने की प्रक्रिया का सामंजस्य साधन। विदेशी भाषा ही अगर प्रकाश-चर्चा (भाव प्रकट करने की चर्चा) का प्रधान अवलम्ब हो, तो वह एक तरह से नकली चेहरे के भीतर से भाव प्रकाश का अभ्यास ही साबित होता है । नकली चेहरा लगाकर किया गया अभिनय मैंने देखा है । उसमें सांचे में ढले भाव को एक बंधी हुई सीमा के भीतर अविचल करके दिखाया जाता है, उसके बाहर जाने की स्वाधीनता उसमें नहीं दी जाती, विदेशी भाषा के आवरण की ओट में भाव प्रकट करने की चर्चा जाति की है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राजभाषा नीति कार्यान्वयन में राजभाषा अधिकारी की भूमिका

—निशिकान्त महाजन

राजभाषा अधिकारी की भूमिका

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान को उत्तरदायित्व सौंपा गया है कि वह राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा उनके अन्तर्गत जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित करे। परन्तु वास्तविक स्थिति यह है कि अधिकांश प्रशासनिक प्रधानों का काफी समय कार्यालय के मुख्य कामों में लग जाता है। जैसे बैंक मैनेजर का मुख्य काम है ग्राहक सेवा, जमा हेतु राशि प्राप्त करना, ऋण देना, चेकों का भुगतान आदि। रेलवे के महाप्रबंधक का मुख्य कार्य है रेलों का सुचारू आवागमन आदि। अत: कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान को राजभाषा नीति कार्यान्वयन के लिए पूर्णकालिक राजभाषा अधिकारी पर आश्रित रहना पड़ता है। यह सही भी है। जिस प्रकार कार्यालय के अन्य अधिकारी अपने-अपने अनुभाग, शाखा, प्रभाग आदि के कार्य-विशेष के लिए नियुक्त हैं, वैसे ही राजभाषा नीति कार्यान्वयन के लिए मुख्य भूमिका वस्तुत: पूर्णकालिक राजभाषा अधिकारी को ही निभानी है।

राजभाषा नीति कार्यान्वयन में इस पूर्णकालिक राजभाषा अधिकारी की स्थिति एक प्रकार से पहियों की धुरी जैसी है। धुरी जितनी ठोस, मजबूत और अच्छे लोहे की होगी, वाहन में उतनी ही अधिक भार की क्षमता और तीव्र गति से सालों साल चलने की सामर्थ्य होगी। इसी प्रकार राजभाषा अधिकारी का व्यक्तित्व जितना शक्तिशाली और ओजस्वी, उसका राजभाषा नीति का ज्ञान जितना सूक्ष्म और गहन होगा, उतना ही यह अपनी भूमिका अच्छी प्रकार निभा पाएगा तथा राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की सतत प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से जारी रख सकेगा। धुरी में केवल मजबूती ही नहीं, उसकी सतह चिकनी और सपाट होनी चाहिए ताकि पहिये उसके इर्द-गिर्द बिना अनावश्क घर्षण के तथा निर्विघ्न चलते रहें, गाड़ी बिना हिचकोले चले और आवाज भी कम पैदा हो। राजभाषा अधिकारी की निष्ठा, कर्मठता, लक्ष्यबोध की स्पष्टता, संप्रेषण क्षमता तथा व्यवहार कौशल इसी धुरी रूपी व्यक्ति में चिकनाई, ग्रीज तथा बाल बेयरिंग का काम करते हैं, चिकनापन लाते हैं और राजभाषा नीति कार्यान्वयन के कार्यकलापों को बिना शोर के आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं। कोई वाहन जितना उच्च कोटि का होता है, वहां उतनी ही तीव्र गति से बिना शोर किए चलता है। इसी प्रकार राजभाषा अधिकारी का व्यक्तित्व जितना गंभीर और उच्च कोटि का होगा, उतना ही राजभाषा का कार्य अबाध तथा तीव्र गति से, फिजूल का शोर किए बिना, आगे बढ़ेगा।

कुशल प्रबंधक की विशिष्टिताएं तथा उनका विकास

एक कुशल प्रबंधक की विशिष्टिताओं में मोटे तौर पर सम्मिलित हैं: पहल शक्ति, विश्वसनीयता, बुद्धिमत्ता, निर्णयन शक्ति, अच्छा स्वास्थ्य, ईमानदारी, दृढ़ता, कर्तव्यनिष्ठा आदि। सभी प्रबंधकों में ये सारे गुण और खूबियां एक साथ विद्यमान हों ऐसा जरूरी नहीं है, शायद संभव भी नहीं है, परन्तु प्रशिक्षण तथा अभिमुखीकरण (ओरिएंटेशन) कार्यक्रमों द्वारा प्रबंधकों में इनमें से कुछ गुण उजागर तथा विकसित किए जा सकते हैं, और उन्हें अधिक कुशल तथा दक्ष बनाया जा सकता है। केवल वैयक्तिक तौर पर ही नहीं, अपितु इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा किसी भी संगठन या निकाय की अपनी परिस्थितियों तथा पर्यावरण के प्रति सामूहिक अनुकूलनशीलता का विकास किया जा सकता है। साथ ही, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रबंधकों में विविध क्षमताओं का विकास करने में और प्रवीणता प्राप्त करने में भी सहायता मिलती है। यह अनिवार्य नहीं कि राजभाषा अधिकारियों की प्रबन्धकीय भूमिका में ये सभी लागू हों अथवा संगत हों। परन्तु इनके विषय में विवेचन करने से प्रत्येक अधिकारी को अपने व्यक्तित्व के विकास में किसी न किसी प्रकार सहायता मिलेगी, चाहे अधिकारी राजभाषा से संबंधित हो या अन्य कार्य से।

राजभाषा अधिकारी की प्रबंधकीय भूमिका

प्रबंधक की परिभाषा भी राजभाषा अधिकारी पर पूरी उतरती है। प्रबंधक जहां अपने कुछ काम स्वयं करता है, उसका मुख्य कार्य होता है दूसरों से काम करवाना ताकि सबके प्रयत्नों और कार्य को मिलाकर पूर्व निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। राजभाषा अधिकारी पर जहां अनुवाद कार्य करने तथा करवाने का उत्तरदायित्व है, वहां उसे यह भी देखना है कि उसके कार्यालय/संगठन के अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी उस पर निर्भर रहें बिना स्वत: अधिकतम काम हिन्दी में करें। उसे केवल स्वयं ही राजभाषा नीति आदि का सूक्ष्म ज्ञान हो इतना ही पर्याप्त नहीं है, इस नीति के विविध पहलुओं से कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अवगत कराना भी उसका उत्तरदायित्व है। अपने कुशल व्यवहार, संप्रेषण क्षमता, दक्षता और माधुर्य से उसे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करना है। साथ ही जहां कहीं अभिप्रेरणा की कमी दिखाई पड़े, वहां गहन अध्ययन कर कारणों का पता लगाना है तथा विभिन्न अवरोधों को दूर करना है। यह भी ध्यान रखना है कि उसके किसी कथन या आचरण से हिन्दी के प्रयोग के बारे में प्रतिकूल प्रतिक्रिया न हो। कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान नहीं अथवा जिनमें हिन्दी में काम करने की झिझक है, उसके प्रशिक्षण तथा अभ्यास का प्रबंध भी उसे ही करना है। एक कुशल प्रबंधक सारा काम स्वयं नहीं करता, बल्कि अपने सहकर्मियों को आबंटित कर उनके सहयोग

से कार्य का सुचारू निष्पादन सुनिश्चित करता है। उसी प्रकार राजभाषा अधिकारी भी अपने सहकर्मियों का सहयोग लेता है और उन्हें कुशल नेतृत्व प्रदान कर उन्हें उच्चतर जिम्मेदारी तथा नेतृत्व संभालने के लिए प्रशिक्षित करता है ताकि यदि किसी कारणवश राजभाषा अधिकारी अनुपस्थित भी रहे तो राजभाषा कार्यान्वयन की गति धीमी न पड़ने पाए।

राजभाषा अधिकारी तथा निजीकरण

राजभाषा अधिकारी को केवल कुशल प्रबंधक की ही नहीं अपितु एक सफल विक्रेता (सेल्समैन) की भूमिका भी निभानी होगी। आज उदारीकरण के नाम पर ग्लोबलाइजेशन, अन्तरराष्ट्रीयकरण तथा निजीकरण का बोलबाला है। अत: कभी-कभी यह आशंका व्यक्त की जाती है कि कालांतर में कुछ सरकारी उपक्रम/निगम निजी क्षेत्र में धकेल दिए गए तो हिंदी भी बाहर कर दी जाएगी। यहां पर राजभाषा अधिकारी की कुशल विक्रेता (सेल्समैन) की क्षमता काम आएगी। उसे सभी को कायल करना होगा कि बदले परिवेश में भी भारत देश में व्यावसायिक और व्यापारिक गतिविधियों में दीर्घकालीन सफलता तभी मिलेगी जब साधारण जनता की सम्पर्क भाषा हिंदी का प्रयोग होगा। इस समय भी लगभग सभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना अधिकांश विज्ञापन न केवल हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में करती हैं बल्कि विज्ञापन का स्वरूप भी भारतीय परिस्थितियों और वातावरण के अनुरूप होता है। अत: निजीकरण के उपरान्त भी निगम/उपक्रम का हित हिंदी भाषा के माध्यम को अपनाने से ही होगा। इस बात को कई बड़ी बड़ी कम्पनियों ने माना भी है। आम वार्षिक बैठकों में कार्यवाही शेयरधारकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए काफी हद तक हिंदी में की जाती है। पत्राचार में भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरणतया रिलायन्स समूह की कम्पनी रिलायन्स पैट्रोलियम लि॰ ने ऋणपत्र (डिबेन्चर) धारकों को परिपत्र हिंदी भाषा में भी भेजा। बहुत सी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने उत्पाद के नाम आदि पैकिंग पर हिंदी में भी छपवाते हैं।

इस बात पर एक और दृष्टि से भी विचार करना उचित होगा। भारत के कई निजी उद्योग अब तक बाजार में अपना स्थान एकाधिकार के बल पर बनाए हुए थे और अपने माल की गुणवत्ता सुधारने तथा अपने उत्पाद की कीमत कम रखने के बारे में विशेष चिंता नहीं करते थे। अब जब उद्योग तथा व्यापार के क्षेत्र विदेश की कम्पनियों के लिए खुल गए हैं और खुली प्रतियोगिता की चुनौतियां सामने हैं, भारत के उद्यमियों को अपना पुराना दृष्टिकोण बदलना पड़ रहा है। राजभाषा के कार्य से जुड़े अधिकारियों को भी समझना चाहिए कि उनकी नियुक्तियां आदि सरकारी उपक्रमों में अब तक केवल इस कारण थीं कि राजभाषा संबंधी नियमों तथा आदेशों के अनुसार अनेक कार्य हिंदी में होने अपेक्षित थे, और इस दौरान यदि सही प्रयत्नों के अभाव में अथवा अन्य कारणों से इन उपक्रमों में हिंदी का प्रयोग समुचित रूप में नहीं बढ़ पाया और हिंदी के अनुकूल वातावरण नहीं बन पाया तो इसका उत्तरदायित्व मुख्यतया राजभाषा से जुड़े अधिकारियों पर हो जाता है। अब समय आ गया है कि उनकी तंद्रा भंग हो, वे जागें, आंखें खोलें तथा अपने चारों ओर के वातावरण का अध्ययन करें। साथ ही आत्मनिरीक्षण कर समय रहते अपनी कमजोरियों को पहचानें तथा उन्हें उखाड़ फेकें। निजी क्षेत्र वाले अपने संगठन के हित वाले तत्वों तथा परिस्थितियों को बेहतर पहचानते हैं। राजभाषा अधिकारियों को हिंदी संबंधी कार्यकलापों को अब अधिक तीव्र गति से चलाकर खोये समय की क्षतिपूर्ति करनी होगी तथा तुरन्त अपनी तथा हिंदी भाषा की योग्यता, उपयोगिता तथा अनिवार्यता सिद्ध करनी होगी। इतना ही नहीं उन्हें दूसरे देशों में भी उचित वातावरण बनाना होगा ताकि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को पहले से ही न केवल आभास हो बल्कि पूरी तरह विश्वास हो कि भारत में काम करने के लिए उन्हें हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग से ही सफलता और लाभ की प्राप्ति होगी। अत: अपेक्षा यह की जाती है कि प्रबंधन तकनीकों का सही उपयोग कर, तथा अपनी निष्ठा, व्यवहार कौशल, संप्रेषण क्षमता तथा परिश्रम से राजभाषा अधिकारी उपक्रमों में हिन्दी को ऐसे स्थान पर ले आएं कि उसे पदच्युत करना संभव ही न हो। उपक्रम के सभी वरिष्ठ प्रबंधकों को भी कायल कर देना होगा कि हिन्दी केवल राजभाषा के रूप में नहीं, बल्कि व्यापारिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से भी उत्तम माध्यम है।

सशस्त्र सेना अधिकारियों और कर्मियों के अतिरिक्त यह सौभागय केवल राजभाषा अधिकारियों और राजभाषा से जुड़े कर्मचारियों को प्राप्त है कि जहां वे अपनी नौकरी से जीविका उपार्जन करते हैं, वहीं देश के इस महान तथा ऐतिहासिक कार्य में भागीदारी हैं। संसार के स्वाधीन देश अपना कामकाज अपनी-अपनी भाषाओं में करते हैं। ऐसा करना राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। अत: राजभाषा अधिकारी को कुशल प्रबंधक और सेल्समैन के साथ-साथ एक धर्म-योद्धा (क्रूसेडर) की भूमिका भी निभानी होगी। उसे अपने कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के समर्थक के रूप में परिवर्तित (कनवर्ट) करना होगा। इस काम में उसे सहज बुद्धि, सूझबूझ और धैर्य का आश्रय लेकर काम करना चाहिए न कि कट्टरपंथी या अत्योत्साही बनकर। यह सर्वविदित है कि अत्योत्साही या कट्टरपंथी से आमतौर पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया होती है। अत: महत्व इस बात का है कि तर्क, उत्प्रेरण, सौहार्द तथा निष्ठापूर्ण व्यवहार से सभी को प्रभावित कर उनका मन जीता जाए। इस कार्य में प्रगति भी तभी होगी जब सबको साथ लेकर चला जाए।

इसके साथ ही पूर्णकालिक राजभाषा अधिकारी को अपने कार्यालय के अन्य कामों/कार्यकलापों के विषय में समुचित जानकारी रखनी चाहिए। तभी वह अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों की समस्याओं को समझ सकेगा और उनके अनुरूप ही उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में हिंदी में काम करने की प्रेरणा दे पाएगा।

राजभाषा अधिकारी की योग्यता और कर्तव्य

सूक्ष्म स्तर पर राजभाषा अधिकारी की उपर्युक्त भूमिका के अतिरिक्त, स्थूल स्तर पर उसके नित्य प्रति के कार्य का विवेचन भी उपयुक्त रहेगा। पूर्णकालिक राजभाषा अधिकारियों के भर्ती नियमों के अध्ययन से स्पष्ट है कि सामान्यत: वे उच्च शैक्षिणिक योग्यता रखते हैं, अर्थात् कम से कम एम॰ए॰ हैं। साथ ही उन्हें अच्छे स्तर का हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी होना अपेक्षित है। अब तक क्योंकि इन अधिकारियों के कार्यों में अनुवाद कार्य की प्रधानता रही है, अत: शब्दावली तथा अनुवाद के क्षेत्र में अनुभव को महत्व दिया जाता रहा है। तथपि यदि इस क्षेत्र में अनुभव न भी हो या कम अनुभव हो तो अध्यापन, शोध, लेखन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुभव से काम चल सकता है। इन भर्ती नियमों के बनने के बाद, राजभाषा

अधिकारियों के कार्य क्षेत्र में काफी विस्तार हुआ है। अत: उनकी वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट में अब अन्य विविध पहलुओं में उनकी कार्यकुशलता का भी उल्लेख होता है।

इन सबके अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि राजभाषा अधिकारी से निम्नलिखित कार्य अपेक्षित हैं, चाहे वह अधिकारी मंत्रालय/विभाग में कार्यरत हों, चाहे सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालय में या सार्वजनिक निगम उपक्रम/बैंक में :

(1) कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना तथा बढ़ावा देना।

(2) मूल रूप से हिन्दी में काम करने के लिए सभी अधिकारियों आदि को प्रेरित करना, उनकी सहायता करना तथा उन्हें हिन्दी में काम करने का अभ्यास कराना।

(3) हिन्दी भाषा, टंकण, आशुलिपि का प्रशिक्षण आयोजित करवाना तथा प्रशिक्षित कर्मचारियों और अधिकारियों को हिन्दी में काम करने में प्रारंभिक सहायता करना।

(4) राजभाषा नीति की सूक्ष्म जानकारी सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को देना।

(5) राजभाषा से संबंधित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में जानकारी देना, इन योजनाओं को सुचारू रूप से लागू करवाना तथा सुनिश्चित करना कि अधिक से अधिक अधिकारी आदि इन योजनाओं का लाभ उठाएं।

(6) प्रेरणात्मक गतिविधियां आयोजित करना, जैसे हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा, विविध प्रतियोगिताएं, कवि गोष्ठियां आदि, मौलिक हिंदी लेखन का प्रोत्साहन, हिंदी पुस्तकों की ख़रीद तथा वितरण में सहायता।

(7) राजभाषा विभाग द्वारा परिचलित वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप अपने कार्यालय के लिए वार्षिक कार्य योजना बनाना तथा उसका कार्यान्यवन सुनिश्चित करवाना।

(8) राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के बारे में तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य आंकड़ों का आकलन, विश्लेषण, मूल्यांकन तथा अनुवर्ती कार्रवाई।

(9) कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा अन्य राजभाषा संबंधी बैठकों का आयोजन, कार्यसूची बनाना, रिपोर्ट बनाना आदि।

(10) राजभाषा संबंधी कार्यशालाओं का आयोजन।

(11) कार्यालय के विभिन्न अधिकारियों/कर्मचारियों से रचनात्मक सम्पर्क, उन्हें राजभाषा संबंधी जानकारी/सूचनाएं देना।

(12) राजभाषा से संबंधित पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन तथा प्रकाशन।

(13) अनुवाद तथा पुनरीक्षण।

(14) अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों का राजभाषा से संबंधित निरीक्षण आदि।

पूर्व संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, 48-सी, एम. आई.जी. फ्लैट, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027

"चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा समझकर अपनाएँ"

-डा0 बाबासाहब अम्बेदकर

राजभाषा के रूप में हिन्दी संक्रमण की दशा और दिशा

—डॉ दामोदर खड़से

हम आजादी की अर्धशती के मुहाने पर हैं। किसी भी राष्ट्र के जीवन में 50 वर्ष का समय कम नहीं होता, विशेषत: अपनी भाषा को अपनाने के लिए। लेकिन राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनी जगह लेने में अब भी चर्चा, विचार विमर्श के दौर से गुजरना पड़ रहा है। संविधान की पूरी मान्यता है, सरकार वार्षिक लक्ष्य बनाती है, नियमों-अधिनियमों का एक व्यापक प्रावधान है। सरकारी-तंत्र की गतिविधियों में हिन्दी को समाविष्ट करने के लिए राजभाषा विभाग की व्यवस्था है—इतना सब होते हुए भी राजभाषा के रूप में हिन्दी को सर्वग्राही बनाने की प्रक्रिया अभी संक्रमण की स्थिति में ही है।

पिछले कुछ वर्षों में अनुवाद, प्रशिक्षण, यांत्रिक सुविधाएं और बुनियादी ढांचों को लेकर साधन संपन्न संस्थाओं में काफी काम हुआ है। महत्वपूर्ण प्रकाशन, लेखन-सामग्री, प्रचार और प्रशिक्षण में हिन्दी के अस्तित्व की अनुभूति होती है। लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि पिछले दशकों का उत्साह, उपलब्धियां आंकड़ों के मकड़जाल से घिर रहा है। जिस प्रकार लोकगीतों और लोकाचार में हिन्दी आबधित, स्फूर्तिपूर्ण और गतिशीलता के साथ प्रवाहित है उसकी तुलना में सरकारी कामकाज में वह कदम-कदम पर किसी अयाचित की तरह अपना स्थान ढूंढ रही है। अपने ही घर में वह अनाहूत घोषित कर दी गई और अपने ही लोग मेजबान की भूमिका में बार-बार उसे नजर-अंदाज करते हैं, हिकारत की नजर से देखते हैं—ऐसा क्यों? दरअसल पिछले पचास वर्षों में हिन्दी के प्रति लगाव, आस्था, विश्वास और उसे अपनाने पर गोरवान्वित होने की अनुभूति न जाग पाना इस उपेक्षा का मुख्य कारण है। खुली आंखों से देखें तो कुछ व्यावहारिक कारण भी हैं।

सबसे बड़ा कारण है इस माध्यम का रोजी-रोटी से सीधे जुड़ा न होना। नौकरी, व्यापार और समाज के महत्वपूर्ण मुख्य प्रवेश द्वार पर अंग्रेजी जानने पर ही प्रवेश दिया जाना अब स्वाभाविक और आवश्यक लगने लगा है। इसे विसंगति के रूप में अनुभव करने की अनुभूति को भी हम पार कर चुके हैं। इसलिए अंग्रेजी पूरी शिद्दत के साथ, राजसी शानोशौकत और दबदबे के साथ चौकस होकर मुख्य द्वार से निकास द्वार तक पहरेदारी पर बैठी है। मजे की बात तो यह है कि इसकी दहशत हिन्दी भाषा प्रदेशों में भी उतनी ही है, जितनी अन्य प्रांतों में। जो अंग्रेजी जानते हैं और जो अंग्रेजी नहीं जानते ऐसे दो वर्ग, दो वर्ण, दो जातियां अंग्रेजी के कारण इस देश में बन गई हैं। इतना ही नहीं विभाजन का यह मानदंड इतना सूक्ष्म हो गया है कि एक आदमी गीत तो हिन्दी में गाता है पर कार्यालय में अंग्रेजी में सोचता है। राष्ट्र के इस प्राथमिक और बुनियादी इकाई को भी तोड़ कर रख दिया गया है, विभाजन केवल भूमि का ही नहीं हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व का भी हो गया है। इसीलिए लोकाचार और लोकगीतों के अक्षुण्ण झरनों, नदियों के प्रवाह-सी ऊर्जामयी, तेजस्विनी हिन्दी अपने ही देश के कार्यालयों तक आते-आते सूखते पोखर में बदल जाती है।

यह एक ऐसी सच्चाई है, जिसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। लेकिन, यह सब क्यों हुआ? कैसे हुआ? अब तो अंग्रेज भी नहीं हैं। फिर जन-सामान्य के दिलों से भारतीय भाषाओं और हिन्दी का प्यार, उमंग, उत्साह छीनकर किसने बो दी है—हमारे दिमागों में अंग्रेजी की यह अमरबेल। साफ है, अंग्रेजों के बाद अंग्रेजी-मानसिकता से उपजी सामंती प्रवृत्ति, पूंजीवादी सोच और उपनिवेशवादी आकांक्षाओं की हवस में हम अपने ही समाज से कटकर नियंता होने के दंभ में हिन्दी और भारतीय भाषाओं की अनदेखी कर रहे हैं।

दोहरापन जब चरित्र का स्थायीभाव हो जाए तो सबसे पहले मूल्यों की बलि चढ़ती है। आजादी के बाद मूल्यों में गिरावट आई है, इसे सभी मानते हैं। संभ्रांत समाज में अंग्रेजी के बिना आदमी अधूरा घोषित कर दिया जाता है। विभिन्न औपचारिक अवसरों पर हिन्दी का इतिहास, जनमानस में उसकी गहरी पैठ, राष्ट्रीय भावना तथा अपनेपन की दुहाई देते हुए उसकी आरती गाई जाती है, लेकिन ढाक के वही तीन पात-अंग्रेजी की चाशनी में डूबकर जीवन में मिठास घोलते हुए—अंग्रेजी की बात ही कुछ और है। समाज-जीवन के दोहरेपन को कार्यालयीन व्यवहारों में कदम-कदम पर देखा जा सकता है।

हमारे देश में भाषा का मसला अन्यान्य कारणों से व्यक्ति और समाज के लिए औपचारिक होता हुआ महत्वहीन हो गया। व्यक्ति की निजता, आत्मगौरव, उसके सम्मान और उसकी पहचान से भाषा की सोच का न जुड़ पाना हमारे वर्तमान की सबसे बड़ी भाषिक त्रासदी है....केवल भाषिक ही नहीं बल्कि संपूर्ण अस्तित्व का जड़हीन होते जाने का संकेत है यह—लेकिन किसी तबके में यह बात जब ध्यान में लाने की कोशिश की जाती है तब अंग्रेजी को पल भर कोसा जाता है और हिन्दी की आरती उतारी जाती है...थोड़ी ही देर में, जैसे थे।

संविधान में समाज के नव-निर्माण, उत्थान और बेहतर अनुशासित जीवन हेतु राज्य व्यवस्था के लिए दिशानिर्देश होते हैं। राजभाषा के लिए भी संविधान में व्यापक व्यवस्था की गई है। इतनी व्यापक व्यवस्था की गई है कि किसी दूसरे विषय को संविधान में इतना स्थान ही नहीं है। बहुभाषी राष्ट्र और दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र के लिए यह आवश्यक तो है कि

भाषा के प्रावधान प्रत्यक्ष-परोक्ष किसी को, किसी भी कारण आहत न करें। लेकिन तमाम सावधानियों के बावजूद राजभाषा को लेकर जो एकमत, समर्पण, सदाशयता और दृष्टिकोण संविधान निर्माताओं का था, वह भाव कालांतर में धूमिल पड़ता दिखाई देता है। यह बात नहीं कि इसका उपयोग नहीं हुआ, परन्तु जितनी अपेक्षाएं स्वतंत्रता की थीं उस पर हमारी पीढ़ी खरी नहीं उतरी। राजभाषा के रूप में राजभवन के बाहरी के आवरण पर हिंदी सजा दी गई लगती है और भवन के भीतर अंग्रेजी आज भी उसी अकड़ के साथ विराजमान है।

पारिभाषिक शब्दों, संदर्भ साहित्य, भाषा में लोच और बुनियादी सुविधाओं के अभाव का राग लंबे समय तक नौकरशाही के बीच आलापा जाता रहा। अब ये सुविधाएं कुछ संस्थानों के प्रयासों से उपलब्ध की गई हैं। परिणामस्वरूप कुछ काम दिखाई देने लगा। हिन्दी पानी की ऊपरी सतह पर तैरती दिखाई देने लगी। गोता लगाने की स्थिति अब भी नहीं है। यह तभी बन सकती है जब संपूर्ण व्यवस्था में एक ठोस इच्छा शक्ति का प्रस्फुटन हो। हमारे पास अच्छी जमीन है, भरपूर पानी है, अच्छे किस्म के बीज भी हैं जरूरत है इसे एक अनुकूल मौसम में पूरे मन से बोने की तभी अंग्रेजी के फौलादी घड़ न तख्ते को पारकर हिन्दी प्रशासन के सिंहासन पर विराजमान हो सकती है।

बीसवीं शती के अंत में समूची दुनिया उपभोक्तावाद की गिरफ्त में है। हमारा देश भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। कुछ संपन्न और विकसित देश, तीसरी दुनिया और विकासशील देशों में नए ढंग अपने उपनिवेशवाद और पूंजीवाद का सहारा लेकर उपभोक्ताओं को अपनी चीजें परोस रहे हैं। घोषित रूप से उदारीकरण और वैश्विकरण के चलते कुछ गरीब देशों में अपनी पहचान को लेकर एक हड़कंप-सा मचा हुआ है। इस पहचान के संकट से देश का एक बड़ा वर्ग अनजान है, जो हर संकट, विवशता और अभाव को नियती, भाग्य और ऊपर वाले की इच्छा मानता है। इन्हीं में से एक वर्ग ऐसा है जो देश का प्रतिनिधि होने का दंभ भरते हुए दलाली में मग्न है। बीच का वर्ग-मध्यम वर्ग वह उपभोक्तावाद की चपेट में बुरी तरह फंसा हुआ है। उसका जीवन महीने और एक महीने में ही सिमटकर रह गया है। उसे केवल महीने की तारीखें याद रहती हैं—वर्ष, दशक शताब्दियां, इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम, संस्कृति और हमारे उद्गम-विकास से उसे पूरी तरह काटकर अलग कर दिया है—उपभोक्तावाद ने। ऐसे भीषण अलगाव जिस समाज में होंगे वहां भाषा तो क्या उसकी अपनी पहचान के लिए उसकी अस्मिता तक धूमिल हो जाती है—व्यक्तिगत भी। कालांतर में वह स्वयं ही अपनी पहचान के लिए चिंतित भी नहीं लगता, जो कि किसी भी राष्ट्र के जीवन का एक कालापन्ना होता है।

वैसे देखा जाए तो एक ओर हिंदी नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है। इलेक्ट्रानिक माध्यमों पर ज्यों उसने कब्जा ही कर लिया है। टीवी पर विदेशी चैनल भी अब हिंदी सीरियल, समाचार दे रहे हैं। कुछ ''डब'' करके और कुछ ''उपशीर्षकों'' के साथ हिन्दी में आ रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापनों की भरमार है हिन्दी में। हिन्दी का व्यावसायिक रूप खूब निखर रहा है। इन माध्यमों ने हिन्दी का भरपूर उपयोग किया। व्यवसायिक सफलता के लिए हिन्दी को माध्यम बनाया गया। लेकिन जहां तक राजभाषा हिन्दी का सवाल है, अब भी कई तकनीकी अवरोध हैं। जिनमें मुख्य अवरोध है हिन्दी में लिखने की मानसिकता का अभाव। हिन्दी मनोरंजन और व्यवसाय में तो आगे है पर कार्यालयों में या इन्हीं विज्ञापनों या मनोरंजन से संबंधित लिखित व्यवहार में हिन्दी का उपयोग बहुत कम होता है। इसलिए उसके राजभाषा स्वरूप में उत्साहजनक परिवर्तन नहीं दिखाई देते। यह एक विसंगति ही है।

फिल्म, टीवी, विज्ञापन और पत्रकारिता के साथ हिन्दी साहित्य भी हिन्दी प्रचार में पूरी तरह जुटा हुआ है। हिन्दी वह पुल है जिसके माध्यम से संस्कृति, दर्शन, कला और समसामयिक चिंतन का आदान-प्रदान होता है। अनुवाद के साथ-साथ मूल रूप से भी हिन्दी में लेखन संपन्न हो रहा है। अब अमृता प्रीतम, महीप सिंह केवल हिन्दी के लेखक हैं। राही मासूम रजा और आलमशाह खान जैसे लेखक उर्दू के नहीं हिन्दी के लेखक हैं। इसी तरह भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, हिन्दी के लेखक हैं और चर्चित भी रहे हैं—उनमें प्रभाकर माचवे, अनंत गोपाल शेवडे, आलोक भट्टाचार्य, आरिगपुड़ी, जयश्री अय्यंगार, सुमिति अय्यर, आरसु, पांडुरंग राव, डा० जगन्नाथ, वेणुगापाल, आबिद सुरती ऐसे कुछ नाम हैं—जो अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को अधिक करीब पाते हैं। कुल मिलाकर जो एक अनौपचारिक संसार है—वह हिंदी से सराबोर है। मद्रास का कोई ट्रक ड्राइवर यदि हैदराबाद के चेक नाके पर किसी कर्मचारी से हिन्दी में बात करता है तो चौंकने जैसी कोई बात नहीं है। रेल के सफर में उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम चारों ओर हम अपरिचितों से हिन्दी के माध्यम से परिचय प्राप्त करें तो बहुत ही सहज है। और अब तो पेजर भी हिन्दी में आ गए, इंटरनेट में भी हिन्दी है, कनाडा एयर लाइन्स की गृहपत्रिका में भी हिन्दी खंड है। यहां तक कि एक सर्वेक्षण के अनुसार इंग्लैंड की दूसरी भाषा हिन्दी है। क्योंकि इग्लैंड के शहरों में बसे एशियाई लोगों की संख्या काफी है वे चेहरे से पहचाने जा सकते हैं और आपस में वे हिन्दी बोलते हैं, भले ही वे बांग्ला देश के हों, पाकिस्तानी या श्रीलंकाई या कि भारतीय हों। अर्थात्—कार्यालय के बाहर देश-विदेश में हिन्दी की व्याप्ति देखी जा सकती है। यह एक सुखद स्थिति है।

कई बार बहुभाषी राष्ट्र होने की स्थिति को एक राजभाषा होने के लिए अवरोध माना जाता है। लेकिन दुनिया में ऐसे कई देश हैं जिन्होंने सिद्ध किया है कि कई भाषाएं एक राजभाषा के लिए बाधक नहीं हैं। सिंगापुर जैसे छोटे देश से लेकर इंग्लैंड-अमरीका जैसे देशों में भी कई भाषाएं बोली जाती हैं। ब्रिटेन में स्काटलैंड में रहने वालों की गैलिक भाषा अलग है। वेल्स में रहने वालों की वेल्स भाषा अलग है और इंग्लैंड की अंग्रेजी भाषा अलग है। कम से कम तीन भाषाएं वहां बोली जाती हैं, लेकिन वह भी एक राष्ट्र तो है। परंतु यहां किसी विघटन की बात कोई नहीं करता। अमरीका जैसे देश में आदिवासी अब भी अपनी पुरानी भाषाएं बोलते हैं। राष्ट्रभाषाएं, उप-भाषाएं, बोलियां जितनी हमारे देश में हैं उतनी संभवतः दुनिया के किसी भी देश में न हों लेकिन ये सभी भाषाएं एक सांस्कृतिक एकता में पिरोयी गयी हैं और हिन्दी की गंध से हर भाषा-भाषी कम-अधिक मात्रा में परिचित है।

हमारी सांस्कृतिक एकता की विरासत हमारी भाषाओं को पनपने देने में सहायक सिद्ध होगी। स्वार्थवश ही क्यों न हो, संचार माध्यमों में हिन्दी को लेकर अचानक जो रुझान बढ़ा है, उससे भी हिन्दी का एक अनौपचारिक वातावरण बनेगा। व्यवसाय, विज्ञापन, फिल्म और साहित्य की भूमिका भी

महत्वपूर्ण रहेगी। अब आवश्यकता है भाषा के इन बहुआयामी महत्व को समझकर जनमानस और कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति एक आस्था जगाने की। अनुवाद द्वारा हमने अधिकांश प्रक्रिया साहित्य तैयार किया है, बचा हुआ भी तैयार कर लेंगे। परंतु, जब तक इसके उपयोग के प्रति रुचि नहीं जगेगी तब तक अनुवाद की सार्थकता नहीं होगी। इसलिए राजभाषा के प्रति व्यक्ति-समाज और पर्यायी रूप से कर्मचारियों के मन में आस्था का संचार करना एक मनोवैज्ञानिक चुनौती है। यह एक बहुत बड़ा काम है। मनोवैज्ञानिक चुनौती अमूर्त होने के कारण प्रशासन के रूढ़िगत उपाय बौने पड़ जाते हैं। इसीलिए राजभाषा को अपनाने के लिए स्थितियों को देखते हुए नवोन्मेश कदम उठाने होंगे। अधिकांश संस्थानों ने प्रथम चरण का राजभाषा विषयक कार्य पूरा कर लिया है, जिसमें, लेखन-सामग्री, प्रक्रिया साहित्य, प्रशिक्षण साहित्य, प्रचार साहित्य आदि स्थायी स्वरूप के कागजात हिंदी में तैयार कर लिए हैं। साथ ही, पत्राचार भी काफी मात्रा में हिंदी में होता है चाहें वह मुद्रित स्वरूप में हो या छोटे-छोटे प्रारूप के रूप में। इस तरह प्रारंभिक दौर की सफलता संतोषजनक रही है। पर यह मात्रात्मक सफलता ही रही है। अभी गुणवत्तात्मक उपलब्धियों की ओर बढ़ने की काफी संभावनाएं हैं राजभाषा को अब किसी भी विषय-विशेष की मूलधारा में प्रवेश करन होगा। इसके लिए आवश्यक है कि प्रशासन के शीर्ष से राजभाषा का संदेश पूरे संस्थान में प्रसारित हो। अत: अब ऐसे कार्यक्रमों में हिन्दी को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, जिसमें मुख्य रूप से शीर्ष प्रबंधन की भागीदारी हो।

भाषा परिवर्तन एक प्रदीर्घ प्रक्रिया है। इसलिए जैसे-जैसे राजभाषा नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश करती जाएगी, वह नये शब्दों, मुहावरों और उस विषयवस्तु के संस्कारों को ग्रहण करते हुए अपने को सतत मांजती रहेगी। भाषा का प्रयोग करने वाले ही भाषा को सार्थक और सक्षम बनाते हैं। दुनिया की सभी संपन्न भाषाएं अपने संक्रमण काल को पारकर सक्षम स्थिति में पहुंची हैं इस संदर्भ में राजभाषा हिन्दी को अभी और कई उपलब्धियां हासिल करनी हैं। संक्रमण के इस काल में हमारी भूमिका कितनी सार्थक रही इस बात का भावी इतिहास गवाह रहेगा।

प्रभारी वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), बैंक आफ महाराष्ट्र, के॰का॰ पुणे

"तुलसी के औषधीय गुण"

सुधीर कुमार शर्मा

भारतीय समाज में तुलसी के पौधे का धार्मिक महत्व तो है, इसका वैज्ञानिक महत्व भी कम नहीं है। इसके पत्ते, मंजर, तथा टहनी विभिन्न प्रकार की बीमारियों में औषधि के रूप में काम आती हैं। अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि तुलसी के पत्तों से "ओसोण, निकलता है, जो वायुशोधक का काम करता है। यही बजह है कि सदियों से हमारे पूर्वज धार्मिक पौधे के रूप में तथा विभिन्न किंवदंतियों में तुलसी की महत्ता के गुण-गान करते रहे और देवता के रूप में अपने आंगन में या मन्दिरों के आसपास स्थापित कर पूजते रहे हैं। एक मसय या जब लोग एक ऐसे हिन्दू घर की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जहाँ तुलसी का एक पौधा भी नहीं है। तुलसी के महत्व को समझकर लड़कियों का यह नाम भी दिया जाता था। इसके अतिरिक्त तुलसी का वैज्ञानिक महत्व तथा कीटनाशक होने के कारण किसी भी देवत के पूजन शुद्धि केलिए नैवेद्य में तुलसी पत्र डाला जाता है। तुलसी के पत्ते के अलावा इसके मज्जर तथा जड़ का भी उपयोग विभिन्न दवाओं के रूप में किया जाता रहा है।

धार्मिक अनुष्ठानों में तुलसी की कण्ठी माला पहनी जाती है। इस प्राचीन परम्परा के पीछे भी यही कारण है कि अनेक रोगाणुओं से शरीर की रक्षा होती है। इस तरह हमारी जिन्दगी से तुलसी बहुत ही जुड़ी हुई है।

हिन्दी साहित्य पर गांधी—दर्शन का प्रभाव

—डॉ पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी

भारतीय अंतश्चेतना की एकात्म अनुभूति का साक्षात्कार राष्ट्रीय नवजागरण के साथ ही देश के जागरूक चिन्तकों—मनीषियों को होने लगा था। स्वातंत्र्य संघर्ष की प्रबल प्रेरणा इसी का परिणाम थी। स्वाभिमान एवं आस्था भारतीय राष्ट्रीयता का प्रस्थान बिन्दु कहा जाता है। मात्र स्वराज्य ही नहीं, स्वतंत्रता की अवधारणा में भारतीय जनजीवन की समग्रता की स्वीकृति के सशक्त एवं सृजनोच्छ्वसित बीज निहित थे। इसी कारण नवीन परम्परा के आधुनिक मसीहा इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए बहुमुखी आयोजन करते रहे, जिनकी सर्वाधिक समर्थ व्यक्ति महात्मा गांधी के चिन्तन और कर्म में हुई। इनकी नवनवोन्मेषी प्रतिभा स्वराज्य का स्वप्न साकार करने की सार्थक परिणति का कारण बनी। यह देश का दुर्भाग्य ही था कि देश में एक सूर्य का उदय और दूसरे का अस्त-अवसान साथ ही साथ हुआ। स्वतंत्रता तो मिली पर महात्मा गांधी के बलिदान से देश को आघात लगा। इस स्वराज्य के सूर्य के अस्त होने के कारण स्वतंत्रता से पहले चरण में ही राष्ट्र की प्रेरणाएं, संकल्प और स्वप्न दिशान्तर की ओर उन्मुख कर दिये गये। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के साहित्य के आलोक स्तम्भ तो दिवंगत हो चुके थे या अवसान के निकट खड़े रहने के कारण अप्रभावी सिद्ध हुए और बुद्धिजीवी, कलाकार, पत्रकार और कवि चकाचौंध में पड़े हतबुद्धि होकर पश्चिम की अंधानुकृति में ही नवीनता, मौलिकता एवं महानता खोजने की मृग—मरीचिका के शिकार होकर आत्म-प्रवंचना के सुख का भोग करने लगे। महात्मा गांधी ने दरिद्रनारायण की सेवा करने और उसे भुखमरी, बेकारी, अशिक्षा, कुरूढ़ियों एवं कुरीतियों से उबारने का जो संदेश दिया था, उसे ही पराधीनता के युग में महात्मा गांधी के सत्य एवं अहिंसा के प्रयोग के सान्निध्य में मानव-जीवन की पीड़ा की यथार्थ अभिव्यक्ति करने में साहित्य की सार्थकता स्वीकार की थी। आश्चर्य की बात है कि राजनीतिक दासता की बेड़ियों को तो महात्मा गांधी ने अपने साथियों एवं अनुयायियों के सहयोग से काट दिया किन्तु वैचारिक दासता की बेड़ियां नहीं काटी जा सकी। क्योंकि साम्प्रदायिकता, जातिवाद, आतंकवाद, अस्पृश्यतावाद एवं स्वार्थवाद की ये बेड़ियां तन को ही नहीं वैचारिक रूप से मन ओर भावों को आज भी जकड़े हुए है।

गांधी—दर्शन या गांधीवाद सत्य की साधना का विज्ञान है, इसलिए उनकी आत्मकथा "अहिंसा" कहा जा सकता है। सत्यग्राही के द्वारा अपने प्रतिपक्षी में नैतिक संघर्ष पैदा करता है और उसकी अधर्मवृत्तियों को कमजोर कर देता है। अहिंसा अपने भावात्मक रूप में "प्रेम" का ही नामान्तर है। इससे प्रतिपक्षी का हृदय परिवर्तित हो जाता है दबाकर किया गया परिवर्तन समय पाकर विद्रोह भी कर सकता है। गांधीजी आत्मवाद पर गहरी आस्था रखकर आत्मा की आवाज पर निर्णय लेते हैं। वे इसे मनुष्य की कु-बुद्धि की उपज मानते हैं और सु-बुद्धि से ठीक रखने में विश्वास करते हैं। गांधीजी किसी बड़ी शक्ति के आह्वान पर अपना अभियान चलाना चाहते हैं। इसलिए गांधीजी का पंथ "कश्चिद् धीरः" का पंथ है। गांधीजी किसी भी स्थिति में अन्य समाधान संभव होने पर हिंसा का रास्ता नहीं पकड़ते। असल में हिंसा कष्ट देने या न देने का नाम नहीं है, मारने या न मारने का नाम नहीं है—वह तो वस्तुतः अनासक्ति है, अनासक्त को लोक मंगल की दृष्टि से मारना भी न मारना है। इसलिए कृष्ण ने अर्जुन को अनासक्ति योग सिखाया, ताकि वे मारकर भी अपने को मारने वाला न समझे। यह सत्य है जो हिंसा को भी अहिंसात्मक रूप देता है और इसी कारण महात्मा गांधी हृदय परिवर्तन द्वारा उस साध्य की सिद्धि में विश्वास रखते हैं। गांधीजी कहते हैं—"समाजवादी और मुझ में यह बड़ा भारी भेद है। उसका सिद्धांत सह है कि पहले सारी दुनिया को अपने ख्याल का बना लें और फिर सब लोग वह करें। एक-एक के आचरण करने की कोई बात उनकी योजना में नहीं है। अहिंसा का मार्ग यह नहीं है—उसका प्रारम्भ व्यक्तिगत आचार से होता है।" यही कारण है कि समाजवादी विचारधारा के बुद्धिजीवी पत्रकार एवं साहित्कार गांधीवाद या गांधी-दर्शन से असहमति रखते हैं या उनके विचारों में विरोधाभास दृष्टिगत होता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि चिन्तन की अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण के लिए भाषा की नितांत आवश्यकता होती है, उसके लिए साहित्य एक प्रभावी माध्यम है। भारत के स्वातंत्र्य-संघर्ष में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उस समय के साहित्य ने भारतीय जन-मानस में स्वतंत्रता की तड़प पैदा की, उसे विकसित और सुदृढ़ किया। संसार के हर देश में विभिन्न महान आन्दोलनों का सूत्रपात साहित्य ने ही किया। कुछ लोग भले ही इस बात से सहमत न हों कि "साहित्य ही किसी आन्दोलन या क्रान्ति की आत्मा है"। परन्तु किसी भी आन्दोलन को लोक-भावनाओं से सम्पृक्त कर देने का कार्य निश्चित रूप से साहित्य ही करता है। भारतीय साहित्य-मनीषियों ने इन चुनौतियों को स्वीकार किया तथा स्वराज्य के लिए स्वतंत्रता-संग्राम के अस्त्रों सत्याग्रह, स्वदेशी, मन्दिर प्रवेश, सविनय अवज्ञा आदि आन्दोलनों का साहित्य के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया, उनको सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान कर पुष्ट किया। डा. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित "हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (दशम भाग) के परिवेश" में डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने लिखा है—"गांधीजी के कांग्रेस में आने के बाद सत्याग्रह, अहिंसा, असहयोग आदि आन्दोलन तो बल पकड़ गये थे, रचनात्मक कार्यक्रमों का भी उन दिनों कांग्रेस में बोलबाला था। कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में रचनात्मक कार्यक्रमों पर बल दिया जाता था। चरखा, हाथ से कता खद्दर और उसका प्रचार, अस्पृश्यता-निवारण, साम्प्रदायिक एकता, मादक द्रव्य

सेवन का त्याग, विदेशी कपड़ा तथा अन्य वस्तुओं का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली, बड़े-बड़े कल-कारखानों के स्थान पर छोटे-छोटे उपयोगी उद्योगधन्धे, ग्रामीण जीवन का आर्थिक सुधार, प्रौढ़ शिक्षा, मजदूरों का संगठन, हिन्दी प्रचार आदि रचनात्मक कार्यक्रम के प्रधान अंग थे।'' उस समय के साहित्य में इन रचनात्मक कार्यक्रमों का व्यापक धरातल पर समर्थन परिलक्षित किया जा सकता है।

ब्रिटिश शासनकाल में जब अंग्रेजी भाषा का प्रचार एवं प्रसार भारतीय जनता को कार्यालयीन क्लर्क बनाने एवं उपनिवेशवादी मानसिकता में संस्कारित करने का अभियान शिखर पर था, उसी समय हिन्दी साहित्य ने नया मोड़ लिया। भरतेनदु हरिशचन्द्र ने साहित्य की सभी विधाओं को नये रूप में प्रतिष्ठित किया, तदुपरान्त महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं रामचन्द्र शुक्ल ने भाषा को परिमार्जित एवं परिष्कृत किया। जयशंकर प्रसाद ने साहित्य में स्वर्णिम अतीत का चित्र प्रस्तुत कर जनमानस को जागृत करने का कार्य भी आरम्भ किया। फलत: समसामयिक साहित्य से प्रेरणा पाकर जनमानम शासन के विदेशी जूड़े को निकाल फेंकने हेतु कटिबद्ध हो गया। प्रेमचन्द और शरतचन्द्र ने अपनी कृतियों द्वारा स्वतंत्रता का शंख ही नहीं फूंका, अपितु समता एवं न्याय की सामाजिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का पुन: स्थापन कर भारतीय नागरिकों को मानसिक रूप से स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया। इन साहित्यकारों ने वर्ण व्यवस्था, आर्थिक विपन्नता, गुलाम मानसिकता एवं साम्प्रदायिकता की समस्याओं को उठाया तथा समाधान भी प्रस्तुत किये। शरतचन्द्र ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से बंगाली समाज में हलचल पैदा कर दी थी। उनके ''रमा'' उपन्यास का नायक ''रमेश'' मुसलमानों को शिक्षित कर बालकों के लिए स्कूल बनवाकर जमींदार के ऋण एवं लगान संबंधी अत्याचार के विरोध हेतु आर्थिक सहायता देकर जन मानस को जागृत करता है। ''श्रीकांत'' उपन्यास की राज्य लक्ष्मी भी गंगामाटी की डोम प्रजा के लिए स्कूल, औषधालय एवं पीने के पानी की व्यवस्था कर उनका मन जीत लेती है। शरतचन्द्र ने ''परिणिता,'' ''सौदामिनी,'' ''महेश'' और ''अनुराधा'' में भाषनात्मकता के साथ मानव मूल्यों के शाश्वत सत्य पर भी प्रकाश डाला है। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों पश्चात् भी शरतचन्द्र, प्रेमचन्द, दिनकर, गुप्त बन्धुओं द्वारा वर्णित समस्याएं आज भी यथावत हैं।

जिस समय शरतचन्द्र और प्रेमचन्द साहित्य-सृजन कर रहे थे, उस समय कांग्रेस की एकमात्र ऐसी राष्ट्रीय संस्था थी जिसके काग्रक्रमों के व्यापक प्रचार-प्रसार से राष्ट्र-मुक्ति की संभावना हो सकती थी। इसीलिए कांग्रेस और उसकी नीतियों में उनकी गहरी निष्ठा थी। विविध प्रसंग खण्ड दो (पृष्ठ 74) में प्रकाशित ''कांग्रेस'' शीर्षक टिप्पणी में प्रेमचन्द लिखते हैं—''वह गरीबों की संस्था है। गरीबों के हितों की रक्षा उसका प्रधान कर्तव्य है, उसके विधान में मजदूरों, किसानों और गरीबों के लिए वही स्थान है जो अन्य लोगों के लिए। वर्ग, जाति, वर्ण आदि के भेदों को उसने एकदम मिटा दिया है।'' कांग्रेस के भी दो दल थे—गरम दल और नरम दल तथा इनकी नीतियों में स्पष्ट अन्तर था। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रेमचन्द नरम दल की नीतियों के समर्थक थे, फलत: उनके साहित्य में गांधीवादी विचारधारा की ही जीवन्त अभिव्यक्ति हुई है। यों, वे गांधीजी के भी अंधभक्त नहीं थे। आत्म-चेत्स, साहित्यकार होने के नाते उनके पास एक सजग अन्तर्दृष्टि थी, दूरदर्शिता, इसीलिए वे अत्युत्साही कांग्रेसियों द्वारा उस समय किये जाने वाले अत्याचारों, अन्यायों की विवशताओं को समझे बिना उन पर लगाये जाने वाले जुर्मानों या उनके द्वारों पर किये जाने वाले स्थापों को भी खुली आंखों से देख रहे थे। इस कथन के प्रमाणस्वरूप प्रेमचन्द की ''तावान'' कहानी देखी जा सकती है। छकौड़ी की पारिवारिक परिस्थिति, दैन्य और विवशता को न कांग्रेस के मदस्य समझते-सुनते हैं और न कांग्रेस कमेटी के प्रधान ही, बस वे तो उस पर तावान लगाकर पिकेटिंग या स्थापे से उसे वसूलना जानते हैं—भले ही इसके लिए छकौड़ी को अपना घर रेहन रखना पड़े या उसकी रूग्णा पत्नी का देहान्त ही हो जाए। ''तावान'' कहानी में कांग्रेसी नेताओं के इस अमनोवैज्ञानिकदृष्टिकोण के साथ प्रेमचन्द ने उनकी स्वार्थी प्रवृतित पर भी कटु व्यंगय किया है। ''गबन'' में देवीदीन कहता है—''इन बड़े-बड़े आदमियों के लिये कुछ न होगा। इन्हें बस रोना आता है। छोकरियों की भांति बिसूरने के सिवा इनसे और कुछ नहीं हो सकता। बड़े-बड़े देश भक्तों को बिना विलायती शराब के चैन नहीं आता। उनके घर में जाकर देखे तो एक भी ऐसी चीज न मिलेगी। दिखाने को दस-बीस कुरते गाढ़े के बनवा लिये, घर का और सब सामान विलायती।'' कुछ कांग्रेसी नेताओं की इस विलासिता और संस्था के कार्यक्रमों को लागू करने में उनकी अमनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति से परिचित होने के बावजूद प्रेमचन्द अपने साहित्य के द्वारा कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रमों का प्रचार व्यापक राष्ट्रीय हित की दृष्टि से ही करते हैं,उन्हें लगता है कि स्वाधीनता प्राप्ति का यह आन्दोलन कुछ नेताओं या धन्ना-सेठों का न होकर आम जनता का है, मजदूरों—किसानों का है, गरीबों का है। उनके ही शब्दों में—''इसमें संदेह नहीं कि स्वराज्य का आन्दोलन गरीबों का आन्दोलन है।'' विविध प्रसंग, खण्ड दो, स्वराज्य से किसका अहित होगा, पृष्ठ 42।

हिन्दी नव जागरण का वैचारिक आधार जिन अवधारणाओं पर खड़ा हुआ उनमें स्वदेशी धारणा प्रमुख थी। ध्यातव्य है कि महात्मा गांधी के राजनीति में आने के कई वर्षों पूर्व ही भारतेन्दु और उनके युग के अन्य रचनाकारों ने स्वदेशी के विचारों को मुखर किया। चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय ''प्रेमधन'' की राजनीतिक जागरूकता के प्रमाण में उनका एक प्रमुख लेख ''स्वदेशी वस्तु स्वीकार और विदेशीय बहिष्कार'' है। इसके प्रारम्भ में कहा गया है—''जब हम विशेष ध्यान से देखते हैं, तब एक प्रकार का सारा भारतवर्ष ही बदला सा दिखाई पड़ता है।'' प्रेमधन देश के परिवर्तनों को देखते ही नहीं अपितु गम्भीरता से विचार भी करते हैं। इस सोच के पीछे उनका गहरा देश-राग है, जिसके भीतर दमित भारत के लिए मार्मिक पीड़ा का अहसास दिखायी पड़ता है। उन्हें ''विशुद्ध भारत'' मुगलों से पूर्व लगा, मुगलों के आने से ''चार आना'' कम हुआ लेकिन ''जब से कि इंडिया कहलाया इसने अपना सब कुछ गंवाया और कदाचित अब उसे आना, आध आन कह देने में भी कुछ विशेष संकोच नहीं होता।'' वे आगे इसके कारणों पर विचार करते हुए बताते हैं कि ''शिक्षा-दीक्षा विदेशी, खान-पान विदेशी, व्यायाम-विश्राम और नाम तथा काम सब विदेशी ही विदेशी की भरमार है।'' आज के अनेक आधुनिकतावादी इस अवधारणा को पिछड़ेपन से जोड़ सकते हैं, परन्तु आज की दशा-दिशा को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि पाश्चात्य अंधानुकरण ने हमें अपनी ही जड़ों से काट दिया है—हमारी पहचान खो चुकी है। प्रेमधन कहते हैं—''स्वदेशी वस्तुएं प्रात:कालीन दीपशिखा से स्वल्पायु हो रहे हैं।'' महात्मा गांधी के स्वदेशी विचार, चेतना और आंदोलन से प्रेमधन उत्साहित होते हैं। इसकी पहली आहट ही मानों सूखे खेत में पानी का आना हो—''स्वदेशी आन्दोलन ने

हमारे देश के कारीगरों को अनिद्रित कर उन्हें मरते-मरते बचाया है। हाथ पर हाथ धरे ऊंघते, अपने माल की खपत न देख, अपने प्रारब्ध पर खीझते, न जाने कितने रोजगारियों के मुरझाये गालों पर अब सुर्खी आ गई है।'' स्वदेशी आन्दोलन से दम तोड़ते राष्ट्रीय रोजगारों को नया जीवन मिलता है। कांग्रेस अधिवेशनों में स्वदेशी प्रदर्शनी और इस पर विचार सम्मेलन होते थे। इसके प्रति अपना उत्साह प्रकट करते प्रेमधन ने लिखा है—''केवल कुछ विदेशियों की आंखों से अश्रुधारा चलेगी, क्योंकि वे अपने नाश की सूचना इस प्रदर्शनी में देखेंगे। जिनके कानों को ''वन्देमातरम'' शब्द कराल कुठार था, वह सब इस देश के कौशल के अपार भण्डार और व्यवसाय की चमत्कार विभूति को कैसे देख सकेंगे।'' प्रेमधन मानते हैं कि स्वदेशी लोगों के जीवन-मरण का प्रश्न है इसलिए इसके विकास की धारा बाधित नहीं की जा सकती। स्वदेशी की महत्ता पर विशेष जोर देते हुए प्रेमधन लिखते हैं—''स्वदेशी की रूकावट उनकी शक्ति से परे है। इसमें हमारा कल्याण है, जीविका है, स्थिति है। सर्वग्रासी दुर्भिक्ष से बचने का यही एक उपाय है। मोहनिद्रा और आलस्य में सोते भारत के जागने की यही एक तीखी, गुणकारी और नीति सिद्ध अद्वितीय सुंघनी वानस्या है। अतएव आशा है कि भारत के सच्चे हितैषी व्यापारी कभी इस सुअवसर को हाथ से जाने न देंगे और यथाशक्ति वे इस प्रदर्शनी में अपने प्रांत की बनी वस्तुओं को भेजते हुए उसके सुसम्पन्न करने में कुछ कसर न रखेंगे।''

यह सत्य है कि महात्मा गांधी ने उन दिनों जो स्वदेशी आन्दोलन चलाया उसके परिणामस्वरूप भारतीयों ने विदेशी वस्तुओं को बेचना और खरीदना ही बन्द नहीं कर दिया अपितु विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर उनकी होली भी जला दी थी। प्रेमचन्द की ''तावान'' कहानी में छकौड़ी इसीलिए घर-बाहर की फटकार सहता और दण्ड भुगतता है कि वह अपनी पारिवारिक विवशता के कारण विलायती कपड़े पर लगी मुहर तोड़कर दस रूपये का कपड़ा बेच देता है। कांग्रेसी कार्यकर्ता महिला उसे फटकारते हुए कहती हैं—''भले आदमी, तुम्हें शर्म नहीं आती कि देश में यह संग्राम छिड़ा हुआ है और तुम विलायती कपड़ा बेच रहे हो, डूब मरना चाहिए। औरतें तक घरों से निकल पड़ी हैं, फिर भी तुम्हें लज्जा नहीं आती। तुम जैसे कायर देश में न होते तो उसकी यह अधोगति नहीं होती।'' छकोड़ी की रूग्णा पत्नी भी सील तोड़ने के पक्ष में नहीं। वह देश को, देश की स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानती है और अपने प्राणों की परवाह नहीं करती। उसके माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी राष्ट्रीय चेतना को इन शब्दों में मुखरित किया है—''देश को स्वराज्य मिले, लोग सुखी हों, बला से मैं मर जाऊंगी? हजारों आदमी जेल जा रहे हैं, कितने घर तबाह हो गए, तो क्या सबसे ज्यादा प्यारी मेरी ही जान है।'' छकौड़ी की पत्नी अम्बा के इन शब्दों में प्रेमचन्द्र की आत्मा की आवाज है, मानों प्रेमचन्द कह रहे हैं—हम रहें या न रहें पर हमारा देश स्वाधीन हो जाए। प्रेमचन्द की जिन अन्य कहानियों में स्वाधीनता संग्राम की झलक मिलती है, उनमें ''सुहाग की साड़ी'' भी ''तावान'' कोटि की कहानी है। इस कहानी में भी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और उनकी होली जलाने का जीवन्त चित्रण है। ''सुहाग की साड़ी'' कहानी का मुख्य पात्र रतन अपनी पत्नी गौरा की विदेशी कपड़े की साड़ी कांग्रेसी स्वयंसेवकों को स्वेच्छा से सहर्ष जलाने के लिए दे देता है और गौरव का अनुभव करता है।

महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित होकर, जब विदेशी कपड़ों की होली जलाई जा रही थी, घर-घर में चर्खे का घर्र-घर्र नाद सुनाई देने लगा था, तब रामधारी सिंह ''दिनकर'' ने एक कविता ''कत्ति का गीत'' शीर्षक से लिखी थी। उसकी पंक्तियां इस प्रकार हैं—

बोल काठ की बुलबुल, मुंह का कंठ न रहे अलोना
''सैटिन'' पर बह जाय नहीं, पानी-साचांदी-सोना
एक तार की कात सुहागिन, यह भी नहीं अकाज
स्यात् छिपा दे यही नग्न के किसी लोभ का लाज
मधुर चर्खे का घर्घर नाद, देश का धाग-धाग कल्याण।

स्वदेशी आंदोलन में मुस्लिम शायरों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया और लोक भाषा हिन्दी में अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। उर्दू भाषा के एक शायर कमाल की लोक अभिव्यक्ति ''देशभक्तों की होली'' कविता में दृष्टव्य है—

होरी कैसे हो भारत के लाल?
वस्तु विदेशी ने डाला है काल।
पांच सेर के गेहूं बिकते हैं, चार सेर की दाल
घी और दूध भये चरणामृत सूख गये सब गाल
जब तक देशी बणिज न चेतैं तब तक हैं भौंचाल
कोई जतन से याहि उठावहु तब हो देश निहाल
इत्र लवंडर और साबुन से सब दुनिया खुशहाल
यहां न तेल मिले धेले का खुले झुंड के बाल
प्लेग कालरा इंल्फूरंजा रहते आये साल
इनहीं से होली खेलत है यह भारत कंगाल
चर्खा रूपी पिचकारी से खूनी-रंग निकाल
मानचेस्टर से होली खेलो ऐसा करो ''कमाल''

महात्मा गांधी का स्वदेशी आन्दोलन देश की राजनीतिक स्वाधीनता के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता को आवश्यक मानता था। इसीलिए उन्होंने ग्रामीण भारत के कुटीर-उद्योगों को बहुमान दिया। सोहनलाल द्विवेदी भी चरखे और खादी को मानव की आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा स्वाधीनता का संवाहक बताते हैं—

खादी के धागे-धागे में अपनेपन का अभिमान भरा,
माता का इसमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा,
खादी की बढ़ चरणों में पड़ नूपुर सी लिफ्ट मनाएगी,
खादी ही भारत से रूठी आजादी को घर लाएगी।

राष्ट्र भावना से ओतप्रोत पं. सोहनलाल द्विवेदी कट्टर गांधीवादी थे। उनकी राष्ट्रीयता से ओतप्रोत कविताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में चमत्कारिक प्रभाव पैदा किया था। उन्हें पढ़कर युवक स्वाधीनता संग्राम में जूझने के लिए उतावले हो उठते थे। गांधीजी पर लिखी उनकी रचनाएं लोग प्रभातफेरियों में गाते थे। द्विवेदी जी महात्मा गांधी को युगावतार मानते थे। उन्होंने लिखा—

चल पड़े जिधर दो डग, मग में
चल पड़े कोटि पग, उसी ओर
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि

गड़ गये कोटि दृढ उसी ओर।
जिसके सिर पर निज धरा हाथ
उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गये उसी पर कोटि माथ।
हे कोटि चरण हे कोटि बाहु
हे कोटि रूप हे कोटि नाम
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि
हे कोटि मूर्ति तुमको प्रणाम।

किसी अज्ञात लोक कवि द्वारा रचित एक रचना में भी महात्मा गांधी की तुलना राम और कृष्ण से की गयी है—

अवतार महात्मा गांधी है, भारत का भार उतारन को
श्रीराम ने मारा था रावण, और कृष्ण ने मारा था कंस
अब गांधी प्रगट भये जग में, इस गर्वनमेंट को मारन को
श्रीरामके संग में थे लक्ष्मण, और कृष्ण के संग में बलिदाऊ
अब गांधी के संग जवाहर हैं, माता का कष्ट निवारण को
श्रीराम के संग में वानर थे और कृष्ण के संग में थे ग्वाला
अब गांधी के संग में पब्लिक है, इन दुष्टों के संघारण को
श्रीराम के हाथ में धनुष बाण, कृष्ण के हाथ में चक्र सुदर्शन है
अब गांधी के हाथों में चर्खा है, भारत को स्वतंत्र कराने को।

पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" ने महात्मा गांधी को "प्रेम का अवतार" बताते हुए स्वदेशी आन्दोलन का समर्थन किया—

चालीस कोटि बंधु न दबके रहेंगे हम,
दरिया को पाट देंगे जो मिलके बहेंगे हम।
मुल्क जब नशे में आजादी के सरशार हुआ,
आगे गांधी जी बढ़े, प्रेम का अवतार हुआ।

अकबर इलाहाबादी के बिना उर्दू शायरी का इतिहास अधूरा है, वे गांधीवाद या गांधी-दर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन का जोरदार समर्थन किया था। हालांकि प्रशासनिक दबावों के कारण खुलकर उसमें भाग न ले सके, परंतु "गांधी नामा" लिखकर उन्होंने असहयोग आन्दोलन की उपयोगिता आवश्यकता पर प्रकाश डाला था। एक पेंशन प्राप्त जज का यह काम कम साहस का नहीं कहा जा सकता। पं. रामनरेश त्रिपाठी का यह कथन अपनी जगह पर बिल्कुल ठीक लगता है— "अकबर का "गांधी नामा" महात्मा गांधी के आन्दोलन का जीवन चित्र प्रस्तुत करता है। वस्तुतः उर्दू शायरी में यह बिल्कुल नया काम है।" "गांधी नामा" के मुखपृष्ठ पर ही यह शेर लिखा है, जिसमें "गांधी नामा" को फिरदौसी के "शाहनामा" से बेहतर बताया गया है—

इंकिलाब आया, नयी दुनिया, नया हंगामा है
"शाहनामा" हो चुका अब दौर-ए-गांधीनामा है

हिन्दी के सशक्त सवैयाकार पं. अनूप शर्मा ने "गांधी चरित्र" काव्य लिखा, उसकी पंक्तियां इस प्रकार हैं—

पश्चिम में तम का प्रकाश पृथ्वी पै देख
पूर्व में सुभाग्य का सितारा बन चमका।
साका हुआ ऐसा कि सनाका हुआ भूतल पर,
नाका रूका हिंसा का, धड़ाका रुका बम का।
ज्ञान गुदड़ी-से सत्याग्रही का निकाला मंत्र,
धाम-धाम धैर्य का बंधा के धीर धमका।
धर्मवीर गांधी! कोई कर्म के भरोसे रहे,
भारत की भूमि को भरोसा तेरे दम का।

देश के बुद्धिजीवियों को महात्मा गांधी के विद्रोह-वीरता के विराट रूप का उद्‌घाटन तब हुआ, जब 1919 में जलियांवाला बाग का दुष्कांड हुआ। इसके बारे में रामधारी सिंह "दिनकर" ने लिखा है—"तब लोगों ने देखा कि भारत को जो कुछ बोलना है, उसकी भाषा और किसी के पास नहीं, गांधी के पास है और अंग्रेजी के अहंकार को जिस टिक्कर की जरूरत है वह गांधी ही दे सकता है।" इसी घटना के उपरान्त 1920 में दिनकर ने गांधीजी को पहली बार देखा और इस प्रकार साहित्य में आने तक वे गांधीजी के प्रभाव में आ चुके थे जैसा कि अपने एक निबंध "महात्मा गांधी और मेरा सृजन" में स्वयं स्वीकार किया है। सन् 1933 में गांधीजी हरिजनों के मन्दिर प्रवेश करने को थे तो वहां के पंडों के दल ने उन्हें दरवाजे पर रोक ही नहीं दिया, अपितु उन पर लाठियों की बौछार करने से भी बाज नहीं आये थे। उसी प्रसंग से आन्दोलित होकर रामधारी सिंह "दिनकर" ने "बोधि सत्व" कविता लिखी थी, जिसकी समापन पंक्तियां इस प्रकार हैं—

अनाचार की तीव्र आंच से अपमानित अकुलाते हैं
जागो बोधिसत्व भारत के हरिजन तुम्हें बुलाते हैं
जागो गांधी पर किये गये मानव पशुओं के वारों से
जागो मैत्री-निर्घोष आज, व्यापक युग धर्म पुकारों से

राष्ट्रीय तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर झालावाड़ के राजकुमार राजेन्द्रसिंह देव "सुधाकर" ने गांधीजी के विचारों से प्रभावित रचनाओं का सृजन किया। उनका मानना था कि अस्पृश्यता की समस्या के समाधान से ही देश में स्वराज्य की स्थापना होगी। उन्होंने अपनी भावना व्यक्त की— "आएगा स्वराज्य सिद्धि स्वयं हाथ जोड़े आगे, भारत की यदि छूआछूत छूट जायेगी।" सामाजिक वैषम्य पर प्रहार करने वाली डा. रामकुमार वर्मा की एक प्रारम्भिक कविता "अछूत" है, जिसमें कहा गया है—"वे पण्डतजी समझते हैं [illegible] यही अछूत हैं, किन्तु समझें उन्हें, एकलव्य के पूत हैं।" पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" ने असहयोग अन्दोलन पर भारत दलितों-शोपितों को भी अपने नारकीय जीवन से मुक्ति के लिए असहयोग का आह्वान किया—"हृदय चोट खाये दबाओगे कब तक? बने नीच यों मार खाओगे कब तक? तुम्ही नाज बेजा उठाओगे कब तक? बंधे बंदगीयों बजाओगे कब तक? असहयोग कर दो। असहयोग कर दो।"

हिन्दी नव जागरण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वर साम्प्रदायिकता के विरोध का रहा है, यह उसकी मूल अवधारणाओं में है। जिन विद्वानों-चिन्तकों को भारतेन्दु युग के साहितय में कट्टर साम्प्रदायिकता दृष्टिगत होती हो, उन्हें प्रेमधन की दृष्टि से विचार करना चाहिए। प्रेमधन लिखते हैं—"हिन्दु और मुसलमान एक" तीसरे मिश्रधर्मी राजा की प्रजा है। देश

की समस्त प्रजा की प्रकार ही में देश का इष्ट साधन होता है। परन्तु अब एक राजा ही एक जातीय प्रजा के स्थान पर दो जाति की प्रजा होने से दोनों के परस्पर विवाद और विद्वेष के कारण प्रजा की शक्ति अत्यन्त निर्बल है। इसी से देश के सुशिक्षित शुभचिन्तक अग्रगण्यों को अब दोनों में विशेष एकता उत्पन्न करने के बिना देश की हीन दशा दूर होने की आशा नहीं है।" प्रेमधन का मानना था कि देश के शुभचिन्तक बुद्धिजीवि जब तक हिन्दू और मुसलमान के बीच एकता कायम नहीं करेंगे, तब तक देश की दुदर्शा समाप्त नहीं होगी।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने राष्ट्रीयता की जो कल्पना की, उसमें केवल किसी एक वर्ग, जाति विशेष का स्थान न होकर भारत में रहने वाली सभी जातियों, सभी वर्ग के व्यक्तियों और सभी सम्प्रदायों का समानाधिकार है। "मंगल घट" में मातृ-मन्दिर की कल्पना करते हुए गुप्त जी ने लिखा—

भारत माता का मन्दिर यह, समता का संवाद जहां,
सबका, शिव कल्याण यहां है, पावें सभी प्रसाद यहां।
जाति, धर्म या सम्प्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहां,
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम सम्मान यहां।
राम-रहिम, बुद्ध, ईसा का सुलभ एक सा ध्यान यहां,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के गुण-गौरव का ज्ञान यहां।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की, भला प्रेम उन्माद यहां,
सबका, शिव कल्याण यहां है, पावे सभी प्रसाद यहां।

भारत-भारती के यशस्वी कवि मैथिलीशरण गुप्त ने "आह्वान" कविता "भारत छोड़ो" आन्दोलन को लक्ष्य कर लिखी थी—

मुक्ति मांगती है बलिदान
सुनो सुनो बन्दी बापू का आता यह आह्वान
बन्दी है किस लिए आज वे? क्या उनका अपराध
सबके साथ उन्हें अपनों की स्वतंत्रता की साध
बैरहीन उनका विरोध है प्रेम असीम अगाध
वे आग्रही परन्तु सत्य के सबके बन्धु अबाध
उन अजातरिपु से रौरव भी होगा स्वर्ण समान
मुक्ति मांगती है बलिदान।

साम्प्रदायिक सद्भाव का स्वर में रामनारायण पांडेय की रचनाओं में भी मुखरित है—

हे शहंशाह, रिआया है दोनों ही हिन्दु-मुसलमान,
दोनों की शान बराबर है, हकदार मुहब्बत के समान।
न कोई रहे राज-सुख से अछूता,
पुजारी सुखी तो सुखी हो नमाजी।
कभी चल सकेगी न फिरकापरस्ती, दखल धर्म में दे किसी की हस्ती,
प्रतिज्ञा नहीं हवा बोलती है, इसी के लिए जिन्दगी डोलती है।

स्वतंत्रता-संग्राम के बलिदानों को उजागर कर जनसमूह को एक सार्थक भाव बोध प्रदान करने की दिशा में नौटंकी की पहल एक ऐतिहासिक महत्व रखती है। श्रीकृष्ण पहलवान ने सन् 1931 में "वीर बालक" नोटंकी लिखी, जो बाहर से कुछ और है, किन्तु उसका वास्तविक रूप हिन्दू-मुस्लिम की एकता और देश की स्वतंत्रता है—

हम देश पर कुरबां हैं,
हम देश के शैदाई।
आजाद हो रहेंगे, आजादी पसंद आई॥
हम देश की सेवा से मुंह को न कभी मोड़े।
हिंसात्मक न होंगे-हिंसा है दुखदायी॥
जो हमको सतायेगा उसको न हम सतावें।
नेकी जो करने वाले करते नहीं बुराई॥
हिंदोस्तां हमारा हिंदोस्तां के हम हैं।
आबाद जो है कौमें वो सब हमारे भाई॥
परतंत्रता मिटै तब हिलमिल के जब रहें सब।
सर सब्ज देगा उस दिन हिंदे चमन दिखाई॥

महात्मा गांधी की इस्माइलगंज में सन् 1939 में सम्पन्न सभा में इलाहाबाद फाफामऊ के नौटंकी कलाकार राजाराम पांडेय ने एक रचना प्रस्तुत की थी—

सत्यव्रत धारी चारी चरखा बिहारी
बांधि कमर में लंगोटी डारि खद्दर की तनियां।
मान बिन अहिंसा विशाल दोनों हाथों से,
ऐंचि खेंचिलीनों बापू भारत को कनियां॥
शत्रुन को मित्र के समान जान बापू जी,
ज्योतिषी बखाने विश्व हित की कहानियां।
जग को जगाय दियो देश राग गाय दियो,
लंदन हिलाय दियो भारत का बनियां।

"हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना" लेख के लेखक डा. लक्ष्मीनारायण दुबे ने अपने लेख (मंगल दीप, 1992, पृष्ठ 203-204) में बताया है कि गांधी युग की शुरूआत के साथ ही राष्ट्रीय काव्य में जीवन मूल्यों तथा आध्यात्मीकरण की भावनाएं घर करने लगी। गांधीजी के राष्ट्रीय आन्दोलन की भारतीय भूमिका पर आने के पूर्व ही हिन्दी कवियों का ध्यान उनकी ओर चला गया था। हिन्दी में गांधीजी पर सर्वप्रथम कविता माखनलाल चतुर्वेदी "एक भारतीय आत्मा" ने सन् 13 में "निःशस्त्र सेनानी" के नाम से लिखी थी। उनका साप्ताहिक पत्र "कर्मवीर" भी गांधी जी की प्रेरणा का प्रतीक था। "एक पुष्प की अभिलाषा" ने माखनलाल चतुर्वेदी को अमर बना दिया—

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गुंथा जाऊं
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी का ललचाऊं
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर है हरि डाला जाऊं
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक

"उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द" पुस्तक में प्रकाशित अपने एक लेख "साम्प्रदायिक एकता के पक्षधर" (पृष्ठ-83) में मकलेश्वर लिखते हैं कि

प्रेमचन्द ने साम्प्रदायिक एकता के अपने सपनों को बड़ी ही मानवीय स्थितियों से जोड़ा है और उन्हें बेहद संवेदना से कहानियों में चित्रित किया है।'' प्रेमचन्द ने ऐसी ढेरों कहानियां लिखी जिनका साम्प्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से महत्व है। हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की दृष्टि से प्रेमचन्द ने उस युग में अपनी रचनाओं के माध्यम से जो राष्ट्रीय कार्य किया वह किसी भी राजनीतिक नेता द्वारा इस दिशा में किये गये प्रयत्नों से कम महत्वपूर्ण नहीं है। साम्प्रदायिक एकता की दृष्टि से ''पंच परमेश्वर,'' ''शतरंज के खिलाड़ी,'' ''फातिश,'''दो कब्रें,'''हिंसा परमों धर्म'' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी इन कहानियों में धार्मिक सहिष्णुता का मानवीय धरातल पर जो विरोध है, वह उनकी व्यापक और उदार राष्ट्रीय चेतना का ही ज्वलन्त प्रमाण है।

स्वाधीनता आन्दोलन को ''रंगभूमि'' में प्रेमचन्द ने एक भिन्न कोण से प्रस्तुत किया है। यहां मुख्यतः औद्योगीकरण, अंग्रेजी सत्ता एवं उसके सहयोगियों के विरुद्ध असहयोगियों द्वारा जन-जागरण की कथा को प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्यात्मक उपन्यास का नायक है सूरदास जो महात्मा गांधी का ही प्रतिरूप बन पड़ा है। अपनी दस बीघा जमीन के लिए, जिस पर जान सेवक सिगरेट का कारखाना स्थापित करना चाहता है और इस उद्देश्य से वह जमीन हथियाना चाहता है, सूरदास जो व्यापक संघर्ष करता है वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बन गया है। सामरिक रंगभूमि में उतरे इस खिलाड़ी के आदर्श वही हैं जो महात्मा गांधी के थे। सत्य, अहिंसा, त्याग, क्षमाशीलता, धर्म, न्यायप्रियता आदि का वह पूंजीभूत रूप है और इन्हीं का सम्बल उसकी अपराजेय शक्ति है। अपने जिन कतिपय पात्रों के माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी राष्ट्रीय चेतना को व्यंजित किया है, सूरदास उनमें शीर्षस्थ हैं। जान सेवक का पक्ष अंग्रेजी सत्ता के पक्ष का प्रतीक है और सूरदास का पक्ष भारत-भू और भारतीय संस्कृति की रक्षा के पक्ष का प्रतीक है। राजा महेन्द्र कुमार सिंह के सम्मुख कारखाना खुलने के जिन सम्भावित दुष्परिणामों की चर्चा सूरदास करता है वे भू,जन और भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं और इनसे प्रेमचन्द की राष्ट्रीय चेतना ही प्रकारान्तर से अभिव्यंजित होती है। सूरदास कहता है, ''सरकार बहुत ठीक कहते हैं, मुहल्ले की रौनक जरूर बढ़ जायेगी, रोजगारी लोगों को फायदा भी खूब होगा। लेकिन यहां यह रौनक बढ़ेगी, वहां ताड़ी-शराब का तो प्रचार बढ़ जायेगा, कसबियां भी तो आकर बस जायेगी, परदेशी आदमी हमारी बहु-बेटियों को घूरेंगे, कितना अधरक होगा। देहात के किसान अपना काम छोड़कर मजूरी के लालच में दौड़ेगें, यहां बुरी-बुरी बातें सीखेंगे और अपने बुरे आचरण अपने गांव में फैलायेंगे। देहातों की लड़कियां, बहुएं मजूरी करने आयेंगी, और यहां पैसे के लोभ में अपना धर्म बिगाड़ेंगी। यही रौनक शहरों में है। वही रौनक यहां हो जायेगी। भगवान न करे, यहां वह रौनक हो। सरकार मुझे इस कुकरम और अधरम से बचायें। यह सारा पापे मेरे सिर पड़ेगा।'' कहने की आवश्यकता नहीं कि महात्मा गांधी के समान ''रंगभूमि'' का सूरदास भी औद्योगीकरण के पक्ष में नहीं है क्योंकि इसमें धर्मप्राण भारतीय संस्कृति को, जो गांवों में आज भी अपने मूल रूप में सुरक्षित है, खतरा हो सकता है।

हिन्दी नव जागरण की एक अनिवार्य ओर सशक्त मांग थी भाषा की, भारतीय भाषाओं के वर्चस्व के सवाल की। ''नागरी भाषा'' नाम से प्रेमधन का अपेक्षाकृत एक बड़ा लेख है, जिसमें उन्होंने हिन्दी के उदय से मची खलबली का जायका लिया है, तब हिन्दी अपने ''नाम'' के अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थी। हिन्दी के संघर्ष की अनवरत यात्रा का यह प्रारम्भिक पड़ाव, हमें गहरे उद्वेलित भी करता है। इस दृष्टि से यह लेख बहुत ही महत्वपूर्ण है। ''हिन्द, हिन्दू और हिन्दी,'''हमारी प्यारी हिन्दी,'''हमारे देश की भाषा और अक्षर,'''भारतीय नागरी भाषा'' आदि लेखों में हिन्दी भाषा के अधिकार और प्रसार के लिए ठोस आन्दोलन पर बल देते हुए वे उद्यमशील होने का संदेश देते हैं। प्रेमधन के पूर्व जन जागृति के अग्रदूत एवं राष्ट्र निर्माता साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए एक नया मंत्र दिया''—''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।'' इस ''निज भाषा उन्नति'' के लिए उन्होंने स्वयं तो कविता, नाटक, निबंध तथा लोक गीत आदि साहित्य के विविध अंगों में रचना-कार्य किया ही, साथ ही समानधर्मा लेखकों-पत्रकारों का विशाल मंडल भी तैयार किया, यह भी हिन्दी को महान देन थी । पं. प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनाथ भट्ट, पं. सुधाकर द्विवेदी, दीनदयाल गिरि, राय किंकरदास, हरिकृष्ण टैकमाली, भगवानदास, तुलाराम, प्रेमधन आदि भरतेन्दु-मंडल के ही साहित्यकार थे।

भारतेन्दु की मान्यता थी कि देश में एकता सबसे आवश्यक है, उन्होंने भारतीय जनता को आंतरिक मतभेद भुलाने और अपनी संस्कृति विस्मृत करने की सीख दी—

> भारत में एहि समय भई है सब कुछ बिनहि प्रमान हो दुइ-रंगी।
> अधे पुराने पुरानहि माने आधे भये क्रिस्तान हो दुइ-रंगी॥
> एही से भारत नास भया सब जहां-तहां यही हाल हो दुइ-रंगी।
> होई एकमत भाई-सबै अबछोड़ हुंचाल-कुचाल हो दुइ-रंगी॥

जिस भावात्मक एकता के लिए आज भी हमारे नेताओं को अपीलें जारी करनी पड़ती हैं, उसका आह्वान भारतेन्दु ने नव जागरण काल से प्रारम्भ में ही किया था। अंग्रेजी शिक्षा से देश में बेकारी फैलेगी, इसका आभास उन्हें उसी समय हो गया था। भारतेन्दु ने लिखा—

> तीन बुलाए तेरह आवैं, जिन जिन विपता रोई सुनावैं।
> आंखें फूटे भरे न पेट, क्यों सखि सज्जन! नहिं ग्रैजुएट॥

अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी भाषा का जो कुप्रभाव तत्कालीन समाज पर पड़ रहा था, उसकी और उन्होंने लोगों का ध्यान खींचा था। विदेशी शासन के अधिकारियों की चाटुकारिता तथा उनका कृपा पात्र बनने की कामना के प्रति भी उन्होंने लोगों को चेताया था—

> इनकी उनकी खिदमत करो, रूपया देते देते मरो।
> सब आवैं कोहि करन खराब, क्यों सखि सज्जन! नहीं खिताब॥

भारतेनदु ने बलिया के ऐतिहासिक भाषण में कहा था—''हमारे हिन्दुस्तानी लोग तो रेल की गाड़ी है। यद्यपि फर्स्ट क्लास, सेकेंड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी-अच्छी और बड़े-बड़े महसूल की इस ट्रेन में लगी हैं पर यह बिना इंजन के सब नहीं चल सकती। वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलाने वाला हो तो ये क्या नहीं कर सकते ? इनसे इतना कह दीजिये—''का चुप साधि रहा बलवाना।'' फिर देखिये, हनुमान जी का अपना बल कैसा याद आ जाता है, सो बल कौन याद दिलावै ? राजे-महाराजों को अपनी पूजा, भोजन, झूठी गप से छुट्टी नहीं। हकिमों को कुछ तो सरकारी काम

घेरे रहता है, कुछ बाल, घुड़दौड़, थिएटर, अखबार में समय गया। कुछ समय बचा भी तो उनका क्या गरज है कि हम गरीब, गंदे, काले आदमियों से मिलकर अपना अनमोल समय खोवें? इस प्रकार भारतेन्दु ने विदेशी शासन से प्रभावित तथा मानसिक दृष्टि से पराजित हिन्दी भाषी जनता के जीवन में नये जागरण और क्रांति का बीज बोया। इस भाषायी क्रांति के बीज को वट-वृक्ष बनाने का काम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया।

राष्ट्र स्थायित्व तथा देशवासियों में ऐक्य के विधान के लिए राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता असंदिग्ध है। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में तो यह और भी आवश्यक हो गया था, उन दिनों गांधीजी तथा अन्य राष्ट्रीय नेता यह अनुभव कर रहे थे कि अपनी राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्रीयता की भावना सुदृढ़ नहीं हो सकती। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया और हिन्दी सबकी समझ में आ जाए, इस हेतु महात्मा गांधी ने "हिन्दुस्तानी" का समर्थन किसा। जब हम राष्ट्रभाषा हिन्दी की बात करते हैं तो उसका अर्थ किन्हीं दूसरी भाषाओं का विरोध करना नहीं अपितु प्रत्येक भाषा को उसका उचित स्थान दिलाते हुए सबके बीच समन्वय स्थापित करना है। इसे स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था—"मुझमें अंग्रेजी का या दूसरे पश्चिमी लोगों का द्वेष न कभी था, न आज है। उनका कल्याण मुझे उतना ही प्रिय है जितना कि मेरे देश का। इसलिए मेरे छोटे से ज्ञान भंडार से, अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार कभी नहीं होगा। मैं उस भाषा को भूलना नहीं चाहता, न यह चाहता हूं कि सारे हिन्दुस्तानी अंग्रेजी भाषा को छोड़ें या भूलें। मेरा आग्रह हमेशा अंग्रेजी को उसकी योग्य जगह से बाहर न ले जाने का रहा है। वह कभी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती और न हमारी तालीम का जरिया।" लोकभाषा, राष्ट्रभाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का समन्वय साधते हुए गांधीजी ने कहा था—"हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है। क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकती। हिन्दू-मुसलमान दोनों को मिलकर करीब बांइस करोड़ लोगों की भाषा, थोड़े बहुत हेर-फेर से हिन्दी-हिन्दुतानी ही है। इसलिए उचित बहुत और सम्भवत: यही है कि प्रत्येक प्रांत में उस प्रांत की भाषा, सारे देश के पारस्परिक व्यवहार के लिए हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए अंग्रेजी का उपयोग हो। हमारा जीवन अपने इन किसानों और मजदूरों के ऊपर निर्भर करता है और हमारी संस्कृति भी इस चीज को स्वीकार करती है। इन किसानों और मजदूरों की भाषा, ऐसी भाषा जिसे वे सहज ही समझ सकें, हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही है और वही हमारी राष्ट्र भाषा हो सकती है।"

भाषा के विषय में उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्द, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ही अनुयायी हैं। वे अनुभव करते हैं कि "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र का बोध हो ही नहीं सकता। जहां राष्ट्र है, वहां राष्ट्रभाषा का होना लाजिमी है। अ सम्पूर्ण भारत एक राष्ट्र बनाना है तो उसे एक भाषा का आधार ले पड़ेगा।" प्रेमचन्द का विचार है कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक ऐक्य के लिए "हिन्दुस्तानी" का प्रयोग ही श्रेयस्कर है। उन्होंने लिखा—"जो लोग भारतीय राष्ट्रीयता का स्वप्न देखते हैं, जो इस सांस्कृतिक एकता को दृढ़ करन चाहते हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे लोग हिन्दुस्तानी का निमंत्रण ग्रहण करें, जो कोई नयी भाषा नहीं है बल्कि उर्दू और हिन्दी का राष्ट्रीय स्वरूप है।" प्रेमचन्द ने सैद्धांतिक धरातल पर ही "हिन्दुस्तानी" का समर्थन नहीं किया, अपितु अपने लेखन में भी उसे मूर्त कर दिखाया। उनकी लोकप्रियत के मूल में उनके इस मौलिक, राष्ट्रनिष्ठ भाषा का प्रयोग का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

स्वतंत्रता संग्राम के समय जिस भाषा को राष्ट्रभाषा हिन्दी के रूप मे प्रतिष्ठित करने-कराने में देश के चिन्तकों-मनीषियों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अपनी आस्थामयी ऊर्जा के कारण सर्वस्व होम दिया, आजादी के बाद उनकी जीवन-दृष्टि को सच्चे भारतीय गौरव की संकल्पनिष्ठा का नव जीवन नहीं मिला, हिन्दी राष्ट्रभाषा होकर भी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी विदेशी सत्ता की पकड़ से परतंत्र देश को आजाद कराने में हिन्दी के माध्यम से हम संघर्षरत् रहे, पर आजादी के बाद विदेशी भाषा अंग्रेजी की पकड़ मे पड़ी अपनी भाषा हिन्दी-राष्ट्रभाषा को आज तक मुक्त नहीं कर पाये अंग्रेजी के शासनाधिकार से मुक्ति पाकर भी अभिजात और समृद्ध-सम्पन्न नेताओं और अधिकारियों ने भाषायी गुलामी की उसी समाज-पद्धति को उसी परम्परा को कायम रखा है। हिन्दी की लोकप्रियता के कारण "चा चवन्नी चांदी की जय बोलो महत्मा गांधी की" का जयघोष "मजबूरी क नाम महात्मा गांधी" का मुहावरा बन गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के वचनों—"कोई भी देश सचे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।" और "विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिदायत करने वाले देश के दुश्मन हैं।" को तिलांजलि देता हुआ राष्ट्र गांधी का देश कहलाता है और एक वर्ष में ही अनेक बार श्रद्धांजलि देता है।

अत: स्पष्ट है कि हमारा स्वाधीनता आन्दोलन और महात्मा गांधी क दर्शन केवल समाजेतिहास के पृष्ठों में ही दर्ज नहीं है, अपितु "सत्य के प्रयोग" के नाम से आत्मकथा लिखने वाले महात्मा गांधी का संघर्षशील जीवन एवं जीवन दर्शन का जीवंत इतिहास तत्कालीन साहित्यिक रचनाओं में भी दर्ज है जो इतिहासकारों के लिए भी उस युग का महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गई है। हिन्दी साहित्य की सम्पन्नता-समृद्धि एवं सौन्दर्य-दृष्टि के विकास तथा उन्नयन में पराधीनता से मुक्ति लिए जुझारू जनता की आकांक्षाओं और भावनाओं के प्रकाश-पुंज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दर्शन का महत्वपूर्ण अवदान है, जिसकी रचनात्मक चिंगारियां आज के हिंदी साहित्य में भ देखी जा सकती हैं।

"आश्वस्त", 20 बागपुरा, उज्जैन-456 010

जन जन की भाषा हिन्दी

—डॉ. श्रुतीशाम्भवी

भाषा और राष्ट्र का संबंध, राष्ट्रीयता और संस्कृति से है। भाषा के वेष में मनुष्य की संस्कृति बोलती है। यदि भाषा नष्ट हो जाए तो सांस्कृतिक विरासत के विलुप्त हो जाने का योग बनता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्षरत भारत ने भाषा की शक्ति को पहचाना और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान से हिन्दी को राजभाषा का गौरव मिला।

26 जनवरी 1950 से प्रभावी होने वाले स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को सम्पर्क भाषा और राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है और यह संकल्प किया गया कि क्रमशः हिन्दी का प्रयोग बढ़ाते हुए 15 वर्ष पश्चात हिन्दी को पूर्णतया प्रतिष्ठित कर दिया जायेगा। यह संकल्प अथवा निर्णय देश के समस्त प्रान्तों के प्रतिनिधियों का समवेत् निर्णय था क्योंकि यह राष्ट्रीयता की पुकार थी कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर जनचेतना को सम्मानमयी वाणी दी जाए।

किन्तु आज आजादी के 50 साल बाद भी अंग्रेजी का दबदबा कम नहीं हो पाया है तो इसका कारण वह वर्ग है जिसके हाथों में राजनैतिक, शैक्षिक और आर्थिक सत्ता है और जिसका निहित स्वार्थ अंग्रेजी से सिद्ध होता है। इस वर्ग विशेष का कहना है कि हिन्दी पूर्णतः विकसित भाषा नहीं है और जब तक हिन्दी का पूर्णतः विकास नहीं हो जाता तब तक अंग्रेजी बनी रहनी चाहिए।

हिन्दी के विरोध में एक वर्ग यह भी है कि हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी को अपनाकर ही उन्नति कर सकते हैं। साथ ही यह भी कहा जाता है कि हिन्दी एक बोझिल, जटिल और दुरूह भाषा है। अतः आज के कम्प्यूटर युग में वैश्विक फलक पर ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता से इंकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इनका मानना है कि अंग्रेजी पूरे विश्व की सम्पर्क भाषा है।

दरअसल इन तर्कों के पीछे छिपे दासत्व आपको ध्यान से समझना होगा जिसका कारण अंग्रेजी भाषा की श्रेष्ठता से कहीं ज्यादा वह मानसिकता है जो हमें उपनिवेश बना कर अंग्रेज शासकों ने दी है। यदि ऐसा ही होता तो आज इंग्लैण्ड ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में सर्वोपरि होता है। प्राचीन भारत, रोम और यूनान आदि ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धि प्राप्त की वह भी न की होती।

यदि ज्ञान-विज्ञान की उन्नति का मूलाधर अंग्रेजी ही होती तो हम आजादी से पहले विश्व के सर्वाधिक उन्नत देशों में होते किन्तु विडम्बना तो यह है कि साहित्य, दर्शन, व्याकरण, औषधि, विज्ञान, खगोल शास्त्र, गणित और धातु विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत का योगदान रहा न कि परतन्त्र भारत का।

तब उन्नति और आविष्कार की भाषा अंग्रेजी नहीं संस्कृति थी और तब भाषा पर जटिल, दुरूह और बेझिल का आरोप लगाने वाली मनोवृत्तियां भी नहीं थी। तो कहीं हिन्दी को लेकर यह पलायनवादी मनोवृत्तियां शताब्दियों की दासता की देन तो नहीं। दरअसल मानसिक रूप से हम आज भी आजाद नहीं हो पाये हैं और यही कारण है कि अंग्रेजी के बावजूद विश्व के अन्य देशों की तुलना में इंग्लैण्ड के पिछड़ने को नहीं देख पा रहे हैं। और अंग्रेजी को ही उन्नति का मूलाधार मान कर सीने से लगाए है।

अंग्रेजी भक्तों का यह तर्क कि हिन्दी पूर्णतः विकसित भाषा नहीं है और जब तक हिन्दी का पूर्णत विकास नहीं हो जाता अंग्रेजी बनी रहनी चाहिए, पूर्णतः बेमानी है। क्योंकि भाषा के विकास का अर्थ है भाषा विशेष का व्याकरणिक स्वरूप और नये शब्द निर्माण की निश्चित प्रक्रिया। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा अंग्रेजी की तुलना में विकसित ही नहीं बल्कि ज्यादा वैज्ञानिक भी है।

अब सवाल यह उठता है कि तंत्र के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित और सामान्य जन की पहुंच से ऊपर इस अंग्रेजी से कैसे छुटकारा मिले और हिन्दी कैसे जन-जन की भाषा बने। वे कौन से अन्तर्निहित और वाह्य तत्व है जो निरन्तर अवरोधक की भूमिका निभा रहे हैं। और इन तत्वों को प्रश्रय देने वाली शक्तियां कौन-कौन सी हैं। स्पष्ट है कि हिन्दी को सुस्थापित करने में अड़चन हिन्दी बनाम अंग्रेजी है न कि हिन्दी बनाम अन्य प्रादेशिक भाषाएं। चूंकि हिन्दी सहित सभी अन्य प्रादेशिक भाषाएं संस्कृत मूल से जन्मी है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकारे जाने में भला किसे आपत्ति होगी। रही बात हिन्दी को सरल करने और तथाकथित हिन्दुस्तानी बनाने की तो, यह विचारणीय प्रश्न है कि आज बोलचाल की भाषा से अलग ज्ञान-विज्ञान शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में अभी तक प्रयोग में आने वाली अंग्रेजी की शब्दावली के लिए स्थानापन्न शब्दावली की भाषा कौन सी होगी। एकाध अपवाद को छोड़ दे तो, हम पाते हैं कि उक्त समस्या का समाधान हिन्दी के सहारे ही सम्भव है न कि तथा कथित हिन्दुस्तानी से।

वैसे भी अंग्रेजी सीखने और अपने को निरन्तर जांचने-परखने के लिए जब हम अपने घरों में अंग्रेजी के शब्दकोशों का सहारा ले सकते है तो हिन्दी सीखने के लिए क्यों नहीं हम चाहते हैं कि हिन्दी का प्रत्येक शब्द बिना प्रयास के ही स्वतः सरल आसान या बोधगम्य हो। जबकि हिन्दी को तथा कथित हिन्दुस्तानी के रूप में ढालने का दूरगामी प्रभाव हमारी आने वाली पीढ़ियों पर इस रूप में पड़ने की आशंका है कि पूरी पीढ़ी की पीढ़ी हमारी साहित्यक व सांस्कृतिक धरोहर से वंचित रह जाएगी तब महाप्राण निराला की कालजयी कृति राम की शैक्ति पूजा, जयशंकर प्रसाद की कामायनी और डा. धर्मवीर भारती के अन्धायुग का क्या होगा।

जब जर्मन विद्वान मैक्समूलर महाकवि कालिदास को पढ़ने के लिए संस्कृत भाषा को सीखते हैं और स्पेन के नोवेल प्राइज विजेता कवि वान रेमोन हेमेनिस व उनकी विदुषी पत्नी गुरुवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर के साहित्य को जांचने समझने के लिए बांग्ला भाषा सीखते हैं तो हम अपनी भाषा की विपुल साहित्यिक-संस्कृतिक विरासत को पाने के लिए हिन्दी क्यों नहीं सीख सकते। बात घूम फिर कर फिर वहीं आ टिकती है कि हमारे भीतर तक जड़ जमा चुका दासत्व भाव ही नित्य नये तर्क देकर हिन्दी राह के अवरोध पैदा करता है, विशेषकर तब जब राजतंत्र में हिन्दी को सुस्थापित करने का संकल्प उभरता है। यहीं अंग्रेजी का पिछलग्गूपन हर बार आड़े आ जाता है वरना हिन्दी हिन्दुस्तान की सदा से जन अथवा लोक भाषा रही है अथवा रहेगी।

यही कारण है कि जन अथवा लोक भाषा में रचा गया साहित्य चाहे वह सूर, कबीर, तुलसी का हो या मीर, रहीम, रसखान का, मलिक मोहम्मद जायसी का हो या अमीर खुसरो का। आज भी हमारे जन मानस में रचा बसा है। किन्तु शैक्सपीयर, कीट्स और इलियट के मिलटन डिकिन्स और वायरन के तथाकथित अन्ध भक्तों की सोची समझी दुरभि सन्धि का ही ये परिणाम है। आज आजादी के 50 साल बाद भी हिन्दी आज तक न तो जन-जन की भाषा ही बन पायी है न राष्ट्र भाषा ही। तो हिन्दी को राष्ट्र भाषा और जन-जन की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने व शैक्षिक, सरकारी व सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में सुस्थापित करने के लिए तथा अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को निरन्तर प्रवाहमान बनाने के लिए हमें अपनी संकल्प शक्तियों को परखने तथा उन पर दृढ़ता के साथ अमल करने की नितांत आवश्यकता है और इसी में हम सबका कल्याण निहित है।

द्वारा: श्री विवेकानंद, डी-777, पेशवा रोड, नई दिल्ली-110001

स्वास्थ्य चर्चा

क्या आपने कभी सोचा है कि मौसम बदलाव के साथ हमारे मनोदशा में क्यों परिवर्तन हो जाता है? बारिश के मौसम में अक्सर कुछ लोग उदास हो जाते हैं। ठंडे स्थानों पर रहने वाले लोग अक्सर शीत निष्क्रियता से पीड़ित रहते हैं।

मनोचिकित्सकों के अनुसार आत्महत्या का प्रयत्न, ज्यादा शराब पीना, भूख से अधिक भोजन करने जैसी खराब मनोदशा सर्दियों की अंधेरी रात और मानसून के दौरान बढ़ जाती है।

वैसे ऊब, अकेलापन और घर में ही बैठे रहना भी खराब मनोदशा पर प्रभाव डालने वाले कारक हो सकते हैं लेकिन इसके जैविक कारण भी हैं। हमारे शरीर के सामान्य रूप से क्रिया करने में सूर्य की रोशनी भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अंधेरी सर्दियों और मानसून के महीनों में जब हम घर के अंदर बंद हो कर रह जाते हैं तो सूर्य की रोशनी की आपूर्ति कम होने से मस्तिष्क की पाइनल ग्रंथि पर प्रभाव पड़ता है। कुछ लोगों में इस कारण शारीरिक द्रव्यों में असंतुलन पैदा हो जाता है जिस कारण वे उदास व मूडी हो जाते हैं।

ऐसे लोगों के लिए अधिक से अधिक मात्रा में धूप सेंकना ही इसका इलाज है। धुप्प मौसम में बिजली की तेज रोशनी में रहने से भी मदद मिल सकती है।

कन्नड़ सरकार और अंग्रेज

—जगन्नाथ,

दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स के 27 जून 1997 के अंक में एक समाचार है कि कर्नाटक सरकार ने कन्नड़-विकास-अधिकरण की स्थापना की है। विशेष महत्वपूर्ण यह है कि इसके अध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रशेखर पाटिल को केबिनेट स्तर के मंत्री का दर्जा दिया गया है। श्री पाटिल कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध विद्वान तो हैं ही अंग्रेजी में भी उन्होंने उच्च कोटि की कविताएं और नाटक लिखे हैं। किन्तु अपने देश की जनता और अपनी भाषा के प्रति उन्हें निष्ठा है, सच्ची निष्ठा है, मात्र दिखाऊ नहीं। वे सरकारी ओर अर्द्ध-सरकारी कार्यालयों में कन्नड़ के प्रयोग-संबंधी सरकारी आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अपने सहायकों के साथ विभिन्न कार्यालयों में अचानक छापे मारते हैं, वैसे ही जैसे हम पुलिस के या आयकर अधिकारियों के छापे सुनते हैं। छापों के दौरान अंग्रेजी के टंकण-यंत्र, पत्र-शीर्ष, नाम-पट आदि जब्त कर लिए जाते हैं और आदेशों की अवहेलना करने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है।

अक्तूबर 1996 में प्रो. पाटिल ने अकादमी का कार्यभार संभाला था। अब तक उनके द्वारा लगभग 150 "भाषायी छापे" मारे जा चुके हैं। फिर एक सप्ताह के अन्दर संबंधित कार्यालय को कन्नड़ भाषा के प्रयोग में प्रगति विषयक अपनी रिपोर्ट देनी होती है, और यह सुनिश्चित करना होता है कि एक महीने के अन्दर उस कार्यालय में अंग्रेजी का प्रयोग बिलकुल बंद हो जाए। छापे दुबारा भी मारे जाते हैं। इस प्रकार कन्नड़ का प्रयोग काफी मात्रा में बढ़ गया है और अधिकारियों की अंग्रेजी-गुलामी की मानसिकता में पर्याप्त बदलाव आया है। प्रो. पाटिल ने कार्यालयों में कन्नड़-जागृति-समितियां भी गठित की हैं। उन मंत्रियों तक से स्पष्टीकरण मांगा जाता है जो सरकारी कार्य में कन्नड़ के प्रयोग की अवहेलना करते हैं। राज्य में पहली नवम्बर 1998 तक शत-प्रतिशत कन्नड़ के प्रयोग का लक्ष्य है; अंग्रेजी का प्रयोग केवल अन्य राज्यों और उच्च न्यायालयों के साथ पत्राचार के लिए आवश्यकतानुसार सीमित रहेगा।

प्रो. पाटिल अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे हैं और वे डा. राम मनोहर लोहिया तथा जयप्रकाश नारायण के अनुयायी हैं। उनका कहना है कि वे एक भाषा के रूप में अंग्रेजी के विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे रुचिपूर्वक अंग्रेजी पढ़ाते और अंग्रेजी में लिखते रहे हैं। किन्तु उसे अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा के आड़े नहीं आने चाहते। उनका कर्त्तव्य कन्नड़ के राजभाषा के रूप में प्रयोग संबंधी आदेशों का पालन सुनिश्चित कराना है जिसके प्रति वे पूरी ईमानदारी से प्रयत्नशील हैं।

प्रसंगवश, कन्नड़ सरकार ने कुछ वर्ष पूर्व सरकारी और गैर सरकारी प्राथमिक स्कूलों में अंग्रेजी की पढ़ाई बन्द करने के आदेश दिए थे जिनके विरोध में वहां के पब्लिक स्कूलों के संघ ने न्यायालय में याचिका दी थी, किन्तु उसे कर्नाटक के उच्च न्यायालय और फिर उच्चतम् न्यायालय ने निरस्त कर दिया था। भाषा के मामले में कन्नड़ सरकार की ईमानदारी अन्य सभी सरकारों के लिए अनुकरणीय है।

सांसदों, विद्यालयों, अन्य जन प्रतिनिधियों और भारतीय भाषाओं के उत्थान में लगी हुई संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं से निवेदन है कि भारत सरकार और अन्य राज्य-सरकारों को अपने अपने उद्देश्य के प्रति ऐसी ही पूरी ईमानदारी बरतने के लिए सजग करें। कर्नाटक सरकार जैसी ही कारगर और प्रभावी व्यवस्था सर्वत्र होगी तभी भारत की, भारतीयता की और भारतीय वाणी की रक्षा हो सकेगी, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नहीं तो जनता को दिखाने के लिए संसद के संकल्प पारित होंगे, विभाग बनेंगे, नियम-अधिनियम बनेंगे, किन्तु उद्देश्य के प्रति ईमानदारी के अभाव में कार्यान्वयन के नाम पर प्रगति शून्य ही रहेगी। भाषायी स्वतंत्रता हेतु सभी संगठित रूप में निरन्तर प्रयत्न करते रहें तो स्वतंत्रता के इस स्वर्ण-जयंती वर्ष का मनाया जाना सार्थक हो सकेगा। इस विषय में समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं आदि में सूचनाएं और लेख तथा अग्र-लेख प्रकाशित करना-कराना भी आवश्यक है।

संयोजक, राजभाषा कार्य, केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, एक्स. वाई. 68, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110023

संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक इतिहास (9)

शास्त्रीय साहित्य

—डॉ॰ शशि तिवारी

भारतवर्ष में काव्य, धर्म और दर्शन परक ग्रन्थों के अतिरिक्त शास्त्रीय ग्रन्थों की रचना भी अति प्राचीन काल से प्रारम्भ हो गई थी। वैदिक साहित्य में बिखरे विभिन्न विचारों से ही व्याकरण, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि शास्त्र विकसित हुए। संस्कृत में लिखा गया शास्त्रीय साहित्य अत्यंत विशाल है । वैदिक वाङ्मय में ही वेदांग साहित्य के अन्तर्गत शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त—इसीप्रकार के शास्त्र-ग्रंथ हैं, जो मंत्रों के शुद्ध उच्चारण और अर्थ का ज्ञान कराने के लिए रचे गये थे। अथर्ववेद में चिकित्सा और विज्ञान-विषयक प्रभूत सामग्री है। वेदिका और यज्ञशाला नवनिर्माण के विवरण वेदाङ्ग के अन्तर्गत प्राप्त होने वाले शुल्व सूत्रों में मिलते हैं। जिनसे गणित और वास्तुकला का विकास हुआ। उत्तर काल में विभिन्न विषयों पर अलग-अलग ग्रन्थों की रचना हुई। विषयों पर ग्रन्थों की संख्या बढ़ती गयी। संस्कृत साहित्य के सम्पूर्ण परिचय के लिए इस शास्त्रीय साहित्य का परिचय अति आवश्यक है। काव्य शास्त्र और दर्शन शास्त्र के अतिरिक्त प्राप्त अन्य शास्त्रों के प्रमुख ग्रन्थों का संक्षित उल्लेख यहां किया जा रहा है।

(1) आयुर्वेद

आयुर्वेद का उद्देश्य है—स्वास्थ्य की रक्षा और रोगों का निवारण। इसे चिकित्सा शास्त्र भी कहते हैं। आयुर्वेद की गणना चार उपवेदों में होती है। प्रायः इसे ऋग्वेद का उपवेद माना जाता है। कुछ विद्वान् इसे अथर्ववेद का उपवेद बताते हैं। अथर्ववेद और कुछ दूसरे वैदिक ग्रन्थों में आयुर्वेद के तत्व मिलते हैं। बौद्ध ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि राजगृह में जीवक नामक बहुत बड़ा वैद्य रहता था।

भारतीय परम्परा के अनुसार आयुर्वेद का प्रवर्तन सर्वप्रथम ब्रह्मा ने किया था। ब्रह्मा से प्रजापति, प्रजापति से अश्विनी देवता और अश्विनी से इन्द्र को यह विद्या प्राप्त हुई थी। इन्द्र ने इस विद्या को लोक में प्रवर्तित किया। लोक में इसकी तीन परम्पराएं हुईं—भारद्वाज, धन्वन्तरि और काश्यप। आयुर्वेद के ग्रन्थ तीन प्रकार के हैं:—1. संहिता ग्रन्थ, 2. व्याख्याएं और 3. विशिष्ट विषयों के ग्रन्थ। सबसे पहले संहिता ग्रन्थ लिखे गए। जिनमें चरक की **चरक संहिता,** भेल की **भेल संहिता,** सुश्रुत की **सुश्रुत संहिता** आदि महत्वपूर्ण हैं। चरक संहिता में चिकित्सा के सभी विषयों का प्रतिपादन है। सुश्रुत संहिता में शल्य क्रिया पर जोर दिया गया है। इसमें शल्य क्रिया के उपकरणों का भी परिचय दिया गया है। दोनों ग्रन्थ सातवीं-आठवीं शताब्दी में अरबी भाषा में रूपान्तरित हो चुके थे। इन पर व्याख्याएं लिखने वाले मुख्य टीकाकार हैं—भट्टार, हरिचन्द्र, जेज्जट, स्वामीकुमार और चक्रपाणि। इसके अनन्तर विशिष्ट विषयों पर ग्रन्थों की रचना प्रारम्भ हुई। वाग्भट्ट ने दो चिकित्सा ग्रन्थ लिखे—**अष्टांग संग्रह** और **अष्टांगहृदय संहिता**। शार्ङ्गधर रचित **शार्ङ्गधर पद्धति**, माधव का **माधवनिदान**, भावमिश्र रचित **भावप्रकाश**, वृन्द का **सिद्धयोग** आदि इसी कोटि के ग्रन्थ हैं। आयुर्वेद की औषधियों के गुण-दोषों का वर्णन करने के लिए निघण्टु-ग्रन्थों की रचना हुई जैसे—**धन्वन्तरिनिघण्टु, मदनपालनिघण्टु, शब्दप्रदीप, राजनिघण्टु** आदि।

(2) रसायनतन्त्र

दीर्घायु जीवन की विधियां बताने वाला आयुर्वेद का एक अंग रसायनतन्त्र के नाम से जाना जाता है। इतिहास में ऐसे ऋषियों-मुनियों का पर्याप्त उल्लेख मिलता है जिन्होंने रसायन विद्या से आयु बढ़ाई। रसायन शास्त्र में रस का अर्थ है—पारद। प्रचीन रसायन ज्ञाताओं ने पारद को बहुत महत्व दिया है और उसे दिव्य देह और जीवन्मुक्ति का साधन बताया है। पारद खनिज द्रव्य है। इसीलिए रसायन शास्त्र के अन्तर्गत सभी खनिज सम्मिलित कर लिए गए। रसायन शास्त्र का प्रारम्भ वैदिक युग से हो गया था, परन्तु इसका वास्तविक इतिहास **नागार्जुन** से प्रारम्भ होता है, जो तीसरी-चौथी शताब्दी ई. के बौद्ध विद्वान थे। ये रसायनशास्त्र की आचार्य परम्परा के प्रमुख हैं। इनके रसायन संबंधी ग्रन्थ हैं:—**लौह शास्त्र, रस रत्नाकर, योगसार, रतिशास्त्र,** सिद्धनागार्जुन, आरोग्यमंजरी आदि। इनमें अधिकांश ग्रन्थ अप्रकाशित हैं। रसाचार्यों में 'व्याडि' का नाम प्रसिद्ध है, जिनका उल्लेख वाग्भट्ट के **रसरत्न समुच्चय** नामक उपयोगी और महत्वपूर्ण रसायनशास्त्र में हुआ है। नित्यनाथ का **रसरत्नाकर,** गोविन्दाचार्य का रससार, गोविन्द भागवतपाद का **रसहृदयतंत्र,** सोमदेव का **रसेन्द्रचूडामणि** आदि रसायनशास्त्र के विस्तृत वाङ्मय में से कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों के नाम हैं।

(3) ज्योतिष, गणित, फलित ज्योतिष

वैदिक वाङ्मय में 'ज्योतिष' नामक वेदाङ्ग साहित्य है, परन्तु ज्योतिष का वैज्ञानिक विकास उत्तरकालीन ग्रन्थों में देखा जा सकता है। नक्षत्रों की गणना, ग्रहों का विचार, काल-गणना आदि के क्षेत्र में भारतीय ज्योतिषियों

की अद्भुत क्षमता थी। ज्योतिष के सिद्धांतों के संबंध में संस्कृत में अनेक ग्रन्थ लिखे गए।

भारतीय ज्योतिष के ग्रन्थ-लेखन का इतिहास **आर्यभट्ट** से प्रारम्भ होता है। आर्यभट्ट का जन्म 476 ई. में हुआ था। इन्होंने **आर्यभट्टीय** नामक ग्रन्थ लिखा था। उन्होंने पृथिवी का अपनी धुरी पर घूमना सिद्ध किया था। उनके ग्रहण विषयक सिद्धांत आज भी मान्य हैं। आर्यभट्टीय पर भास्कर, सूर्यदेव, परमेश्वर और नीलकण्ठ रचित चार प्राचीन टीकाएं हैं।

ज्योतिष-शास्त्र के विकास में पूर्व मध्यकाल बहुत ही महत्वपूर्ण है। सिद्धान्त, संहिता और होरा जैसे ज्योतिष के विभिन्न भेदों का निर्माण और अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित विषयक आश्चर्यकारी सिद्धांतों का विकास इसी समय हुआ। फलित-ज्योतिष इस युग की प्रमुख देन है। आचार्य **वराहमिहिर** इस युग के प्रथम कोटि के विद्वान हैं। इनका समय छठी शताब्दी का आरम्भ है। ये यशस्वी सम्राट् विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से एक रत्न कहे जाते हैं। **बृहज्जातक** वराहमिहिर के फलित ज्योतिष के अद्भुत ज्ञान का प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं। ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों पर इनका पञ्चसिद्धांतिका नामक ग्रन्थ है। दो और प्रसिद्ध ग्रन्थों के रचयिता भी वराहमिहिर ही हैं। सातवीं शताब्दी के ब्रह्मगुप्त ने **ब्रह्मस्फुट सिद्धांत** की रचना की थी। बारहवीं शताब्दी के भास्कराचार्य ने **सिद्धांतशिरोमणि** नामक सिद्धान्त ग्रन्थ के अतिरिक्त, **लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित** तथा गोल नामक गणितग्रन्थ लिखे। गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त तथा श्रीधर का भी महान योगदान है। वराहमिहिर की **बृहत्संहिता** और कालिदास के **ज्योतिर्विदाभरणामक** ग्रन्थों में फलित ज्योतिष का विवेचन हुआ है। स्वप्न विज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र, शकुन विद्या और भविष्य फल आदि विषयों पर भी कुछ ग्रन्थ लिखे गये। ज्योतिष ग्रन्थों में गणित शास्त्र का समावेश हुआ और कुछ गणित विषयक ग्रन्थ स्वतंत्र रूप से भी लिखे गए। मुहूर्तों को बताने के लिए अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। ज्योतिष और गणित विषयक विविध शास्त्रों की रचना जो अति प्राचीन काल से प्रारम्भ हुई और आधुनिक समय तक हो रही है।

(4) छन्दः शास्त्र

छन्दः शास्त्र का प्रारम्भिक स्वरूप ऋग्वेद में देखा जा सकता है। ऋग्वेद के मन्त्र छन्दोबद्ध हैं। वेदाङ्गों में 'छन्दस्' भी एक हैं। छन्दोविचिति, छन्दोनुशासन, छन्दोमान् आदि नाम भी छन्दःशास्त्र को दिए जाते हैं। वैदिक छन्द और लौकिक छन्द—छन्दों के दो भेद हैं। लौकिक छन्द का पहला प्रयोग वाल्मीकि द्वारा रामायण में किया गया, इसीलिए रामायण आदि काव्य और वाल्मीकि आदि कवि कहलाए।

इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ **पिंगलाचार्य** का **'छन्दःसूत्र'** या **'पिंगलासूत्र'** है। इसमें दोनों प्रकार के छन्दों के नियम सूत्ररूप में दिए गए हैं। अग्नि पुराण और भरतनाट्यशास्त्र में छन्दों का निरूपण हुआ है। जयकीर्ति का **छन्दोअनुशासन,** केदारभट्ट का **वृत्तरत्नाकर,** क्षेमेन्द्र का **सुवृत्ततिलक,** हेमचन्द्र का **छन्दोअनुशासन,** दामोदर मिश्र का **वाणीभूषण** आदि छन्दों पर लिखे गए अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों में से कुछ सुपरिचित ग्रन्थ हैं।

(5) शब्दकोश-विज्ञान

संस्कृत में कोश रचना का कार्य भी अति प्राचीन काल से प्रारम्भ हो गया था। वेदाङ्ग साहित्य के अनतर्गत 'निरुत' वैदिक शब्दों के कोशग्रन्थ निघण्टु' की व्याख्या ही है। निघण्टु में एकार्थक शब्दों का संकलन किया गया।

संस्कृत में भी अनेक कोशग्रन्थ बनते रहे हैं, जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं—**नामालिङ्गानुशासन**। इसके प्रणेता अमरसिंह के नाम के आधार पर इसे **अमरकोष** भी कहते हैं। इसमें वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण करके पर्यायवाची शब्दों को श्लोकबद्ध किया गया है। इस पर प्रसिद्ध और प्राचीन 43 टीकाएं हैं। इसका समय तीसरी शताब्दी ई. माना जाता है। बाद में प्रणीत कोश ग्रन्थों में शाश्वत का **अनेकार्थ-समुच्चय,** इलायुध की **अभिधानमाला,** यादव प्रकाश की **वैजयन्ती,** महेश्वर का **विश्वप्रकाश,** मेदिनीकर का मेदिनीकोष, हेमचन्द का **अभिधानचिन्तामणि,** आदि मुख्य हैं। आधुनिक युग में कई खण्डों में वर्णमाला क्रम से संस्कृत शब्दों के दो बृहत् कोश तैयार किए गए:—तारानाथ तर्कवाचस्पति का **वाचस्पत्य** और राधाकान्तदेव का **शब्दकल्पद्रुम**। संस्कृत-इंगलिश कोषों में आप्टे, मोनियर विलियम्स, बाथ और बाथलिंक के कोश महत्वपूर्ण हैं। तरह-तरह के कोशों का निर्माण आज भी उन्नति पर है।

(6) व्याकरण

वेदाङ्ग साहित्य के अन्तर्गत 'व्याकरण' नामक वेदांग को वेद पुरुष का मुख कहा गया है। इसके पांच प्रयोजन हैं—रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह। वैदिक काल में शाकटायन, शौनक, शाकल्य,स्फोटायन आदि कई व्याकरण-शास्त्री हुए, किन्तु व्याकरण का आज सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रन्थ, जिसे संस्कृत व्याकरण के इतिहास का केन्द्र-बिन्दु माना जाता है, पाणिनि की **अष्टाध्यायी** ही है। पाणिनि से संस्कृत व्याकरण का उत्कर्ष प्रारम्भ होता है। विद्वानों ने प्रायः इनका समय आठवीं से छठी शताब्दी ई.पू. के बीच रखा है। आठ अध्यायों में पाणिनि ने संस्कृत और वैदिक भाषा के नियमों के संबंध में प्रायः 4000 सूत्र लिखे हैं। पाणिनि के सूत्र अत्यन्त संक्षिप्त हैं। पाणिनि के नाम से **पाणिनीय शिक्षा** नामक शिक्षा ग्रन्थ भी प्रसिद्ध है। जब पाणिनीय व्याकरण लोकप्रिय होने लगा—तब **कात्यायन** ने उसको नियमबद्ध करने के लिए अष्टाध्यायी के सूत्रों पर **वार्तिक** लिखे। ये वार्तिक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में न होकर पतञ्जलि के महाभाष्य में सूत्रों के व्याख्यान में यथास्थान सुरक्षित हैं। इनकी संख्या 1245 है। कात्यायन का समय भी विवादास्पद है, इनको चौथी-पांचवीं शताब्दी ई.पू. का माना जा सकता है। इसके बाद ई.पू. दूसरी शताब्दी में पतञ्जलि हुए, जिन्होंने पाणिनि के सूत्रों और कात्यायन के वार्तिकों-दोनों पर संयुक्त रूप से **महाकाव्य** नामक आलोचनात्मक बृहत् ग्रन्थ लिख कर संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की।

अष्टाध्यायी और महाभाष्य पर अनेक टीकाएं और व्याख्याएं लिखी गयी, जिनमें जयादित्य की **काशिकावृत्ति** प्रसिद्ध हैं। कुछ समय बाद पाणिनीय सूत्रों पर प्रक्रिया ग्रन्थ लिखे गए जिनमें रामचन्द्राचार्य का **प्रक्रिया कौमुदी** भट्टोजिदीक्षित की **सिद्धांतकौमुदी,** वरदराज की **लघुसिद्धांत कौमुदी,** नारायणभट्ट का **प्रक्रियासर्वस्व** आदि उल्लेखनीय हैं। भर्तृहरि का **वाक्यपदीय,** कोण्डभट्ट का **वैयाकरणभूषण** और नागेशभट्ट की **वैयाकरण सिद्धांतलघुमञ्जूषा** आदि कुछ व्याकरण विषयक दार्शनिक ग्रन्थ हैं। जिनमें भाषा के दर्शन की मीमांसा है।

पाणिनीय से इतर व्याकरणों में **कातन्त्र, चान्द्र, जैनेन्द्र, शाकटायन, भोज, सिद्ध हेम, सारस्वत, सुपद्य, मुग्धबोध** आदि का प्रचलन अलग-अलग भारतीय क्षेत्रों में प्राप्त होता है।

(7) कामशास्त्र

कामशास्त्र पर लिखे गए अनेक ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रचलित हैं—वात्स्यायन का कामसूत्र। इसका समय तीसरी शताब्दी ई. माना जाता है। इसमें गद्य-पद्य का मिश्रण है। इसमें सात खण्ड हैं—जिनमें प्रेम, विवाह, नायिका, वेश्या, प्रणय की सफलता के उपाय आदि विषयों का विवेचन है। तेरहवीं शताब्दी में यशोधर ने इस पर **जयमाला** टीका लिखी। इसमें 64 कलाओं की विस्तृत व्याख्या है। दामोदर गुप्त का **कुट्टनीमत**, कोक्कक पण्डित का **रति रहस्य,** अनन्त का **कामसमूह**, प्रौढ़देवराय का **रतिरत्नप्रदीपिका** आदि कुछ दूसरे कामशास्त्र के ग्रन्थ हैं।

(8) संगीतशास्त्र

संगीतशास्त्र का विकास वैदिक काल से देखा जाता है। सामवेद के मन्त्रों में गीतितत्व प्रधान है। महादेव शिव और फिर नारद को संगीत का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। नृत्य, गीति और वाद्य—संगीत के तीन अंग हैं। वेदों में स्वर विधान संबंधी सामग्री से तत्कालीन समृद्ध संगीत का ज्ञान होता है। वैदिक संगीत प्रस्त्वा, हुंकार, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधान और प्रणाव—इन सात भागों में विभक्त है। उस युग में वाद्यों में वीणा, वेणु दुन्दुभि का नाम प्रमुख है। वैदिक काल में गायन-वादन के साथ नृत्यकला का भी प्रचलन था। पौराणिक युग में संगीत संबंधी दृष्टिकोणों में विकास हुआ—अनेक राग-रागनियों, वाद्य-यन्त्रों और नृत्य संबंधी रीतियों के विवरण पुराणों में उपलब्ध होते हैं। रामायण और महाभारत में ये कलाएं और विकसित रूप में दिखाई देती हैं—अब संगीत लोकरुचि का विषय बन चुका है। महाभारत में श्रीकृष्ण संगीत के अपूर्व पण्डित हैं, तो रामायण में रावण संगीत-विशारद है। गुप्तकाल शास्त्रीय संगीत का उन्नतिशील युग है। समुद्रगुप्त की संगीत-प्रियता इतिहास-प्रसिद्ध है। भक्ति के साथ संगीत का अटूट संबंध इसके विकास में सहायक रहा। संगीत शास्त्र का प्रणयन समय-समय पर होता रहा।

सर्वप्रथम भरत ने संगीतशास्त्र को लिपिबद्ध किया था। उन्होंने अपने **नाट्यशास्त्र** में गीत, नृत्य और वाद्य सभी का विवेचन किया। नारद के नाम से अनेक रचनाएं मिलती हैं—**नारद शिक्षा, रागनिरूपण, पंचमसार संहिता, संगीत मकरन्द** आदि। अज्ञातनामा लेखक की रचना **मृदङ्गलक्षण** में मृदङ्ग की उत्पत्ति की कथा है।

प्राचीन संगीत शास्त्रियों में शार्ङ्गदेव का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है, उन्होंने संगीत पर **संगीत रत्नाकर** नामक ग्रन्थ की रचना की। जगदेवमल्ल का **संगीत चूडामणि**, सोमेश्वर का **मानसोल्लास**, काकादित्य गणपति का **नृत्तरत्नावली**, पार्श्वदेव का **संगीतसमयसार**, हम्मीरराजा का **संगीतश्रृंगारहार**, सुधाकलश का **संगीतोपनिषद**, राजाकुम्भा का **संगीतराज** आदि संगीतशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थों में उल्लेखनीय हैं। संस्कृत में संगीतग्रन्थों की परम्परा विशाल है। संगीतविषयक ग्रन्थों के निर्माण की परम्परा में पहले राजाओं, राजवंशों और फिर दाक्षिणात्य विद्वानों का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

(9) धर्मशास्त्र

धर्मशास्त्र से सम्बद्ध ग्रन्थों के लेखन का इतिहास वैदिक युग से ही प्रारम्भ हो जाता है। संहिता, ब्राह्मण और आरण्यक, उपनिषद ग्रन्थों में धर्म के नियम आदि हैं। कल्पसूत्र धर्मशास्त्र के प्रारम्भिक ग्रन्थ हैं, जिसके अन्तर्गत धर्मसूत्र नामक ग्रन्थ आते हैं। रामायण, महाभारत और पुराणों के कई अंश धर्मानुशासन में व्यवस्थित हैं। इस अर्थ में इन ग्रन्थों का धर्मकोशीय स्वरूप ग्रहण किया जा सकता है।

धर्मशास्त्रीय साहित्य के अन्तर्गत धर्मसूत्रों के अनन्तर स्मृतियां तथा संग्रह-ग्रन्थ आते हैं। उत्तरकाल में लिखे संग्रह ग्रन्थों में सम्पूर्ण धार्मिक व्यवस्था दी गई है। स्मृतियाँ अनेक हैं। अठारह पुराणों की तरह प्रमुख स्मृतियों की संख्या भी अठारह मानी जाती हैं। इन अठारह स्मृतियों के निर्माता हैं—मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशनस्, अंगिरा, यम, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, नारद, भृगु और अंगिरा। इन स्मृतिकारों के स्मृतिग्रन्थ आज अपने मूलरूप में उपलब्ध नहीं हैं। **मानव धर्मशास्त्र** इस विषय का सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ था। इस ग्रन्थ के कुछ अंश प्राचीनतम ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। वर्तमान प्राप्त मनुस्मृति सम्भवतः इस धर्मशास्त्र पर आधारित रचना हो—यद्यपि इस विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है।

स्मृतिग्रन्थों में सर्वाधिक प्रामाणिक **मनुस्मृति** है। इसका समय ई.पू. चतुर्थ शताब्दी के आसपास का रहा होगा। वर्तमान मनुस्मृति में बारह अध्याय और 2694 श्लोक हैं। इसमें सृष्टि से आरम्भ करके मानव-समाज के विकास तथा लोकजीवन से सम्बद्ध सभी पक्षों पर विचार हुआ है। इस स्मृति पर मेधातिथि गोविन्दराज और कुल्लूक भट्ट की प्रामाणिक टीकाएं हैं। याज्ञवल्क्य रचित **याज्ञवल्क्य स्मृति** मनु के बहुत बाद की है और तीन भागों में विभक्त है—आचार, व्यवहार और प्रायश्चित। इसपर लिखी टीकाओं में **मिताक्षरा** व्याख्या सुप्रसिद्ध है। पराशर मुनि की **पराशर स्मृति**, नारद के नाम से जानी जाने वाली **नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति, विष्णु स्मृति** आदि दूसरी प्रसिद्ध स्मृतियां हैं। कुछ दूसरे प्रकार के धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में बंगाल के लक्ष्मीधर का **कल्पतरू**, जीमूत वाहन का **व्यवहार मातृका** तथा **दायभाग**, देवण्ण भट्ट की **स्मृतिचन्द्रिका**, हेमाद्रि का **चतुर्वर्णचूड़ामणि**, मित्रमिश्र का **वीरमित्रोदय** आदि सुपरिचित ग्रन्थ हैं। धर्मशास्त्र-विषयक निबन्धग्रन्थों की रचना-परम्परा विशाल है। काशीनाथ उपाध्याय का **धर्मसिन्धुसार** दक्षिण भारत में बहुत प्रामाणिक माना जाता है।

(10) अर्थशास्त्र

चार पुरुषार्थों में 'अर्थ' का दूसरा स्थान है। अर्थशास्त्र विषयक ग्रन्थों का विषय मुख्यतया राजनीति और दण्डनीति हैं। महाभारत के अनुसार ब्रह्मा ने इस विषय पर एक लाख विभागों के ग्रन्थ की रचना की थी। महाभारत में ही अर्थशास्त्र का विस्तृत उपदेश है। कामसूत्र के अनुसार अर्थशास्त्र के मूल प्रणेता बृहस्पति हैं। भास ने ब्राह्मणों के अध्ययन के विषयों के अन्तर्गत **बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र** का उल्लेख किया है। स्मृतिग्रन्थों और धर्मशास्त्रों में भी अर्थशास्त्रीय सामग्री मिलती है।

अर्थशास्त्र विषय पर प्राचीनतम महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य का **अर्थशास्त्र** है। भारतीय परम्परा के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के मन्त्री चाणक्य इस

रचनाकार हैं। कुछ विद्वान ग्रन्थ-रचयिता की इस परम्परा को अस्वीकार करते हैं क्योंकि उनके मत में इस ग्रन्थ की रचना 300 ई. में हुई है। अधिक प्रचलित धारणा के आधार पर मौर्य साम्राज्य के प्रतिष्ठापक और चन्द्रगुप्त मौर्य के मन्त्री **कौटिल्य** ही इसके प्रणेता हैं जिनका समय चतुर्थ शताब्दी ई.पू. है। सम्पूर्ण अर्थशास्त्र सूत्रात्मक हैं। कहीं-कहीं श्लोकों में सूत्रों की बातें दोहरायी गयी हैं। यह 15 अधिकरणों में विभक्त हैं। राजा की शिक्षा, मन्त्रियों की नियुक्ति, गुप्तचरों की नियुक्ति, अधीक्षकों के कर्त्तव्य, राजांग, मूल्यवृद्धि आदि अनेक राजनीतिक विषयों पर इसमें चर्चा है। अर्थशास्त्र इस सिद्धान्त को मानता है कि लक्ष्य को पाने के लिए साधनों का अच्छा-बुरा होना महत्त्वपूर्ण नहीं है। कौटिल्य ने वेद, वेदांग, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष आदि विधाओं को और उनके आचार्यों के मतों को यथास्थान उद्धृत किया है। अर्थशास्त्र की दो प्राचीन व्याख्याएं प्रसिद्ध हैं—भट्टस्वामी की **प्रतिपदपंचिका** और माधवयज्वा की **नयचन्द्रिका**।

700 ई. के लगभग कामन्दक ने कौटिल्य अर्थशास्त्र के आधार पर **कामन्दीय नीतिसार** नामक 20 सर्गों में विभक्त काव्यरूप एक अर्थशास्त्र लिखा था। सोमदेव सूरि का **नीतिवाक्यामृत**, हेमचन्द्र का **लघु अर्थनीति**, भोज का **युक्तिकल्पतरु**, शुक्र का **शुक्रनीति** आदि कुछ दूसरे सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्र हैं जिनको **नीतिशास्त्र** के व्यावहारिक पक्ष की व्याख्या करने वाले ग्रन्थों के अन्तर्गत भी गिना जा सकता है।

(11) अन्य शास्त्र-ग्रन्थ

संस्कृत के शास्त्रीय वाङ्मय के अन्तर्गत कुछ ऐसी विधाएं भी आती हैं, जो व्यावहारिक, वैज्ञानिक और अपेक्षाकृत अप्रधान हैं और जिन पर कम लिखा गया है।

(क) धनुर्वेद

छोटे शास्त्रों में **धनुर्वेद** का स्थान आता है। यह रणप्रिय जाति में आदरास्पद एक प्राचीन विद्या थी, जिसे उपवेद भी माना गया है। इस युद्ध विज्ञान पर विक्रमादित्य, सदाशिव, शार्ङ्गदत्त आदि विद्वानों ने ग्रन्थों की रचना की थी। इस विषय में **कोदण्डमण्डन** का एक ग्रन्थ मिलता है।

(ख) शिल्प शास्त्र

शिल्प, शिल्पि या **वास्तुशास्त्र** पर कुछ ग्रन्थ लिखे गए। इनमें **मयमत, मानसार, सनत्कुमारवास्तुशास्त्र, वास्तुमण्डन, प्रासादमण्डन, मनुष्यालय चन्द्रिका, शिल्परत्न** आदि ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। मानसार में मूर्तिकला का वर्णन है। समरांगणसूत्रधार, वास्तुप्रदीप, वास्तुरत्नावली आदि स्थापत्य से सम्बद्ध मूल्यवान ग्रन्थ हैं। भरद्वाज के **यन्त्रसर्वस्व** के एक प्रकरण में विमानों के निर्माण और संचालन का वर्णन **विमानशास्त्र** के समान किया गया है। अनेक तन्त्रग्रन्थों, पुराणों और अग्नि पुराण में स्थापत्य से सम्बन्धित सामग्री है।

(ग) पशु-पक्षी-विज्ञान

पशुओं पर विचार करने वाले ग्रन्थों में गजशास्त्र और अश्वशास्त्र का विशेष महत्त्व रहा। अंग राजा रोमपाद और प्राचीन मुनि पालकाप्य के संवाद के रूप में **हस्त्यायुर्वेद** सुरक्षित है। नारायण की छन्दों में लिखी **मातंगलीला** में हाथियों को पकड़ने, सिखाने, चिकित्सा करने आदि का विवरण है। अग्निपुराण में गज और अश्व के रोग और चिकित्सा का उल्लेख हुआ है। विषैले जन्तुओं की चिकित्सा आयुर्वेद के ग्रन्थों का विषय भी है।

अश्वों के रोग और चिकित्सा अश्वशास्त्र का विषय हैं। शालिहोत्र का **अश्वशास्त्र** अश्वविज्ञान का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस विषय पर गण का **अश्वायुर्वेद**, जयदत्त का **अश्ववैद्यक**, दीपंकर का **अश्ववैद्यक**, वर्धमान का **योगमंजरी**, नकुल का **अश्वचिकित्सा** प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। भोज ने भी एक **शालिहोत्र** नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

पक्षियों पर प्रणीत वैज्ञानिक ग्रन्थों में **श्यैलिकशास्त्र** और **कर्णोदय** नामक ग्रन्थ पक्षिविज्ञान के स्वरूप को उपन्यस्त करते हैं।

(घ) रत्नशास्त्र

रत्नों के महत्व के कारण रत्नशास्त्र या रत्नविज्ञान पर चिन्तन और लेखन हुआ। वराहमिहिर ने **वृहत्संहिता** में रत्नपरीक्षा के विज्ञान को निरूपित किया है। उत्तरकाल में प्रणीत स्वतन्त्र रत्नशास्त्रों में **अगस्तिमत**, बुद्ध भट्ट का **रत्न परीक्षा**, नारायण पण्डित का **नवरत्नपरीक्षा** और कुछ छोटे ग्रन्थ हैं।

(ङ) चौर्यशास्त्र

चोरी की कला ने भी शास्त्र का रूप धारण किया था—मृच्छकटिक में शूद्रक ने इसका कुछ संकेत किया है। एक उपलब्ध ग्रन्थ **षण्मुखकल्प** है, जो चौर्यकला का विवेचन प्रस्तुत करता है।

(च) पाक शास्त्र

भोजन पकाने की कला पर **नलपाक** नामक एक पाकशास्त्रीय ग्रन्थ लिखा गया था।

(छ) चित्रकला

चित्रकला पर कोई भी प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है; परन्तु **विष्णुधर्मोत्तर-पुराण** में इस विषय पर एक अध्याय दिया गया है।

स्पष्ट है कि भारतीय मनीषा द्वारा ज्ञान, विज्ञान और व्यवहार का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। लौकिक विषयों के लगभग सभी पक्षों पर प्राचीन विद्वानों ने चिंतन किया और ग्रन्थों के प्रणयन द्वारा अपने ज्ञान एवं अनुभव को प्रस्तुत भी किया। अनेक ग्रन्थ कालकवलित भी हुए होंगे। फिर भी जो उपलब्ध हैं, वे सिद्ध करते हैं कि संस्कृत का शास्त्रीय वाङ्मय सभी दृष्टियों से व्यापक और समृद्ध हैं।

पुरानी यादें और नए परिप्रेक्ष्य

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह हिंदी के प्रबल समर्थक

—डॉ॰ परमानन्द पांचाल

ज्ञानी जैलसिंह हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक थे। हिन्दी के प्रयोग के वे इसलिए भी पक्षधर थे क्योंकि भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। संविधान के संरक्षक होने के नाते वे संविधान में प्रदत्त राजभाषा हिन्दी के भी प्रबल पोषक थे। यही नहीं, राष्ट्रपति पद से मुक्त होने के पश्चात् भी वे हिन्दी की सेवा में आजीवन समर्पित थे। राष्ट्रपति के विशेष कार्याधिकारी होने के नाते मुझे उनके साथ काम करने और उन्हें निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैंने उनके दिल में हिन्दी के प्रति जो प्यार देखा उसे मैं व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य मानता हूं। एक बार उन्होंने कहा था कि

> "जो देश अपनी मां और अपनी मातृभाषा का आदर नहीं कर सकता दुनिया में कोई उसकी इज्जत नहीं करेगा। अपनी मां दूसरे की मां से कितनी भी कम सुन्दर और कम समझदार हो, फिर भी वह अपनी मां है। दूसरे की मां अपनी मां के समान नहीं हो सकती। इसलिए बच्चों को अपनी मां का आदर बढ़ाना चाहिए।"

ये वे शब्द थे जो भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने बड़े भावुक स्वर में 33वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार वितरण समारोह में 12 जून, 1986 को विज्ञान भवन में कहे थे।

पुरस्कार समारोह की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होने पर चुटकी लेते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा "गाडगिल साहब की मातृभाषा मराठी है। महफिलों में अच्छी खासी हिन्दी बोलते हैं, तो यह जो सारे समारोह में अंग्रेजी बोली गई, तो क्या दर्शकगण विदेशों से आए हैं? जिन फिल्मों को पुरस्कार दिया जा रहा है, वे प्राय: सभी हिन्दी की हैं। अंग्रेजी की एक प्रतिशत भी नहीं है और विदेशियों को छोड़कर यहां बैठे सभी हिन्दी जानते हैं। पता नहीं राष्ट्रीय समारोह का संचालन हमेशा अंग्रेजी में ही क्यों आवश्यक समझा जाता है?"

ज्ञानी जैल सिंह हिन्दी भाषा के सम्मान को बढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। चाहे देश हो या विदेश, वे प्राय: सदा ही अपना भाषण हिन्दी में देते थे। देश के कोने-कोने में जहां वे जाते थे हिन्दी में बोलना ही पसन्द करते थे। उनका दृढ़ मत था कि संविधान में हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया है, इसलिए हमें हिन्दी को अधिक से अधिक बढ़ावा देना चाहिए। राष्ट्रभाषा का सम्मान संविधान का सम्मान है। उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, जिसके वे प्रकाण्ड पंडित अर्थात् ज्ञानी थे। उर्दू भाषा पर उनकी जबरदस्त पकड़ थी। शायद ही कोई ऐसा समारोह हो जिसमें वे उर्दू में कोई न कोई शेर न बोलते हों। अंग्रेजी अच्छी तरह समझते और पढ़ते थे। स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय महत्व के अवसरों पर राष्ट्र के नाम अपना संदेश वे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में स्वयं देते थे। फिर भी, उन्हें हिन्दी से अगाध प्रेम रहा। इसे वे राष्ट्रीय एकता का सूत्र मानते थे।

राष्ट्रपति भवन में स्व॰ आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" के "दिवंगत हिन्दी सेवी" ग्रन्थ का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा था :-

> "हिन्दी ही एकमात्र भाषा है, जो समूचे देश को एक कड़ी में पिरोती है। हिन्दी यदि कमजोर होती है, तो देश कमजोर होता है। अगर हिन्दी मजबूत हुई तो देश की एकता मजबूत होगी।"

उन्होंने आगे कहा "हिन्दी भाषा को कई सौ वर्षों से कमजोर बनाने के प्रयत्न होते रहे, फिर भी वह बिना किसी राजकीय सहयोग के देश के कोने-कोने में बोली और समझी जाती रही। इसको सींचने में हमारे ऋषियों-मुनियों, साधु-सन्तों, पीरों-फकीरों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके विकास में मुसलमानों और ईसाइयों का बहुत अच्छा योगदान रहा है। आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी और पं॰ जवाहर लाल नेहरू आदि नेताओं ने हिन्दी के जरिए जंगे आज़ादी में कमाल का काम किया था।"

1982 में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जब राष्ट्र के इस सर्वोच्च पद पर आसीन हुए तो उन्होंने देखा कि राष्ट्रपति भवन में हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, बंगला, तमिल आदि भारतीय भाषाओं की कोई पत्र-पत्रिकाएं नहीं आती तो उन्होंने तुरन्त इन पत्रिकाओं को राष्ट्रपति भवन में मंगाने के आदेश दिए। अपने एक मित्र को यह मार्मिक घटना सुनाते हुए उन्होंने बताया "जब मैं राष्ट्रपति बनकर यहां आया तो हिन्दी, उर्दू और गुरमुखी का अखबार पढ़ने की इच्छा हुई।

> लेकिन ये अखबार मुझे नहीं मिले। मुझसे यह कहा गया कि राष्ट्रपति भवन में केवल अंग्रेजी के अखबार आते हैं। मुझे बहुत तकलीफ हुई। आजाद भारत में राष्ट्रपति भवन में जब भारतीय भाषाओं का कोई स्थान न हो तो देश की एकता कैसे रह सकती है।"

इसके बाद राष्ट्रपति भवन में हिन्दी के सभी प्रमुख अखबार और पत्र-पत्रिकाएं आने लगे। राष्ट्रपति सचिवालय से जारी होने वाले उनके साप्ताहिक और पाक्षिक कार्यक्रम, व्यवस्थाएं और दैनिक मुलाकातों की सूची भी हिन्दी में निकलने लगी। वे प्राय: उठते ही हिन्दी के सभी प्रमुख समाचार

पत्रों को ध्यान से पढ़ते और उनके सम्पादकीय लेखों को बड़ी रुचि से देखते। हिन्दी के अलावा उर्दू, गुरमुखी, गुजराती और मराठी आदि भारतीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएं भी राष्ट्रपति भवन में आने लगीं।

वे भारतीय भाषाओं के प्रबल पक्षधार थे और अंग्रेजी के बजाय देश में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग पर बल देते थे। उर्दू के संबंध में इनका कहना था कि उर्दू और हिन्दी दोनों का जन्म भारत में हुआ है, दोनों ही भारतीय भाषाएं हैं। जो सारे भारत में समझी जाती हैं। लिपि को छोड़कर दोनों में ज्यादा अन्तर भी नहीं है। ये दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। हमें इन दोनों भाषाओं के विकास के लिए कदम उठाने चाहिए। यह भूल होगी यदि इनमें से किसी एक की भी उपेक्षा हो। उनका कहना था कि किसी भी भाषा को किसी धर्म विशेष के साथ जोड़ना ठीक नहीं है।

उनका कहना था कि विश्वविद्यालयों को, डाक्टर, इन्जीनियर और अन्य तकनीशियन अपनी क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से ही तैयार करने चाहिए न कि अंग्रेजी के। पुणे विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण देते हुए उन्होंने कहा था—

"जब रूस, चीन और जर्मनी तक ऐसे विशेषज्ञ अपनी भाषा में तैयार कर सकते हैं तो फिर हम क्यों नहीं? अन्तरिक्ष में अगर अंग्रेजी बोलने वाले अमरीकी गए हैं तो रूसियों ने भी बिना अंग्रेजी के सहारे यह सफलता हासिल की है। हम भारतीयों का भी हिन्दी के प्रति अपनी कुण्ठा की भावना को त्याग देना चाहिए और हिन्दी माध्यम को खुले आम दिल से अपनाना चाहिए।"

पुणे विश्वविद्यालय में घटी एक रोचक घ्टना का उल्लेख करना भी यहां अप्रासंगिक न होगा। मुझे याद है कि कई राष्ट्रपति महोदय यहां अपना दीक्षान्त भाषण अंग्रेजी में ही देने वाले थे और उसकी प्रतियां भी अंग्रेजी में तैयार की ली गई थी। परन्तु, राष्ट्रभाषा के प्रति उनका स्वाभिमान विद्रोह कर उठा और उन्होंने ऐन मौके पर अपना भाषण पूर्णत: अलिखित रूप में हिन्दी में ही दिया। इस पांडित्य पूर्ण भाषण को सुनकर सभी आवाक रह गए।

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, में 31 मार्च, 1985 के अपने दीक्षांत भाषण में तो उन्होंने अपने दिल को खोलकर रख दिया। अंग्रेजी में सारी कार्यवाही चलते देखकर उन्होंने कहा:

"आज वहां की सारी कार्यवाही अक्षर-अक्षर अंग्रेजी में हो रही है। लेकिन मैंने हिन्दी में अपना भाषण दिया। मैं भी इंगलिश में लिखित भाषण दो-चार दफे दबादब पढ़ देता, तो भी गुजारा हो सकता था। लेकिन मैंने वह नहीं किया और शायद मेरी इस बात के लिए गुस्ताखी नहीं समझेंगे। हमें अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को भी बढ़ावा देना चाहिए और हमारी तो "ओफिशियल लेंगुएज" हिन्दी है, उसको भी सारे भारत में सम्मान मिलना चाहिए। मेरी यह समझ से दूर है कि 37 साल के बाद अब तक हम इंजीनियर नहीं बन सकते इंगलिश के बगैर! हम डाकटर नहीं बन सकते। हम साइन्सदां नहीं बना सकते। दुनिया में जो जर्मनी देश है वहां जर्मन भाषा में हर मजमून के विशेषज्ञ हैं। रूस और चीन इन के अलावा जापान और फ्रांस जैसे छोटे देशों में भी है तो भारत में क्यों नहीं? मैं अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हूं। हमारे संविधान ने हमको 15 साल के लिए कहा था, फिर हमें समय बढ़ाना पड़ा, अभी भी बढ़ायेंगे। समय तो बढ़ाना पड़ेगा, लेकिन ये जो हमारे गुरू और प्रोफेसर यहां बैठे हैं, अध्यापक हैं, कालेजों के प्रिंसिपल हैं और हैड आफ डिपार्टमेंट भी हैं, इनसे मैं यह प्रार्थना करता हूं कि हमें गुलामी की निशानियों से कब निजात दिलाओगे और क्या हमने गुलामी की निशानी को अपने माथे पर दाग न समझते हुए तिलक समझ रखा है? इसको मिटाना होगा।"

"हाईकोर्ट, विश्वविद्यालय और कालेजों में जाकर आप इन गुलामी की निशानियों को देख सकते हैं। उस व्यक्ति में बिलकुल ही हीनता की भावना आ जाती है, जो अंग्रेजी भाषा न बोले।"

रोमन लिपि की विसंगतियों की तरफ भी उन्होंने कई बार संकेत किया था। उनका मानना था कि "रोमन लिपि ने हमारी संस्कृति के शब्दों को बिगाड़ कर रख दिया है। भगवान राम को "रामा" बना दिया, नाम था, उनका "राम जी," महात्मा बुद्ध को "बुद्धा" बना दिया। कृष्ण का "कृष्णा" कर दिया। सभी कार्य बिगाड़ कर रख दिए। जब रिश्ते नातों में आ जाएं तो पता नहीं लगता। इन्ट्रोडक्शन करवाते हैं—"प्लीज मीट माई ब्रदर इन लॉ।" फिर इसकी व्याख्या करनी पड़ती है कि वह मेरी पत्नी का भाई है या मैं उसकी पत्नी का भाई हूं"।

जर्मनी में रहने वाले अपने एक मित्र के संबंध में एक बार उन्होंने बताया था कि जब वह मुझे मिला तो मैंने कहा "जर्मन भाषा बड़ी समृद्ध भाषा है, उसको समृद्ध बनाने में उस कोम की बड़ी हिममत है। बड़ी दिलेरी है। जब भी आप दुनिया की बड़ी सभा में जाओगे तो आप देखेंगे कि चीनी भाषा, जर्मन, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश या अरबी जैसी भाषाओं का अनुवाद करने में एक पूरी मशीनरी इसके लिए लगी हुई है। लेकिन हिन्दी के लिए नहीं। हिन्दोस्तान की आबादी दुनिया की डेमोक्रेसी में सबसे ज्यादा है (आबादी में चीन देश के बाद सबसे ज्यादा) तो हमारी भाषा को क्यों स्थान नहीं मिला? मिलेगा कैसे, जब प्रोफेसर साहब ही नहीं बात करते अपनी भाषा में। इसलिए। हालांकि पंजाबी भाषा, में भी मैं कहता तो कोई बुराइ नहीं थी, क्योंकि पंजाबी भाषा यहां के लोगों की है, पर हिन्दी हमारे देश की राजभाषा होने के नाते, मैंने जानबूझकर इसी भाषा में अपने विचार आपके सामने रखे।"

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की हिन्दी के प्रति आस्था अडिग थी। एक बार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के एक छात्र श्री श्याम रूद्र पाठक इंजीनियरी का कोई शोध पत्र हिन्दी माध्यम से देना चाहते थे, किन्तु संस्थान ने उसे अनुमति नहीं दी। इसे लेकर समाचार पत्रों में बड़ा हंगामा मचा। राष्ट्रपति जी को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने श्री पाठक को अपने पास बुलाया और उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा कि जो काम आप कर रहे हैं वह आदर्श कार्य है। इसके लिए अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

एक बार की घटना है कि राष्ट्रपति जी एक समारोह का उद्घाटन करने गए थे। उसमें तत्कालीन मंत्री, श्री नारायण दत्त तिवारी भी मौजूद थे। वे अपना भाषण अंग्रेजी में दे रहे थे। राष्ट्रपति जी ने मुस्कान भरे स्वर में कहा कि "तिवारी जी मेरे से अच्छी हिन्दी जानते हैं और सुनने वाले भी सब हिन्दी समझते हैं, वे एक बहुत बड़े हिन्दी भाषी राज्य के मुख्य मंत्री रह चुके हैं। फिर क्यों वे अपना भाषण अंग्रेजी में दे रहे हैं? समझ नहीं आता?

उनके इतना कहते ही धारा बदल गई और बाद में सभी वक्ता हिन्दी में ही बोले।''

वे अक्सर हिन्दी की हिमायत लेते देखे जा सकते थे। ऐसी एक घटना तब हुई जब वे ताज-होटल में कुछ उद्यमियों को उनके श्रेष्ठ कार्यों के लिए राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित कर रहे थे। श्री हरिकृष्ण शास्त्री (स्व० लाल बहादुर के पुत्र) ने भी अपना भाषण अंग्रेजी में दिया, तो महामहिम ने पूछा कि क्या मजबूरी है जो आप भी यहां अंग्रेजी में भाषण कर रहे हैं? इसके बाद उस समारोह में धन्यवाद प्रस्ताव अंग्रेजी के स्थान पर केवल हिन्दी में ही हुआ।

एक बार बाल्टेयर विश्वविद्यालय में योग शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन करते हुए, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने क्षेत्रीय भाषाओं को महत्व देते हुए कहा था कि योग शिक्षा के संबंध में आयोजित इस समारोह की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में ही हो रही है। कौन बताए क्या विवशता है? क्यों नहीं तेलुगू या राष्ट्रभाषा हिन्दी में लोग अपने विचार व्यक्त करते? योग का सारा साहित्य मूल रूप से संस्कृत में है। सलिए तेलुगू या संस्कृत ही इसके लिए उचित हैं।

इसी प्रकार मद्रास में ओरिएन्टल इस्लामिक केन्द्र की कुरआन प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा था कि आपने सब कार्यवाही अंग्रेजी में चलाई। उर्दू या तमिल में क्यों नहीं? क्योंकि यहां बैठे सभी लोग तमिल जानते हैं, और बहुत से उर्दू भी जानते हैं। राष्ट्रपति जी यह मानते थे कि ''हिन्दी का विकास प्रादेशिक भाषाओं की कीमत पर नहीं किया जा सकता। परन्तु, अगर अंग्रेजी की कीमत पर हिन्दी आती है तो हर्ज क्या है।'' ये विचार उन्होंने शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार देते समय 5 सितम्बर, 1985 का व्यक्त किए थे।

राष्ट्रपति जी देश के जिस राज्य में जाते थे वहां राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रयोग करना श्रेयस्कर मानते थे। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश अथवा मिजोरम जैसे राज्यों के कुछ क्षेत्रों में जहां सभी लोग हिन्दी नहीं समझ पाते वहां से दुभाषिये की सहायता से उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में ही अपना संदेश पहुंचाने का प्रयास करते थे। यह एक बहुत ही सरल उपाय है जिसे उन्होंने जनसाधारण तक अपनी बात पहुंचाने के लिए अपनाया हुआ था। उनका विचार था कि भारत में केवल 2 प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी जानते हैं। इसलिए वे अंग्रेजी के जरिये जन साधारण तक सीधे अपनी बात नहीं पहुंचा सकते। प्रादेशिक भाषाओं के द्वारा ही ये अपना संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयत्न करते थे।

राष्ट्रपति का पद सम्भालने के बाद विदेशों में भी जहां-जहां वे गए हैं, उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में ही दिया, जिनका हिन्दी से सीधा अनुवाद उन देशों की भाषाओं में कराया गया। इसके लिए अंग्रेजी का सहारा लेने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी। काश कि उनकी इस परम्परा का पालन बाद में होता रहता। मुझे याद है तब वे मैक्सिको, अर्जन्टीना, चैकोस्लोवाकिया, यमन, क्तर, मारिशस, पोलैंड और नेपाल की यात्रा पर गए, तो उन्होंने हिन्दी में ही अपने भाषण दिए। अर्जन्टीना की संसद (नेशनल कांग्रेस) के दोनों सदनों के समक्ष उनका भाषण हिंदी में हुआ, जिसका सीधा अनुवाद स्पेनिश भाषा में किया गया। चैकोस्लावाकिया में हिन्दी के चैक विद्वान डॉ० स्मेक्ल ने उनके भाषण का चैक भाषा में अनुवाद किया। जब प्राह विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्ट्रेट की उपाधि से सम्मानित किया तो उन्होंने वहां भी अपना भाषण हिन्दी में ही दिया। पोलैंड में अपने सम्मान में दिए गए प्रीतिभोज में उनका भाषण हिंदी में हुआ। डॉ० बुस्की ने उसका सीधे पोलिश में अनुवाद किया। वियोग्राड (बेलग्राड) में मार्शल टीटो की कब्र के पास रखी आगंतुक पुस्तिका में उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि हिन्दी में ही लिखी। उनका यह प्रयोग देश और विदेशों में बहुत ही सफल और अनुकरणीय रहा था। उनके भाषण में कहीं भी अंग्रेजी बैसाखी का सहारा नहीं लेना पड़ता था।

उनका मत था कि जब कोई विदेशी मेहमान अपने देश की भाषा का प्रयोग करता है तो हमें उसे अंग्रेजी में उत्तर देने की हिमाक्त नहीं करनी चाहिए। बल्कि उसकी भाषा का सम्मान करना चाहिए और अपनी भाषा में बात करनी चाहिए। आवश्यकता पड़े तो ऐसे दुभाषिए की सहायता लेनी चाहिए जो सीधे दोनों भाषाओं को जानता हो। अंग्रेजी की बैसाखी का सहारा क्यों लिया जाए। आश्चर्य तब होता है जब पाकिस्तान, नैपाल या मारीशस जैसे देशों के साथ व्यपहार करते समय भी अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने अपनी इस परम्परा को उस समय भी नहीं तोड़ा जब महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय इस देश की दूसरी यात्रा पर आई थी। राष्ट्रपति भवन में राजकीय भोज के अवसर पर उनके सम्मान में उन्होंने हिन्दी में ही भाषण दिया। यह पहला अवसर था जबकि भारत के किसी राष्ट्रपति ने उनके सम्मान में हिन्दी में ही भाषण दिया हो। प्रतिवर्ष संसद के दोनों सदनों के समक्ष वे अपना अभिभाषण मूल रूप से हिन्दी में ही देते थे, जिसे अंग्रेजी में उपराष्ट्रपति द्वारा पढ़ा जाता था।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। भारतीय भाषाओं और हिन्दी के इतने हिमायती होने के कारण उनके जन्म दिवस 5 मई को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाने की परम्परा भी चल पड़ी थी। आशा है इसे बनाए रखा जाएगा।

232-ए, मयूर विहार, फेज-1, पाकेट-1, नई दिल्ली

डा॰ अम्बेडकर और उनका हिन्दी प्रेम

—रमेशचंद

डा॰ अम्बेडकर के राजनैतिक पक्ष को तो लगभग सभी जानते हैं किन्तु उनके सभी कार्यों का पूर्ण मूल्यांकन नहीं हो पाता। उनके कई कार्यों से जनता आज भी अनभिज्ञ है। डा॰ अम्बेडकर ने हिन्दी के लिए भी बहुत कार्य किया है। वे हिन्दी के प्रबल पक्षधर रहे और उसके विकास, प्रचार व प्रसार की बात कही। वैसे भी हिन्दी को गैर हिन्दी भाषियों का बहुत योगदान है। डा॰ अम्बेडकर ने लिखा है, ''जनता में एक भाषा के माध्यम से ही एकता आ सकती है। दो भाषाएं जनता को निश्चय ही विभाजित कर देंगी। यह एक अटल नियम है। भाषा के माध्यम से संस्कृति सुरक्षित रहती है। चूंकि भारतीय एक होकर सामान्य संस्कृति को विकास करने के आकांक्षी हैं। अत: सभी भारतवासियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएं।'' इससे सिद्ध होता है कि वे हिन्दी को देश की एकता की कड़ी मानते रहे थे।

उन्होंने अपनी भाषा नीति उस समय ही घोषित कर दी थी जब राष्ट्र भाषा की बात ही आरम्भ हुई थी। 1937 में धारवाड़ (कर्नाटक) की एक सभा में उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकारते हुए अपनी भाषा नीति स्पष्ट कर दी थी। उन्होंने संविधान के प्रारूप को स्वीकारते समय समिति के इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया, कि प्रत्येक राज्य किसी भी भाषा को राजभाषा बनाएं। उनका कहना था कि प्रारम्भ से ही इकाइयों पर हिन्दुस्तानी को ग्रहण करने की वैधानिक अनिवार्यता या बाध्यता होनी चाहिए। उन्होंने यह भी प्रस्ताव किया कि संविधान में इस बात की व्यवस्था हो कि हिन्दी भाषा के विकास के लिए एक राष्ट्रीय अकादमी की स्थापना की जाए।

जब डा॰ अम्बेडकर कानून मन्त्री थे तो हमारे देश के प्रथम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने उनसे कहा था कि सारे भारत को एक संघ न मानकर दो अर्थात् एक उत्तरी राज्यों व दूसरा दक्षिणी राज्यों का संघ बनाया जाए व उनके ऊपर एक परिसंघ। एक संघ बनने से प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति हिन्दी क्षेत्र से ही हो सकते हैं। डा॰ अम्बेडकर ने राजाजी की इस बात का विरोध किया और कहा था कि ऐसा होने पर उत्तर भारत व दक्षिण भारत के बीच गृह युद्ध की आशंका बनी रहेगी। संयुक्त राज्य अमेरिका का उदाहरण हमारे सामने है।

डा॰ अम्बेडकर ने भाषाई आधार पर बनने वाले राज्यों का भी विरोध किया। डा॰ अम्बेडकर को आशंका थी कि ऐसा होने पर प्रत्येक राज्य की प्रादेशिक भाषा ही कामकाज की भाषा बनेगी। लोगों में स्वतन्त्र राष्ट्रीयता की भावना उद्‌भूत होगी और स्वतन्त्र राज्य की कल्पना जागेगी। मध्ययुगीन संस्थाओं के समान ये राज्य अलग होकर एक दूसरे से शत्रुता का बर्ताव करेंगे और आपस में युद्ध करेंगे।

वे ''एक राष्ट्र एक भाषा'' के पक्षधर थे। इसके समर्थन में उन्होंने जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैण्ड व इटली का उदाहरण दिया और कहा कि भारत की स्थिति कनाडा, स्विट्जरलैण्ड और दक्षिण अफ्रीका जैसे बहुभाषी देशों से भिन्न है। भारतीयों की नीति/भावना बंटवारे की रही है जबकि स्विट्जरलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका व कनाडा में संगठित होने की रही है।

डा॰ अम्बेडकर के अनुसार जो भी देश ''एक देश एक भाषा'' के नियम से अलग हटा तो उस देश के लिए खतरा ही बना। जब पुराने आस्ट्रियन साम्राज्य और टर्की साम्राज्य में भाषाई आधार पर राज्य बने तो वे टूट गए। उन्होंने एक देश एक भाषा के सिद्धान्त को जातीय एवं सांस्कृतिक झगड़ों को निपटारे का तरीका बताया था।

डा॰ अम्बेडकर ने एक बड़ा दक्षिण राज्य बनाने की बात कही थी जिससे कि तमिल, मलयालम व तेलुगु जैसी भाषाओं के आधार पर दक्षिणी हिस्से का बाल्कनाइजेशन न हो। उन्होंने तो हैदराबाद और सिकन्दराबाद को मिलाकर भारत की दूसरी राजधानी बनाने की बात कही थी जिससे कि उत्तर व दक्षिण में संतुलन बना रहे। उन्होंने कहा कि एक भाषा के क्षेत्र को कई प्रान्तों में बांटा जाए और प्रान्त छोटे-छोटे बनें। उन्होंने तो ''एक लिपि एक भाषा'' की भी बात कही। वे मराठी होते हुए भी मराठी कहलाना पसन्द नहीं करते थे। जब महाराष्ट्र के एकीकरण की बात चल रही थी तो उन्होंने उसका विरोध किया था। उनकी अवधारणा थी कि भाषावाद साम्प्रदायिकता का दूसरा रूप है यह उतना ही खतरनाक है जितना कि जातिवाद।

उन्होंने अपनी एक पुस्तक में लिखा है, ''संविधान का कोई भी अनुच्छेद इतना विवादास्पद नहीं रहा जितना कि राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित अनुच्छेद। अन्य किसी अनुच्छेद का इतना विरोध नहीं हुआ और न ही किसी अनुच्छेद ने इतनी गर्मी पैदा की।''

अवर सचिव, संस्कृति विभाग, 210 'डी', शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001,

विश्व हिंदी दर्शन

ब्रिटेन में हिन्दी

—लक्ष्मीनारायण दुबे

ब्रिटेन में हिन्दी का प्रचलन अठारवीं शताब्दी से शुरू हुआ जब भारत तथा इंग्लैण्ड के सम्बन्ध स्थापित हुए।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर (भारत) में हुआ और उसमें यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधि के रूप में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के डा॰ आर॰एस॰ मैकग्रेगर सम्मिलित हुए थे। उन्होंने बताया था कि लंदन के एस॰ओ॰ए॰एस॰ विद्यालय में विद्यार्थी प्रथम वर्ष में ही हिन्दी साहित्य का अध्ययन करता है। सूर, तुलसी आदि की रचनाओं के साथ-साथ आधुनिक साहित्य का अध्ययन करता है। हिन्दी भाषा का इतिहास भी पढ़ाया जाता है। शोध तथा पठन-सामग्री तैयार करने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। एक विद्यार्थी 'बीसलदेव रासौ' पर शोध कार्य कर चुका है। अनुवाद का कार्य भी चल रहा है। तुलसीदास की कवितावली तथा विनयपत्रिका तथा नन्ददास की दो रचनाओं के अनुवाद अंग्रेजी में हो गए हैं। ब्रिटेन में हिन्दी की द्रुतवाहिनी सरस्वती की धारा प्रवाहमान है।

लंदन के स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एण्ड आफ्रिकन स्टडीज में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य शास्त्रीय ढंग से होता है। लन्दन के काउण्टी विद्यालय में हिन्दी ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ायी जाती है। कैम्ब्रिज तथा लंदन विश्वविद्यालय में हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था है। 'हिन्दी प्रचार परिषद्' लंदन में हिन्दी के प्रसार में कार्यरत है। इस संस्था की ओर से 'प्रवासिनी' नामक त्रैमासिक का प्रकाशन होता था। ब्रिटेन में बी॰बी॰सी॰ के हिन्दी कार्यक्रम के माध्यम से हिन्दी का पर्याप्त प्रचलन हुआ है।

ब्रिटेन में हिन्दी की भूमिका सम्पर्क भाषा की है। ब्रिटेन में आप्रवासी भारतीय अपनी जड़ों से जुड़े रहने की अदम्य चाह के कारण अपनी मातृभाषा से कटे नहीं रह सके। उनके संस्कारों में पैतृक धर्म तथा संस्कृति किसी न किसी रूप में उनके सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन का अंग बनी हुई है। हिन्दी इंग्लैण्ड के आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय भावनाओं की प्रतीक होने के कारण राष्ट्रभाषा का कार्य भी करती है। ब्रिटेन की हिन्दी भाषा के प्रयोग पर अंग्रेजी का छिड़काव सुस्पष्ट दिखाई देता है।

हिन्दी में व्याकरण तथा कोश कार्य की आधारशिला रखने वालों में जान गिल क्राइस्ट का नाम अग्रणी है। सन् 1840 में जैम्स रावर्ट वैलंटाइन ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहा था। वे वाराणसी के संस्कृत महाविद्यालय में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी तथा संस्कृत में ही व्याख्यान दिया करते थे। लंदन के प्राच्य अध्ययन संस्थान में हिन्दी का अध्ययन क्षेत्रोन्मुख पृष्ठभूमि (एरिया स्टडीज) के रूप में, कैम्ब्रिज में प्राच्य विद्या संकाय और यार्क में भाषा-विज्ञान के रूप में विकसित हुआ। लंदन के नगर निगम द्वारा आयोजित 'एक्सटेंशन कोर्सेज' में हिन्दी का समावेश हो चुका है। हिन्दी की पढ़ाई विकसित हो रही है।

हिन्दी के क्षेत्र में एफ॰ए॰ आलचिन ने विशेष ख्याति अर्जित की। लंदन के बर्टन पैज का नाम भी उल्लेखनीय है। भारतीय पुस्तकें अनेक स्थानों पर मंगाई जाती हैं यथा : कैम्ब्रिज के साउथ एशियन सैन्टर, ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज का पुस्तकालय, ससैक्स में भी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्कूल ऑफ अफ्रीकन एवम् एशियन स्टडीज, इण्डियन स्टूडैण्ट्स होस्टल, लंदन, भारतीय विद्या भवन, लंदन और बी॰बी॰सी॰ के लंदन एवम् बर्मिंघम केन्द्र। यहां रोमन लिपि में प्रकाशनों की अधिक सुविधापूर्ण स्थिति है। 1970 में प्रथम बार 'सिलेक्टेड बुक्स फ्राम इण्डिया' नाम से रोमन लिपि में एक ऐसी सूची प्रकाशित की गई जिसमें हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और कुछ अन्य भारतीय भाषाओं की चुनी हुई पांच सौ से एक हजार पुस्तकों का विवरण सहित परिचय दिया गया था और इन सूचियों के कारण अच्छा दायित्व प्राप्त हुआ।

लंदन में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। सन् 1988 में ब्रिटेन के स्तर पर लंदन में एक सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें भारतीय उच्चायोग तथा भारतवासियों का सक्रिय सहयोग रहा। इसमें भारत, हालैण्ड, जर्मनी, इटली तथा ब्रिटेन के विद्वानों ने शिरकत की। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय श्री कृष्ण चेतना संघ, मगनभाई भीमजियानी रामबापा तथा हांस बर्नन वैसलर के विचार श्रवणीय थे। धर्मेन्द्र गौतम, स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती, डा॰ श्याममनोहर पाण्डेय, डा॰ महेन्द्र वर्मा, नारायण स्वरूप शर्मा, अशोक प्रियदर्शी, डा॰ जगदीश दवे, रंजीत धीर, विद्यासागर आनन्द, वीरेन्द्र शर्मा, मारीशस के ब्रिटेन स्थित उच्चायुक्त ज्ञानाथ, जगदीश मित्र कौशल आदि ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में समुचित स्थान दिलाने पर बल दिया। इंग्लैण्ड में गुजराती अकादमी की भांति हिन्दी अकादमी भी होनी चाहिए।

भारतीय उच्चायुक्त डा॰ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी तथा श्रीमती कमला सिंघवी के 1993 में आने के तदनंतर, इंग्लैण्ड में हिन्दी की प्रगति तथा सम्बर्द्धन में बड़ी पुरोगति आयी है। कई अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन तथा विराट कवि सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। ब्रिटेन में हिन्दी की सार्वभौमिक सांस्कृतिक अस्मिता जाग्रत हो चुकी है।

लंदन विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रवाचक तथा प्राच्य विद्या विभाग के अध्यक्ष डा॰ रूपर्ट स्नैल को हिन्दी के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हो

चुकी है। उन्होंने मारीशस के चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन तथा त्रिनीडाड एवम् टोबैगो के पंचम विश्व हिन्दी सम्मेलन में अपने वक्तव्य से अन्तर्राष्ट्रीय समाज को प्रभावित किया। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय अकादमिक सत्रों की अध्यक्षता भी की। उनका सक्रिय व्यक्तित्व इस क्षेत्र में ब्रिटेन में हिन्दी के उन्नयन एवम् उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। उनसे अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी जगत को अनेक आशा-अपेक्षाएं हैं।

वर्तमान समय में ब्रिटेन में यू.के. हिन्दी समिति, अहिंसम् भारतीय, भारतीय भाषा परिषद्, मैंचेस्टर इण्डियन एसोसिएशन आदि संस्थाएं हिन्दी के विकास में पूर्णरूपेण दत्तचित्त हैं। व्यक्तियों में डा॰ सुरेन्द्र अरोड़ा, श्रीराम पाण्डे, सरदार डा॰ रणजीतसिंह सुमरा आदि की भूमिका अत्यंत सकारात्मक एवम् रचनात्मक है। बशीर अहमद मयूख, बैकल उत्साही, डा॰ गंगाप्रसाद विमल आदि ने ब्रिटेन में जाकर वहां के परिवेश के उत्थान में योगदान दिया है।

आंग्ल भूमि हिन्दी के प्रचार, सर्जना एवम् अनुवाद की उर्वर धरती सिद्ध हो रही है। भारतीय स्वतंत्रता की अर्द्धशती भी अनेक हिन्दी कार्यक्रमों से अभिसिंचित है। आशा का आस्थावान् प्रभामण्डल सर्वत्र परिव्याप्त है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् की मुख पत्रिका 'गगनांचल' के 'विश्व हिन्दी' विषयक श्रेष्ठ विशेषांक तथा केन्द्रीय राजभाषा विभाग की मुख पत्रिका 'राजभाषा भारती' और पांचों विश्व हिन्दी सम्मेलनों के अवसर पर प्रकाशित स्मारिकाओं ने ब्रिटेन में हिन्दी की प्रगति पर सम्यक् एवम् उत्साहवर्द्धक सामग्री एवम् सूत्र प्रदान किए हैं जो कि निष्ठा एवम् प्रोत्साहन को वाणी प्रदान करते हैं।

'लक्ष्मीकांतम्', रोड नं॰ 2, आनंद नगर, मकरोनिया, सागर-470 004 (म॰प्र॰)

*"शायद हममें कुछ ऐसे आदमी हैं, जिन्हें इस बात का डर है कि हिंदीवाले **हमारी मातृभाषा** को छुड़ाकर उसके स्थान में हिंदी रखवाना चाहते हैं। यह भी निराधार भ्रम है। हिंदी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है वह आगे चलकर हिंदी से लिया जाए। अपनी माता से भी ज्यादा प्यारी मातृभाषा बंगला को तो हम कदापि नहीं छोड़ सकते, किंतु भारत के विभिन्न प्रान्तों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिंदी या हिंदुस्तानी तो सीखनी ही चाहिए। स्वाधीन भारत के नवयुवकों को हिंदी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रैंच आदि यूरोपीय भाषाओं में ऐसी एक-दो सीखनी पड़ेंगी, नहीं तो अंतर्राष्ट्रीय मामलों में हम दूसरी जातियों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे।...*

...कुछ लोगों का विचार है कि बंगला राष्ट्रभाषा हो, क्योंकि इसमें उच्च कोटि का साहित्य है। हिंदी में उच्च साहित्य है अथवा नहीं, यह विवादग्रस्त विषय उठाना ठीक नहीं है। हिंदी व्यापक रूप से भारत में बोली जाती है और इसमें संग्रहण शक्ति है तथा यह सरल है।"

सुभाष चन्द्र बोस

एडवांस, जुलाई 1938

हिंदी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

—डा॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल

अंग्रेजी के पक्षधर प्राय: कहा करते हैं कि अंग्रेजी तो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। हिंदी को भारत से बाहर कोई जानता ही नहीं है। ऐसा कथन बहुत पढ़े-लिखे लोगों का भी है। परंतु इससे बड़े दुख की बात क्या हो सकती है कि विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की भाषा के बारे में यह कहा जाए कि इस भाषा को विश्व में कोई नहीं जानता। परन्तु यह कथन नितांत गलत है। हिंदी केवल भारत की ही भाषा नहीं है बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा है।

आपका सहज प्रश्न यह होगा कि यह कैसे ? इसका उत्तर स्पष्ट है। यदि आप अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की परिभाषा दें तो कह सकते हैं कि जो भाषा दो या दो से अधिक राष्ट्रों में उपयोग में लाई जा रही हो वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा होती है।

हिंदी विश्व के लगभग 72 देशों में स्थान बना चुकी है व विश्व के 119 विश्वविद्यालयों/संस्थानों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है। विश्व में जहां भी भारतीय मूल के निवासी हैं वहां हिंदी किसी न किसी रूप में, अर्थात् राजभाषा, सह-भाषा, संस्कार की भाषा अथवा शास्त्रीय (प्राचीन) भाषा की हैसियत से विद्यमान है। यद्यपि भारतीय नागरिक आज विश्व के कोने-कोने में कार्यरत हैं परंतु राष्ट्रों की जनगणना के आंकड़ों में उनकी गिनती नहीं हुई है।

मेरा यह मानना है कि यदि सम्पूर्ण भारत की जनसंख्या की हिंदी जानने वालों में गणना करें व विश्व में भारतीय मूल के व्यक्तियों व हिंदी भाषा जानने वाले अन्य राष्ट्रवासियों की गणना भी करें तो इन समस्त आंकड़ों को मिला कर देखने पर हिंदी भाषा जानने वालों की संख्या सबसे अधिक है तथा विश्व में इसका पहला स्थान है।

इतने विराट और विस्तृत भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा को हम भारतवासी बहुत हेय दृष्टि से देखते हैं व अंग्रेजी की तुलना में सदैव दूसरा स्थान देते हैं।

वस्तुत: हिंदी भाषा को हम कभी उचित व तार्किक रूप से देखते ही नहीं हैं। अत: इस लेख में मैंने विश्वमानचित्र पर हिंदी को तलाशने का प्रयास किया है। भारतीयों की गणना करते समय केवल उन्हीं को गिना गया है जो प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित हैं तथा जिनका हिंदी से पुराना संबंध है। राष्ट्रों में इस भाषा की स्थिति का सही ब्यौरा देने के लिए राष्ट्रवार भारतीयों की जनसंख्या दी है। परोक्ष रूप से सभी भारतीय हिंदी जानने वाले माने गए हैं इस दृष्टि से सही-सही आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। इन राष्ट्रों की सूची निम्नवत् है :—

(01) अर्जेन्टाइना : भारतीय और अरब जनसंख्या का 3 प्रतिशत है। अधिकांश भारतीय हिंदी समझते हैं। प्राय: बोलते भी हैं।

(02) बहरीन : कुल जनसंख्या का 5 प्रतिशत भारतीय और पाकिस्तानी हैं जो हिंदी बोलते हैं। अत: हिंदी का स्थान महत्वपूर्ण है।

(03) बंगलादेश : हिंदू 16 प्रतिशत, मुस्लिम 83 प्रतिशत हैं। 16 प्रतिशत हिंदू हिंदी, संस्कृत व बंगला जानते हैं। मुस्लिम बंगला-उर्दू बोलते हैं जो हिंदी के अतिनिकट है। अत: हिंदी यहां पराई नहीं है।

(04) भूटान : हिंदी तथा नेपाली का प्रचलन है। हिंदू 25 प्रतिशत हैं तथा धर्म व आध्यात्मक कार्य में संस्कृत का प्रयोग होता है। अत: हिंदी का यहां अच्छा प्रभाव है।

(05) ब्राजील : भारतीय बहुत संख्या में हैं हिंदी का उपयोग होता है। परंतु सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

(06) बर्मा : कुल जनसंख्या के 3 प्रतिशत से अधिक हिंदू हैं व 80 प्रतिशत बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। हिंदी का प्रचलन सीमित क्षेत्र में है।

(07) कोलम्बिया : कुल जनसंख्या का 1 प्रतिशत भारतीय हैं अत: हिंदी अपरिचित भाषा नहीं है।

(08) कोस्टारिका : कुल जनसंख्या का 0.4 प्रतिशत भारतीय हैं अत: हिंदी अपरिचित नहीं है। हिंदी यहां भी स्थान बना चुकी है।

(09) इक्वाडोर : इसकी कुल जनसंख्या का 25 प्रतिशत भाग भारतीय है। अत: हिंदी की जड़ें अवश्य ही यहां होंगी। यह स्वत: अनुमान लगा सकते हैं। हिंदी जानने वालों की सही संख्या ज्ञात नहीं।

(10) अल सल्वाडोर : यहां की जनसंख्या के 10 प्रतिशत भारतीय हैं अत: यहां भी हिंदी की भूमिका निश्चित ही महत्वपूर्ण है।

(11) फीजी : जनसंख्या का 50 प्रतिशत हिंदू है, अंग्रेजी (राजभाषा) है परंतु सरकारी स्तर पर हिंदी को समता का दर्जा उपलब्ध है।

(12) ग्वाटेमाला गणतंत्र : कुल जनसंख्या का 54 प्रतिशत भारतीय हैं। हिंदी एवं भारतीय भाषाएं/बोलियां प्रचलित हैं।

(13) गुआना : पूर्वी भारत (उत्तर प्रदेश) से आए भारतवंशी कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत हैं। भारतीय हिंदी को अंग्रेजी के समान ही महत्व देते हैं।

(14) हाण्डूरास : भारतीय बोलियां व हिंदी का अच्छा स्थान है। जनसंख्या के आंकड़े उपलब्ध न हो सके।

(15) इण्डोनेशिया : मलय भाषा यहां की मूल भाषा है, यहां हिंदी के अच्छे जानकार भी हैं। साथ ही हिंदू भी यहां की जनसंख्या में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

(16) कुवैत : कुल जनसंख्या का 13 प्रतिशत भारतीय, पाकिस्तानी तथा ईरानी हैं। हिंदी का पर्याप्त प्रसार है। भारतीय व पाकिस्तानी प्राय: हिंदी के माध्यम से वार्तालाप करते हैं।

(17) मलेशिया : कुल जनसंख्या का 9 प्रतिशत भारतीय हैं। हिंदू धर्म मानने वाले भी बहुत हैं। हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को बोलने वालों की संख्या काफी अधिक है। सरकारी स्तर पर भी हिंदी मान्यता प्राप्त भाषा है।

(18) मारीशस : कुल जनसंख्या का 69 प्रतिशत भारतीय हैं जिनमें 51 प्रतिशत हिंदू हैं। हिंदी का काफी प्रचलन है।

(19) मैक्सिको : कुल जनसंख्या का 29 प्रतिशत अमेरिकी भारतीय हैं। हिंदी की संभावनाएं पर्याप्त हैं। भारत के विभिन्न प्रांतों से गए व्यक्ति भी यहां बस गए हैं।

(20) मोजाम्बिक : कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत हिंदू, बौद्ध तथा यहूदी हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। हिंदी जानने वाले कितने प्रतिशत हैं इसकी स्पष्ट जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी।

(21) नेपाल : कुल जनसंख्या का 90 प्रतिशत हिंदू हैं, 7 प्रतिशत बौद्ध हैं। हिंदी, बिहारी, नेपाली प्रचलित हैं। प्राय: हर व्यक्ति हिंदी समझता है व बोल सकता है।

(22) निकारागुआ : कुल जनसंख्या में 4 प्रतिशत भारतीय हैं। यहां के लिए हिंदी अपरिचित नहीं है।

(23) ओमान : कुल जनसंख्या का 2 प्रतिशत भारतीय हैं, हिंदू-उर्दू का काफी प्रचलन है।

(24) पाकिस्तान : हमारे पड़ोसी देश, पाकिस्तान में उर्दू सरकारी भाषा है। परंतु हिंदी सभी जानते हैं क्योंकि उर्दू और हिंदी में सिर्फ लिपि का भेद है। अत: पाकिस्तानी जनसंख्या में से 87.5 प्रतिशत हिंदी जानने वाला माना जा सकता है क्योंकि पाकिस्तानी जनसंख्या में भाषावार स्थिति यह है : पंजाबी 66 प्रतिशत, सिंधी 13 प्रतिशत, पस्तो 8.5 प्रतिशत, उर्दूभाषी 7.6 प्रतिशत, बलूची 2.5 प्रतिशत हैं। धार्मिक दृष्टि से मुस्लिम 97 प्रतिशत, ईसाई 1.4 प्रतिशत, हिंदू 1.5 प्रतिशत हैं।

(25) पनामा : (पनामा गणतंत्र): कुल जनसंख्या का 14 प्रतिशत पश्चिमी भारतीय है एवं 6 प्रतिशत भारतीय हैं। अत: इनमें हिंदी को जानने वाले निश्चित ही होंगे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

(26) पराग्वे : कुल जनसंख्या का 5 प्रतिशत भारतीय मूल, हब्शी व अन्य अल्प संख्यक समुदाय हैं। हिंदी जानने वालों की संख्या काफी है।

(27) पेरू : कुल जनसंख्या का 45 प्रतिशत भारतीय मूल के हैं। शेष काकेशियाई मित्सजो व अन्य हैं। अत: भारतीयों में हिंदी का प्रचलन होगा, यह कहा जा सकता है।

(28) कतर : कुल जनसंख्या का 7 प्रतिशत पाकिस्तानी व भारतीय हैं। उर्दू, फारसी का प्रचलन है। हिंदी आसानी से बोली व समझी जाती है। अत: हिंदी को यहां भी स्थान मिला हुआ है।

(29) सउदी अरब : यद्यपि यहां के मूल निकासी अरब तथा मुस्लिम देशों से आए हैं। अत: उर्दू व अरब प्रचलित हैं। बड़ी संख्या में भारतीय व पाकिस्तानी कार्यरत हैं। अत: हिंदी का प्रचलन भी पर्याप्त मात्रा में है।

(30) शेशेल्स : शेशेल्स गणतंत्र की कुल जनसंख्या का 2 प्रतिशत हिंदू व मुस्लिम हैं। हिंदी परिचित भाषा है।

(31) सिंगापुर : कुल जनसंख्या में 6 प्रतिशत भारतीय हैं मूलत: तमिल, हिंदी भारतीयों द्वारा व्यवहार में लाई जाती है। पूजापाठ में संस्कृत का उपयोग करते हैं।

(32) श्रीलंका : हमारा पड़ोसी देश है। कुल जनसंख्या का 19 प्रतिशत तमिल हैं। कुल जनसंख्या में 18 प्रतिशत हिंदू हैं। अत: संस्कृत व तमिल भाषा के प्रभाव के कारण हिंदी से अपरिचित नहीं हैं।

(33) सूरीनाम : कुल जनसंख्या का 37 प्रतिशत भारतीय हैं जो मूलत: हिंदी भाषी हैं। अत: हिंदी व हिंदू संस्कृति का अच्छा प्रभाव है।

(34) थाइलैण्ड : कुल जनसंख्या का 8 प्रतिशत अन्य निवासी हैं। इन निवासियों में भारतीय भी शामिल हैं। अत: भारतीयों का हिंदी से परिचित होना स्वाभाविक है।

(35) संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई.) : कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत भारतीय व पाकिस्तानी हैं। हिंदी व उर्दू दोनों ही प्रमुख भाषाएं बोली जाती हैं।

(36) वेनेजुएला : कुल जनसंख्या में 2 प्रतिशत भारतीय हैं तथा हिंदी व भारतीय भाषाओं का प्रचलन होगा ही यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

(37) दक्षिणी यमन : कुल जनसंख्या का 11 प्रतिशत भारतीय हैं व इनमें 4 प्रतिशत हिंदू हैं। भारतीय अपनी मूल भाषा से जुड़े हैं। अत: हिंदी का अस्तित्व यहां भी है।

(38) संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य :

(क) न्यू मैक्सिको : कुल जनसंख्या का लगभग 13 प्रतिशत भारतीय (अमेरिकी)। भारतीय भाषाओं का सीमित उपयोग की संभावना है।

(ख) उटाह : भारतीयों की काफी संख्या है प्रतिशत आंकड़े उपलब्ध नहीं।

अन्य : इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय अलग-अलग राज्यों में फैले हैं। अत: अमेरिका में भी यत्र-तत्र हिंदी बोलने वाले विद्यमान हैं। अमेरिका में आज से 15 वर्ष पूर्व ही हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित होने आरंभ हो गए थे।

(39) जाम्बिया : 1 प्रतिशत भारतीय हैं व अधिकांश हिंदू हैं।

टिप्पणी

अन्य राष्ट्रों में हिंदी : उक्त देशों के अलावा अनेक राष्ट्रों में भारतीय मूल के निवासी रोजगार, व्यापार, उद्योग तथा नौकरियों पर हैं। ब्रिटेन से लेकर चीन, जापान, रूस, अमेरिका व अफ्रीकी देशों तथा विश्व के समस्त देशों में भारतीय अथवा भारतीय मूल के व्यक्ति रहते हैं परंतु वहां के निवासी होने का दर्जा न होने के कारण जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में उनकी गणना नहीं हुई है। अत: हमने इस लेख में उन्हें अंत में शामिल किया है। यदि उपरिवर्णित सभी को हिंदी भाषियों में शामिल कर दें तो विश्व में हिंदी समझने वालों की संख्या प्रथम स्थान पर तो निश्चित रूप से पहुंच ही गई है। इसके लिए हम अनुबंध 1 में विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या चार्ट में प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि हिंदी का प्रसार क्षेत्र कितना है। (स्रोत: उक्त सूचना द वर्ल्ड आल्मेनॅक एण्ड बुक ऑफ फैक्ट्स 1983, प्रकाशक न्यूजपेपर इंटर प्राइज एसोसिएशन आई.एन.सी. न्यूयार्क है। आंकड़े 1981 की जनगणना पर आधारित हैं।)

केवल उक्त राष्ट्रों में ही नहीं बल्कि निम्नलिखित देशों में हिंदी को पढ़ने, समझने, बोलने वाले पर्याप्त मात्रा में हैं परंतु उनकी संख्या की गणना आंकड़ों/प्रतिशत में मुझे ज्ञात नहीं हो पाई अत: इन राष्ट्रों से संबंधित आंकड़े अनुमान पर आधारित हैं। फिर भी इन राष्ट्रों से यह सूचना एकत्र कराई जा सकती है। हिंदी के महत्व को समझने वाले हिंदी अध्ययन, अध्यापन व प्रकाशन करने वाले राष्ट्र निम्नलिखित हैं :—

(39) रूस, (40) संयुक्त राज्य अमेरिका, (41) ब्रिटेन, (42) तुर्की, (43) स्पेन, (44) तंजानिया, (45) स्वीडन, (46) स्पेन, (47) रोमानिया, (48) पोलैण्ड, (49) फिलीपींस, (50) नार्वे, (51) केन्या, (52) लाइब्रेरिया, (53) मैक्सिको, (54) आस्ट्रेलिया, (55) आस्ट्रिया, (56) बहरीन, (57) बेल्जियम, (58) जर्मनी, (59) डेनमार्क, (60) चेकोस्लोवाकिया, (61) चीन, (62) कनाडा, (63) बुल्गारिया, (64) बेल्जियम, (65) फिनलैंड, (66) फ्रांस, (67) जर्मन, (68) हालैंड, (69) हंगरी, (70) इटली, (71) जापान, (72) केन्या

उपरिवर्णित राष्ट्रों में भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी भी हिंदी भाषा को पढ़ते और पढ़ाते हैं यद्यपि इनकी संख्या कम है फिर भी हिंदी को विश्व मानचित्र पर अंकित करने के लिए इनकी संख्या पर्याप्त है।

विदेशों में हिंदी शिक्षण सुविधाएं : भारत में प्राय: सभी विश्वविद्यालयों/बोर्डों परिषदों में हिंदी शिक्षण व शोध की सुविधाएं उपलब्ध हैं। हिंदी शिक्षण के लिए विदेशों में भी कई विश्वविद्यालयों/संस्थाओं द्वारा हिंदी पढ़ाई जाती है। इन विश्वविद्यालयों की सूची राजभाषा पुष्पमाला के जनवरी 1994 अंक में प्रकाशित हुई थी यह सूची अत्यधिक उपयोगी है। अत: हम इस सूची को पुन: दे रहे हैं ताकि विदेशों में हिंदी की स्थिति का जायजा लेते समय इसको भी शामिल किया जा सके।

1. आस्ट्रेलिया : (1) साउथ एण्ड वेस्ट एशिया सेन्टर, आस्ट्रेलिया नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबेरा
(2) डिपार्टमेंट ऑफ इण्डियन एंण्ड इन्डोनेशियन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबोर्न, मेलबोर्न

2. आस्ट्रिया : (3) इन्सटीट्यूट ऑफ इन्डोलोजी, यूनिवर्सिटी ऑफ वियना, वियना

3. बहरीन : (4) बारहवीं कक्षा तक पढ़ाने वाले स्थानीय भारतीय स्कूल

4. बेल्जियम : (5) इन्डोलोजी डिपार्टमेंट कैथेलिक यूनिवर्सिटी, लोवेन
(6) स्टेट यूनिवर्सिटी, घैन्त

5. बुल्गारिया : (7) यूनिवर्सिटी ऑफ सोफिया, सोफिया

6. कैनेडा : (8) यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलम्बिया, बैंकूवर
(9) यूनिवर्सिटी ऑफ टोरन्टो
(10) यूनिवर्सिटी ऑफ विन्डसर
(11) मैकमिल यूनिवर्सिटी, मान्ट्रियल

7. चीन : (12) यूनिवर्सिटी ऑफ़ बीजिंग, बीजिंग
(13) यूनिवर्सिटी ऑफ नाजिंग, जाजिंग

8. चेकोस्लोवाकिया (14) चार्ल्स यूनिवर्सिटी, चेकोस्लोवाकिया

9. डेनमार्क : (15) स्टूडियोस्क्रोत्, कोपनहेगन
(16) इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ सार्स, आर्स

10. जर्मन संघीय गणराज्य :
(17) यूनिवर्सिटी ऑफ मारवर्ग, मारवर्ग
(18) यूनिवर्सिटी ऑफ मेन्ज, मेन्ज
(19) यूनिवर्सिटी ऑफ गोएटिंगेंने, गोएटिंगेंन
(20) यूनिवर्सिटी ऑफ दयूविनगेन, दयूविनगेन
(21) यूनिवर्सिटी ऑफ बोन, बोन
(22) यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूंचेन, म्यूंचेन
(23) यूनिवर्सिटी ऑफ बांचम, बांचम
(24) यूनिवर्सिटी ऑफ हैम्बर्ग, हैम्बर्ग

11. फिनलैण्ड : (25) यूनिवर्सिटी ऑफ हैलसिंकी, हैलसिंकी
(26) यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस, पेरिस

12. जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य :
(27) हमबोल्ड यूनिवर्सिटी, बर्लिन
(28) कार्ल मार्क्स यूनिवर्सिटी, लेप्जिग

13. गुयाना : (29) यूनिवर्सिटी ऑफ गुयाना, जार्जटाउन
(30) टैगोर मैमोरियल स्कूल, बर्बरीस
(31) लिनेपाथ सेकेन्डरी स्कूल, स्केलडन
(32) हिंदी कॉलेज कोव एण्ड, जोन

14. हालैण्ड : (33) यूनिवर्सिटी ऑफ लिडेन
(34) यूनिवर्सिटी ऑफ उटेट

15. हंगरी : (35) डिपार्टमेंट ऑफ इन्डो यूरोपियन लैंग्वेज ओत्वोस लोरेंड यूनिवर्सिटी, बुडापेस्ट
: (37) स्टूडेंटस हॉस्टल ओत्वसि लोग्लण्ड यूनिवर्सिटी, बुडापेस्ट।

16. इटली : (38) सेमओ इन्स्टीट्यूट फार ओरियन्टल स्टडीज, द्यूरिन।
(39) यूनिवर्सिटी ऑफ-पीसा।
(40) यूनिवर्सिटी ऑफ रोम (ला सैपिंजा)।
(41) यूनिवर्सिटी ऑफ नेपल्स।
(42) यूनिवर्सिटी ऑफ बेनिस।
(43) आई.एस.एम.ई.ओ., (हिन्दी यूनिवर्सिटी) एण्ड लेंवेज रोसा)

17. जापान : (44) टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ फोरन स्टडीज, टोकियो।
(45) क्योतो यूनिवर्सिटी, क्योसो।
(46) तोकई यूनिवर्सिटी।
(47) तेशो यूनिवर्सिटी।
(48) ओतेना गाकुइन यूनिवर्सिटी।
(49) ताकाशोका यूनिवर्सिटी।
(50) एशिया यूनिवर्सिटी, 5-24-10 सकाई मुसशिनो-शी, टोकियो।
(51) ओसाका यूनिवर्सिटी फार फोरन स्टडीज, 3734 ओमादानी ओंआजा मीनू-शी ओसाका-562
(52) कनसाथी यूनिवर्सिटी,फार फोरन स्टडीज, 16-किताकाता होक-चो किराकाता-शी, ओसाका 573
(53) ओतानी यूनिवर्सिटी, कामिफुजा चोकोयामा, किताक् क्योता-शी-602

18. केन्या : (54) लोकल सेकेन्डरी स्कूल

19. लाइब्रेयिा : (55) इन्डियन कम्यूनिटी स्कूल, मनोरोविया।
(56) लगभग 840 सरकारी और निजी स्कूल।

20. मेक्सिको : (57) कोलेजियो द सेक्सिको, सेक्सिको।

21. नेपाल : (58) त्रिभुवन यूनिवर्सिटी, काठमांडू।
(59) पदमा कन्या कैम्पस कीर्तिपुरा कैम्पस, काठमांडु।
(60) महेन्द्रा विन्देश्वरी कैम्पस, विराट नगर
(61) ठाकुर राम कैम्पस, बीरगंज

(62ए) रामस्वरूप रास सागर, कैम्पस, जनकपुर
(62) महेन्द्र कैम्पस, नेपालगंज

22. नार्वे : (63) इन्डो-इरानियन इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी ऑफ ओसलो, ओसलो।

23. फिलीपाइन्स : (64) यूनिवर्सिटी ऑफ फिलीपाइन्स, मनीला

24. पोलैण्ड : (65) यूनिवर्सिटी ऑफ वारसा, वारसा।
(66) जागेला नियन यूनिवर्सिटी, क्रावव

25. कतार : (67) एम इ एस इन्डियन स्कूल

26. रियुनयन आयरलैण्ड : (68) इंस्टीट्यूट ऑफ लिंगवास्टिक एवं एन्थ्रोपालोजी, युनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज।

27. आर.ओ.के. : (69) हैकक यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज, सिओल
(70) पूसान यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज, पूसान

28. रोमानिया : (71) यूनिवर्सिटी ऑफ बुखारेस्ट, बुखारेस्ट।

29. स्पेन : (72) सेंटर फार अफ्रीकन एण्ड एशियन स्टडीज, मैड्रिड यूनिवर्सिटी, मैड्रिड।

30. श्रीलंका : (73) कालानिय यूनिवर्सिटी
(74) यूनिवर्सिटी ऑफ श्री जसवर्द्धपुर, कोलम्बो।
(75) छः निजी संस्थान

31. स्वीडन : (76) स्टाकहोम यूनिवर्सिटी, स्टाकहोम।

32. तन्जानिया : (77) इंडियन एक्सपर्टीयेट स्टडी ग्रुप

33. टर्की : (78) डिपार्टमेंट ऑफ इन्डोलोजी, अंकारा यूनिवर्सिटी, अंकारा

34. यूनाइटेड किंगडम : (79) कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी
(80) लन्दन यूनिवर्सिटी
(81) यार्क यूनिवर्सिटी

35. संयुक्त राज्य अमरीका : (82) यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एन्जेल्स, कैलिफोर्निया-190024
(83) स्टेनफार्ड यूनिवर्सिटी, स्टेनफोर्ड कैलिफ़ोर्निया-94305
(84) अमरीकन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन डी.सी.-20016
(85) यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई मानोआ, होनोलूलू हवाई-96822
(86) यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोयस शिकागो, इलिनोयस शिकागो-60680
(87) यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोयस एट अर्वाना चेम्पेन, इलिनोयस-61820
(88) यूनिवर्सिटी ऑफ मिचीगन अन पार्वर, मिचीगन-48109
(89) यूनिवर्सिटी ऑफ पिनेसोटा, पिन्यापोलिस, मिनेसोटा-55414
(90) यूनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी, कोलम्बिया, मिसोरी-65211
(91) कार्नेल यूनिवर्सिटी इवासा, न्यूयार्क-14852
(92) स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क बफेलो, न्यूयार्क-142360
(93) स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क ओनिओटा न्यूयार्क-13820
(94) सिराक्यूस यूनिवर्सिटी सिराक्यूस न्यूयार्क-13210
(95) ड्यूक यूनिवर्सिटी दरहम, नार्थ कैरोलिमा-27706
(96) कैन्ट स्टेट यूनिवर्सिटी कैन्ट आहियो-44242
(97) यूनिवर्सिटी ऑफ पिटसबर्ग पिटसबर्ग, पेनिसिल्वानिया-15260
(98) ब्राउन यूनिवर्सिटी प्रोविडेन्स, रोड आयरलैण्ड-02912
(99) यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जिनिया, चार्लोटसविले वर्जिनिया-22003
(99ए) यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास एट आस्टिन आस्टिन, टेक्सास-78712
(100) यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन, सेटल, वाशिंगटन-98195
(101) यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कोसिन एट मैडिसन, मैडिसन विस्कोसिन-53706

37. यू.एस.एस.आर. : (102) इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन, कन्ट्रीज मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी मास्को।
(103) मास्को,अस्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ इन्टर नेशनल रिलेशन्स, मास्को।
(104) लेनिनग्रद, स्टेट यूनिवर्सिटी, लेनिनग्रद।
(105) ताशकन्द स्टेट यूनिवर्सिटी, ताशकन्द
(106) ताजिक स्टेट यूनिवर्सिटी, तजिक
(107) मास्को बोर्डिंग स्कूल नं. 19
(108) लेनिनगाद बोर्डिंग स्कूल नं. 4
(109) ताशकन्द स्कूल नं. 24

उक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो चुका होगा कि हिन्दी को सीमित दृष्टि से न देखें बल्कि इसे व्यापक रूप में देखें व भारत में ही नहीं अपितु विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान दें तथा स्वयं सोचें कि हिंदी जानने वालों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है। हिन्दी भाषा जानने वालों की दृष्टि से हिन्दी का विश्व में पहला स्थान है। विस्तृत जानकारी के लिए अनुबंध 1 एवं 2 देखें।

Annexure-1
(Base: 1981 Census)

HINDI KNOWING POPLATION IN THE WORLD

Sl. No.	Nation	Population	Knowing Hindi (%)	Total of Hindi Knowing People
1.	Argentina	27900000	3%	837000
2.	Bahrain	360000	5%	18000
3.	Bangladesh	93100000	30%	27930000
4.	Bhutan	1400000	30%	420000
5.	Brazil	124700000	1%	1247000
6.	Burma	35200000	5%	1760000
7.	Colambia	27030000	1%	270300
8.	Costarica	2300000	0.4%	9200
9.	Ecuador	8350000	25%	2087500
10.	El slavador	5000000	10%	500000
11.	Fiji	640000	50%	320000
12.	Guatemala	7200000	54%	3888000
13.	Guyana	850000	50%	425000
14.	Honduras	3900000	5%	195000
15.	Indonesia	154000000	1%	1540000
16.	Kuwait	1500000	13%	195000
17.	Malesia	14400000	9%	1296000
18.	Maurititus	970000	69%	669300
19.	Mexico	69400000	29%	20126000
20.	Mozambique	10600000	10%	1060000
21.	Nepal	15300000	90%	13770000
22.	Nicaragua	2400000	4%	96000
23.	Oman	910000	2%	18200
24.	Pakistan	89000000	87%	77430000
25.	Panama	2000000	6%	120000
26.	Paraguay	3300000	5%	165000
27.	Peru	18100000	15%	2715000
28.	Quatar	220000	7%	15400
29.	Saudi Arabia	10400000	5%	520000
30.	Seychelles	70000	2%	1400
31.	Singapore	2500000	6%	150000
32.	Sri Lanka	15100000	5%	755000
33.	Suriname	420000	37%	155400
34.	Thailand	48900000	3%	1467000
35.	United Arab Amir	980000	50%	490000
36.	Venezuela	15500000	2%	310000
37.	South Yemen	2000000	11%	220000
38.	USA	226504825	5%	11325241.25
39.	Zambia	600000	1%	6000
40.	USSR (1982)	268800000	1%	2688000
41.	Britain	55901000	5%	2795050
42.	China	1004000000	1%	10040000
43.	Canada	24100000	2%	482000
44.	Germany	61200000	1%	612000
45.	Japan	118000000	0.1%	118000
46	Italy	57400000	5%	2870000
47.	India	700000000	70%	490000000
48.	Other Countries of the World		Approx.	45872008.75
		3332405825	21.90609%	730000000

(1) Source : The World Almanac & Book of facts published by News Paper Enterprises Association INC, New York.
(2) Research Study by Dr. J.P. Nautiyal.

Annexure-

PRINCIPAL LANGUAGES OF THE WORLD

(In Millions

Sl. No.	Language	Total No. of Speakers	Place
1.	Hindi	730	1
2.	Mandarin China	726	2
3.	English	397	3
4.	Russian	274	4
5.	Spanish	258	5
6.	Arabic	155	6
7.	Portuguese	151	7
8.	Bengali	151	7
9.	German	119	8
10.	Japani	119	8
11.	Mlay (Indonesia)	115	9
12.	French	107	10
13.	Urdu	72	11
14.	Punjabi	66	12
15.	Italian	62	13
16.	Korean	60	14
17.	Telugu	60	14
18.	Tamil	59	15
19.	Marathi	57	16
20.	Cantonese (China)	55	17
21.	Wu (China)	51	18
22.	Javanese	49	19
23.	Vietanemese	45	20
24.	Turkish	45	20
25.	Min (China)	42	21
26.	Ukrainian	42	21
27.	Thal	39	22
28.	Plish	39	22
29.	Gujarathi	34	23
30.	Swahili (E. Africa)	32	24
31.	Kannada	32	24
32.	Malayalam	31	25
33.	Persian	28	25
34.	Oriya	27	27
35.	Burmese	26	26
36.	Tagalog (Phillippines)	26	28
37.	Hqansa (Africa)	23	29
38.	Romanian	23	29
39.	Hakka (China)	23	29
40.	Duch & Flemsh	20	30
41.	Shan (Burma)	20	30
42.	Pusthu	18	31
43.	Sudanies	17	32
44.	Assamese	15	33
45.	Yoruba (W. Africa)	14	34
46.	Magyar (Hungarian)	13	35
47.	Lbo (Africa)	12	36
48.	Czech	11	37
49.	Sinhalese	11	37
50.	Nepali	11	37
51.	Amharic (Ethopia)	10	38
52.	Uzbek	10	38
53.	Sindhi	10	38
54.	Fula (W. Africa)	10	38
55.	Swedish	10	38
56.	Greek	10	38

(1) Source : Sidney S. Culbert Guthrio Hall Ni University of Washington 1982.
(2) Research study by Dr. J.P. Nautiyal (1996).

भाषा संगम

तमिल कविता

नागरी लिप्यंतरण

गांधि! निन् नामम् वाळ्क

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

एट्टळ विरुंद वेदम
इदुवेन एडुत्तुक्काट्टि
ऐळुत्तल विरुंद गीतै
चेय्कैयिल एन्दी निंडु
वीट्टल विरुंद कादल
विरुंदोडु विरियच्चॅय्दु
विरुंदल विरुन्द नेशम
वियनपेरु नाट्टिक्कांकि
नाट्टळ विरुंद अन्वै
नानिलम मुळुदुम नीट्टि
नानिलत् तेवक्कुम "अन्वे
नाथनैक् काण्व" तेन्डु
काट्टिनै! चोल्ला लल्ल
ओळुक्कत्ताल करुणै वाळ्वाल
कांतिये वीशुम शांतक्
गांधि! निन् नामम् वाळ्क!

हिंदी अनुवाद

गांधी! तेरा नाम जगत में

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

वेद ग्रंथ तक जो थे सीमित
उन्हें आधुनिक तत्त्व दिखाया
गीता में जो लिपि-आबद्ध
आचरण में वह सत्य दिखाया

प्रेम भावना जो थी दो में
केवल घर में बँधी हुई
उसे देश के हर कोने में
फैलाया, बूँद नदी हुई

प्रेम अतिथि तक सीमित था जो
उसे बनाया राष्ट्र-संपत्ति
केवल एक राष्ट्र ही नहीं, बनाया
उसे विश्व की विकसित शक्ति

कहा "प्रेम ही ईश्वर दर्शन"
मार्ग दिखाया, शब्द नहीं कर चरित
हाँ, संयम, करुणामय जीवन
गांधी तेरा नाम जगत में पूरित

भारतेन्दु

जी॰ शंकर कुरुप्प

नागरी लिप्यंतरण

अम्पिळि, निन्नेप्पाले
माळिल् निन्निल्ला 'बाप्पु;'
तन्किपरनाटिङ्कले—
च्चेट्टमण्कुटिळ् तोरुम्
पुतिय वेळिच्चवुम्
धैर्यवुम् सौन्दर्यवुम्
पोतुविल वळर्त्तुवान्
स्वातन्त्र्यम् विटर्त्तुवान्
मलिननिलङ्ङ्ळिल्—
क्कण्णीरिन् कयङ्ङ्लि—
लेळिल मनुष्यर् चे—
न्नदिनाय् सदा चुट्टि ट्ट।
स्नेहपूर्ण्णमामुळ्ळम्
मात्भूद्:खत्तिन्टे
दाहकप्रसारत्ताल्
परितप्तमाकवे,
केवलसत्यत्तिने—
त्तिञ्ञा महानार्द्र—
जीवनिलहिंसये—
क्कोळुत्ति, यतिन् नाळम
संचलिक्काते चूषु,म्
नरक्कोटुँकाट्टिल्—
स्संचरिक्कयायार्क्कुम्
वेळिच्चम् कोटुक्कुवान्।
अम्पिळि, करयुक्;
कूरिरुट्टिने वेल्लान्
वेम्पुमा विश्वत्तिन्टे
मंगळविळक्किने,
तन्चराचरस्नेहम्
रिय्युम् विलोलमाम्
मण्चेरातिने मर—
न्नेरियुम् विळक्किने,
भूविनु यन्त्रत्तिन्टे
निषलाल् मरज्जेषुम्
जीवने वीप्टुम् काट्टि—
क्कोटुक्कुम् विळक्किने,
भेदबुद्धितन् करिम्
कोट्टकळ् कतिरिनाल्
भेदनम् चेयवान् तेळि—
ञ्ञळिटुम् विळक्किने,
पारिलेक्कृतघ्नत—
योक्केयुमोन्नायच्चेर्न्न
पाष् क्करमोन्नुण्टायी
मृतिमेलेरियुवान्।
पुलितन् कनल्वकण्णुक
सिंहत्तिन् रक्तार्द्रमाम्
वलिय नखङ्ङ्ळुम
सर्पत्तिन् विषप्पल्लुम
मानसत्तिंकल्स्सूक्षि—
यक्कुन्नोरु परिष्कृत—
मानवराणिप्पारिल्
मानवाराणिन्नुम् मर्त्यन्।
जीवितत्तिने स्वच्छ—
प्रार्थनयाक्किक्कोण्टु
भूविले विशुद्धियाम्
वाणोरश्शान्ताकारन्
हिन्दुवे, मुसलमाने—
श्शिखनेयोरि सत्य—
बिन्दुविन विकारमा...
पेल्लामेन्नोर्म्मिप्पिक्के,
सुन्दरसनातन—
चैतन्यत्तिलेय्क्केक—
स्पन्दततालवरूटे
हृत्तिनेयुयर्त्तवे,
तन्निली प्रपंचन्ते,
प्रपंचत्तिङ्कल्त्तन्ने—
त्तन्नेयुमापूर्ण्णमाय
दरिच्चु कैकूप्पुम्पोळ,
मानववर्ग्गत्तिन्टे
पापत्ताल् पिळ्न्निंता
मारिट्टम् चरित्रत्ति—
न्नेटुकळ् चुवन्नुपोय्।
पिळर्नू विश्वत्तिन्टे
शुभ्रमाम् हत्तुम्; रक्तोद्—
गळनाळ् ननञ्ञपोय्
निर्म्कलसान्ध्याम्बरम्।
पकलिन् मुखत्तिनि—
न्नटर्न्नू चोरत्तळिळ
परिपाटलमाय
भानुविम्बत्तिल्क्कूटि।
कालत्तिन् मिषियिले—
क्कञ्ञ्णुनीर्क्कणमायि—
क्काणुक, विरक्कुक—
यायी, अङ्ङेटेगोळम्।

राष्ट्रपिता

हिंदी अनुवाद
जी. शंकर कुरुप्प

हे चाँद,
तेरी भाँति
बापू कभी अछूते ऊपर नहीं रहे;
अपनी जन्मभूमि की
ग़रीब झोंपड़ियों में
नया आलोक,
नया धीरज
और नया सौन्दर्य पूरित करने के लिए,
स्वातन्त्रय भावना को विकसित करने के लिए,
जीवन के मलिन तटों पर
आँसू के गहरे तलों में
अकिंचन दीन मानवों के साथ ही
वह सदा घूमते रहे।
जन्मभूमि के दुःख का
दाहक ताप पाकर
जब वह स्नेहपूर्ण हृदय
झुलस गया, तो
एकान्त सत्य की खोज में निरत
उस महात्मा ने मानवों की आर्द्र आत्मा में
अहिंसा की ज्योति जगायी
जिसकी लौ चारों ओर के नारकीय चण्डवात में भी
अचल रहती है, और
सबको प्रकाश देने के लिए
चारों ओर जल रही है।

हे चाँद
करो रुदन,
क्योंकि
आज एक पापी हाथ
समस्त कृतघ्नता का पुँजीभूत रूप
प्रस्तुत हुआ पटक देने के लिए मृत्यु-शिला पर
विश्व के उस मंगल-दीप को,
जो आतुर था
घोर अन्धकार को ध्वस्त करने के लिए;
जो परिपूर्ण था
चराचर के प्रेम से,
जो जल रहा था
अपनी क्षीण काया की ऊपेक्षा कर,
ज्योतित था जो
इसलिए कि
पृथ्वी को दिखा दे फिर से
यन्त्रों की परछाई में छिपी उसकी आत्मा को,
जो था अत्यन्त प्रोज्जवलित
अपनी किरणों से छिन्न-भिन्न करने के लिए
भेद-भावना के तमस् परकोटों को।

अपने अन्तरंग में पालते हैं
ये सभ्य मानव
बाघ की जलती हुई आँख
सिंह के रक्त भरे नख
सांप के विषैले दाँत,
सचमुच आज का मानव पशु ही तो है।
वह सौम्याकार,
जिसने
जीवन को बनाया एक पावन प्रार्थना
और विराजित हुआ जो
भूमि की विशुध्दि के रूप में
हिन्दू, मुसलमान, सिख—सब को सिखाया
कि हैं सब
एक ही सत्यकणिका के विविध अंश,
सुन्दर सनातन चैतन्य की ओर
एक ही स्पन्दन से उनके चित्त को ऊर्ध्वमुखी किया,
जब वह अपने में
सारा संसार
और सारे संसार में
अपने को देखकर
हाथ जोड़ वन्दना कर रहे थे,
तो मानव वर्ग के पापों ने
उनका हृदय विदीर्ण कर डाला;
इतिहास के पन्ने लाल हो गये!
पट गया
विश्व का निर्मल वक्ष
रक्त बहा इतना कि
विमल सन्धयाकालीन आकाश
भीग गया।
दिवस के मुख से
ढल पड़ा सौर-बिम्ब
रक्त की बूँद-सा!
लो,
काल के आनन पर ढुलके अश्रुकण-सा
हमारा यह भूगोल
अभी भी कम्पित
दिखायी देता है

पुस्तक-समीक्षा

कच्ची मिट्टी के लोग—एक दृष्टि

[पुस्तक: कच्ची मिट्टी के लोग, लेखिका: विजया गोयल, प्रकाशक: आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, मूल्य: 50.00]

हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य की विविध विधाओं की चर्चित लेखका श्रीमती विजया गोयल द्वारा प्रणीत कथा-संग्रह ''कच्ची मिट्टी के लोग'' 15 कहानियों का एक ऐसा महकता बहुरंगी गुलदस्ता है जिसके हर फूल का अपना एक अलग रंग है, अपनी एक विशिष्ट सुगन्ध है। इस संग्रह की हर कहानी पाठकों की अंतर्भावनाओं को गहरे स्पर्श करती है और उनके लिये एक पृथक संदेश छोड़ती है।

''लौट नहीं पाऊंगी'' कहानी में जहां नारियों को धैर्यशील और सहिष्णु बनने की सीख दी गई है वहीं ''अपना घर अपना बेटा'' कहानी आज के पुरोहितों की लोभवृत्ति और आज के समाज द्वारा बेमन से पुरानी रीतियों व रूढ़ियों के अनुपालन की औपचारिकताओं पर तीखा प्रहार है। आज के सफेदपोश धनाढ्य समाज के परिवार की अन्तर्कथा है यह कहानी।

''मोक्ष'' कहानी में बाबा एक दार्शनिक पात्र है, जिसकी सादगी, सरलता और भावुकता आकर्षित करती है। उनका स्वदेश प्रेम अनुकरणीय है जिसके लिये वह अपनी प्राण चहेती जीवन संगिनी ''रोज'' का भी त्याग कर देते हैं ओर जीवन की सान्ध्यबेला तक उसके विदेश से वापस आने की प्रतीक्षा करते हैं।

''शिव का अर्धनारीश्वर रूप'' एक ऐसी उत्कृष्ट कहानी है जिसमें भाषा सौन्दर्य और अभिव्यक्ति शैली देखते ही बनती है। कई वाक्य तो लेखनी से निकल कर हृदय को सीधे छूते हैं। इस कहानी में मैरीया और गीता के अंतरंग संस्मरण मन को अनायास प्रभावित करते हैं।

''राधिया पंडिताइन'' एक ऐसी सशक्त कहानी है जिसमें एक बाल विधवा राधिया पंडिताइन की विद्वता, उसका चट्टान-सा-दृढ़ चरित्र, आकर्षक व्यक्तित्व और नारी हृदय की सहजता जहां एक ओर मन मानस में पवित्र भाव जागृत करती है, वहीं दूसरी ओर उसकी अन्तर्व्यथा हर किसी को मर्माहत करती है। वह श्रद्धा और सहानुभूति की एक जीवन्त दैवी प्रतिमा है। उसके देहावसान की खबर लेखिका को शोक सागर में डुबो देती है। कहानी का एक-एक वाक्य मर्मस्पर्शी है।

कुल मिलाकर ''कच्ची मिट्टी के लोग'' एक पठनीय, रोचक ओर जीवन के अनुभवों से अनुस्पूत एक शिक्षाप्रद कथा संग्रह है। इसके पात्र काल्पनिक या ऐतिहासिक न होकर यथार्थ की धरती से जुड़े जीवन्त मानव हैं। उनका हास्य व रूदन, उनकी अनुभूतियां-अन्तर्भावनाएं, उनके जीवन की दास्ता हमें प्रभावित करती है। इस संग्रह की कहानियां अपने उद्देश्य को व्यक्त करने में सफल रही हैं। सुधी पाठक इसे अवश्य पसन्द करेंगे।

— विश्वनाथ प्रसाद कैलखुरी ''शास्त्री''

रंग मंच के पांच रंग

[पुस्तक : रंगमंच के पांच रंग, लेखक: रिफ़अत सरोश, प्रकाशक नवरंग किताब घर, ए-80, सैक्टर-27, नोएडा-201301 पृष्ठ: 112 मूल्य: 100/-रु०, प्रथम संस्करण: सितम्बर, 1997]।

उर्दू साहित्यकार रिफ़अत सरोश उर्दू के वरिष्ठ शायर, लेखक तथ आलोचक हैं। उनकी तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिन कविता संग्रह, नाटक,उपन्यास तथा आत्म कथा शामिल हैं। प्रस्तुत कृ हिंदी में उनका पहला संकलन है जिसमें पांच नृत्य नाटिकाएं: अर्थ, स्वराज्य स्त्री, प्रवीण राय और ऋतुराज हैं।

''अर्थ'' में नृत्य नाटिका में सृष्टि का मानवीकरण है। ब्रह्मा के समक्ष सृष्टि नर्तन करती है। दो साधुओं के मुख से ओउम की ध्वनि उच्चारि होती है जिसमें ईश्वर के अनेकार्थ सन्निहित हैं। इस नाटिका में सूफ संतों-सी वाणी मुखरित होती है, ब्रह्मा सृष्टि में प्राण प्रतिष्ठा करते हैं औ यों वसुन्धरा को जीवन मिल जाता है जिसमें जिन्दगी नाना रूपों में प्रक होती है। विभिन्न संस्कृतियां जन्मती हैं और अनेक मत-मतान्तर, धर्मों मजहबों का उदय होता है। अनेकता में एकता और आत्मा-परमात्मा क मिलन कवि का अभीष्ट है। वह अपनी कला की साधना को आराधना जोड़ता है तथा समाज को एक चिंतन-बिन्दु पर लाकर खड़ा कर देता है

''स्वराज्य'' में युग पुरुष पात्र की कल्पना एक और विचार देती है। यु पुरुष समय का सूचक तथा वाचक है जिसके माध्यम से एक पूरी शताब्द का सृजन परदे पर उतरता है। सृजन यानि इकबाल, टैगोर, भारती, काज नजरूल इस्लाम तथा मैथिलीशरण गुप्त के राष्ट्रीय स्वर सामूहिक रूप प्रकट होते हैं। इस नृत्य नाटिका में वर्तमान को स्वरबद्ध किया गया है आजादी के इतिहास की झलक है।

''स्त्री'' में नारी-सुलभ सौन्दर्य का चित्रण है जो पुरुष को अनायास अपनी ओर आकर्षित करता है। वह उसे देखकर चकित होता है। ए आसक्ति प्रस्फुटित होती है।

"प्रवीण राय" एक ऐतिहासिक ओपेरा है। ओरछा नरेश इन्द्रजीत नृत्य-संगीत की दुनिया में आकंठ डूबे हुए हैं। प्रवीण राय उसके दरबार में श्रेष्ठ नर्तकी है जिसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई है। अकबर बादशाह को जब इस बात का पता चलता है तो वह अपने दूतों को ओरछा-नरेश के पास भेजकर प्रवीण राय को उसकी मर्जी के खिलाफ अपने दरबार में बुला लेता है। नर्तकी जब यह कहती है कि क्या आप राजा होकर जूठे पत्तल में खाना खाने को तैयार हैं तो मुगल सम्राट को आत्मग्लानि होती है और वह सम्मान के साथ उसे वापस भेज देता है।

पांचवी नृत्य नाटिका "ऋतुराज" है जो प्रकृति के अद्‌भुत सौन्दर्य तथा बसंत ऋतु के सांस्कृतिक पटल पर अबीर गुलाल को आमंत्रण देता है। पर्वो को नया रूप मिलता है।

लेखक ने सम्प्रेषण की नव तकनीक के द्वारा भारत की राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत को शब्दों में उतारने का प्रयास किया हैं।

—शांति कुमार स्याल

नया मन्वंतर

(प्रदूषण पर लिखा गया एक नाटक)

[पुस्तक: नया मन्वंतर, लेखक: चिरंजीत, प्रकाशक: आर्य बुक डिपो, 30, नाई वाला, करोलबाग, नई दिल्ली, पृष्ठ: 104, मूल्य: 50 रुपए, वर्ष 1997]

"नया मन्वंतर" प्रसिद्ध नाटककार पद्मश्री चिरंजीत का नवीनतम पूर्णकालिक नाटक है। चिरंजीत के अब तक के प्राय: सभी नाटक देश की किसी न किसी ज्वलंत राजनीतिक और सामाजिक समस्या से दो-चार होते रहे हैं। वे राष्ट्रीय संकट की किसी न किसी गंभीर स्थिति का उत्प्रेरक उद्‌बोधन के साथ रेखांकित करते हैं। "ढोल की पोल" भारत-पाक युद्ध के समय इनका सबसे लोकप्रिय धारावाहिक रेडियो नाटक "रेडियो झूठिस्तान" था, जिसे सुनने के लिए श्रोता बेताब रहते थे। राष्ट्रीय नाटको की इसी श्रृंखला में उनके अब तक डेढ़ दर्जन छोटे-बड़े नाटक प्रकाशित हो चुके हैं, किन्तु यह नाटक विषयवस्तु की दृष्टि से सर्वथा भिन्न हैं। इसमें भारत के ही नहीं समस्त मानवता के सामने प्रदूषण की विकट समस्या को लेकर कल्पना के आधार पर नाटक की रचना की गई है। आज देश प्रदूषण के गम्भीर संकट से गुजर रहा है, जिसे हमने स्वयं स्वार्थवश वैज्ञानिक उपलब्धियों की मृगतृष्णा में उत्पन्न किया है। हम प्रकृति और पर्यावरण के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। प्रस्तुत नाटक का कथानक पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तथा पृथ्वी के एक उपग्रह तक फैला हुआ है।

नाटककार ने एक सृष्टि की रचना और उसके अब तक के 7-मन्वंतरों से संबंधित पौराणिक विषयों को आधार बना कर नए युग अर्थात् आगामी मन्वंतर की कल्पना की है जो प्रदूषण रहित होगा। "मन्वंतर" दो मनुओं के बीच के अन्तर के समय को कहते हैं, इसलिए "मनु और जलाप्लावन की कल्पना भी इसमें की गई है। कामायनी का उल्लेख भी इसी कथानक को प्रासंगिक बनाने के लिए हुआ है। पूरा कथानक पौराणिक और वैज्ञानिक समन्वय के साथ आज के विकट यथार्थ को रेखांकित करता है। नाटककार अपने उद्‌देश्य को स्पष्ट करते हुए कहता है—"कामायनी की श्रद्धा को मैंने कामदेव की नहीं, प्रकृति की बेटी माना है और वह अपने आप इस नाटक की मुख्य पात्र बन गई है।"

नाटक में तीन अंक हैं। नाटककार ने आधुनिक अमूर्त रंगमंच की तकनीक के साथ परम्परागत नाटकों की सुत्रधार प्रणाली को भी अपनाया है। आरंभ में भयंकर प्रदूषण से ग्रस्त लोग "पृथ्वीपति" (पृथ्वीलोक की सरकार के महाधिनायक) की बैठक में दूषित पर्यावरण से उत्पन्न संकट पर विचार करते हैं। एक अंतरिक्ष वैज्ञानिक प्रो॰ दिवाकर को चन्द्रमा से अमृत घट लाने के लिए भेजते हैं। उनका यान चन्द्रमा पर न जाकर यंत्रलोक में उतरता है। वहां धातु की चिकनी समतल धरती वाले इस लोक में पृथ्वी जैसे स्त्री-पुरुष मिलते हैं, जो इस प्रकार से रोबोट ही हैं। वहां पानी नहीं है। दिवाकर उसे कृत्रिम रूप में बनाने के प्रयोग करता है। वह वहां न रहकर वापस आता है तो इस बीच भयंकर प्रदूषण के कारण पृथ्वी जलने लगती है। मानवता नष्ट हो जाती है। फिर, जल प्लावन आता है और गिनेचुने लोग ही बचे रहते हैं, जो फिर से सृष्टि का निर्माण करते हैं।

नाटक में प्रकृति की रक्षा के संबंध में वैज्ञानिक पात्र कहता है, "प्रकृति हमारी मां है" भौतिक सुख-समृद्धि के मोह में प्रदूषण फैलाकर हमने अपनी मां का गला घोंटा है। "बीज से उत्पन्न हाने वाले वृक्ष में भी जीव होता है। इसलिए वृक्ष को काटना भी एक प्रकार की जीव हत्या है।" अमृत के संबंध में उसका निष्कर्म है कि मानवीय संवेदना से जुड़ा हुआ स्वच्छ पर्यावरण ही वास्तविक अमृत है। "नाटक का एक पात्र वृहस्पति कहता है—'सुनो, मैं विज्ञान विरोधी नहीं हूं—हां, हृदय-हीन वैज्ञानिकता और अमानवीय यांत्रिकता को मैं अनिष्टकार मानता हूं।'

नाटक का अन्त इस आर्शीवाद से होता है—
"शुभ मंगल हो, नव मन्वन्तर,
मनुज प्रकृति हों एकाकार
फिर न प्रदूषण से पीड़ित हों।
धरती मां नूतन संसार"

कल्पनाप्रधान इस नाटक में कई प्रसंग ऐसे भी हैं जिन्हें शायद तार्किक दृष्टि सुसंगत नहीं ठहराया जा सके, जैसे यांत्रिक लोक में सभी लोग हिन्दी बोलते हैं, जो यंत्र मानव होते हुए भी शारीरिक-मानसिक और व्यावहारिक दृष्टि से बिल्कुल इंसान हैं, पृथ्वी का वैज्ञानिक भी उसमें अन्तर नहीं कर सकता और वहां की रानी के प्रेम पाश में फंश गया।

कुल मिलाकर हिंदी में प्रदूषण को लेकर लिखा गया यह अपने प्रकार का पहला नाटक है जो आज की इस ज्वलंत समस्या को मानवता के विनाश के लिए अब तक का सबसे भयंकर संकट मानता है। नाटककार इसके प्रस्तुतिकरण में सफल भी रहा है। इस अछूते किन्तु समीचीन विषय पर लेखनी उठाकर नाटककार ने निश्चय ही मानवता की सेवा की है। मैं उन्हें बधाई देता हूं।

—डा॰ परमानन्द पांचाल
232-ए, पाकेट-1, फेज-1 मयूर विहार, दिल्ली-110091

नाकाबन्दी की बगावत

[पुस्तक: नाकाबन्दी की बगावत, लेखक: शरत, प्रकाशक: कोणार्क पब्लिशर्स प्रा० लि०, ए-149, मेन विकास मार्ग, दिल्ली-10092, मूल्य: 100 रुपए]

परम्परा के अनुसार छन्द ने ही कविता को संवारा परन्तु परिवर्तन की आवश्यकता ने सदा ही सांचे छोड़ सांच पर जोर दिया। अगर आदि कवि बाल्मीकि ने अनुष्ठप: छन्द को काव्य की जरूरत माना तो परवर्ती कवियों ने तुकाना की अनिवार्यता मानी। पर इसे भी विद्रोह का सामना करना पड़ा। काव्य के क्षेत्र में विद्रोह की ध्वनि तभी से निनानिद हो उठी जब छन्द के बन्धन टूटने की आहट सुनाई पड़ने लगी। छन्द और तुक की नाकाबन्दी की बगावत की यह पहली दस्तक थी। कवि के भाव अब मान्य सांचों में कट-छंट कर निकलने के बजाए अपने मौलिक परिवेश में उजागर होने लगे। यह एक क्रान्तिकारी परिवर्तन था काव्य के कला पक्ष का। कविता अपने परिवेश, अनुभूतियों और भावों से अधिक जुड़ने लगी। वैयक्तिकता को प्रश्रय मिलने लगा। वैसे भी प्रत्येक कवि की रचना की भूमिका अन्य कवि की काव्य रचना से भिन्न होती है। फलस्वरूप काव्य का स्वरूप ही नहीं उसकी जमीन भी बदल जाती है। हिन्दी काव्य में यह रूप वैयक्तिता से फैलकरआंचलिकता में आया। आज विश्व काव्य के परिप्रेक्ष्य में यह उजागर हुआ है। युगधर्म के बदलने पर प्राचीन संकेत जीर्ण पड़ जाते हैं। कवि के लिए नई भाषा, नए प्रतरकों और संकेतों का खोजना आवश्यक हो जाता है। इसी की एक बानगी हमें शरत की ''नाकाबन्दी की बगावत'' में देखने की मिलती है।

प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि की छोटी-बड़ी 53 कविताएं संकलित हैं। कुछ कविताएं क्षणिकाएं हैं जैसे, मां शीर्षक वाली में तो मात्र दस शब्द ही हैं:—

चिल्लाना
बुरी बात है
बच्चा
चिल्लाने पर
मां
बेचैन
रहती है। —पृष्ठ—15

इसी प्रकार 'घोड़े की खरीद' 'दोनों प्रश्नवाचक', 'फेरन', 'कांचघर' और 'उपक्रम' जैसी लघु कविताएं हैं जिनके पीछे भावों जबर्दस्त ओर झंझावात सर उठाते दीख पड़ते हैं। शरत की ये छोटी कविताएं ''नानक के तीर'' की तरह पैनी हैं। फेरन शब्द हमारे लिए अपरिचित भले ही हो इसके परिवेश में जो सामाजिकता का चित्रण हे वह परिचितों के मन में ऐसा तादात्मय उत्पन्न करता है कि देखते ही बनता है। इसी प्रकार ''दोना'' कविता में एक व्यापक और साझी अनुभूति को शब्दों का जामा पहना कर कवि ने एक कोतुहल उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है। ''कांच घर'' में गापनीयता की पारदर्शक परिवेश में किस खूबी से रक्षा की है, देखिए—

यह सही है/कांच घर/पारदर्शिता की/सुविधा के मार्फत/गापनीयता संवाद के लिए/कारगर/हो सकते हैं—पृष्ठ 62

कवि के पास कहने के लिए बहुत कुछ है। परिणामस्वरूप वह कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहना चाहता है। सामान्य से सामान्य घटनाएं, वस्तुएं, समस्याएं, क्षणिक अनुभूतियां एवं संवेदनाएं आदि जटिल वास्तविकताओं से अर्जित यथार्थपरक जीवनानुभवों से टकराकर तथा कवि प्रतिभा से जीवन रस पाकर जीवन्त आकाार ग्रहण करती है। पाठक सामान्य सी प्रतीत हाने वाली गंभीर कविताओं में ज्यों-ज्यों प्रवेश पाते हैं त्यों-तयों वे उनमें रची-बसी विभिन्न अर्थ-छवियों से प्रभावित हाने लगते हैं। शरत् की कविताओं में पाठकों की निकटता उनकी चेतना के परिष्कार संस्कार में सहायक हैं। वे आम जन समुदाय को प्रतिपक्षी सत्ता के खिलाफ जागरूक कर मजबूती से मोर्चा संभालने के लिए तैयार करती हैं। उनके बागी स्वर के दर्शन सहज ही उनके काव्य में मिलते हैं।

काव्य भाषा को लाक्षणिकता प्रदान करने के लिए कवि ने कुछ नए मुहावरे और उक्तियां गढ़ी हैं उनमें औरत की ऐनक का इस्तेमाल करना, अपनी उंगलियों की ऊंचाई मालूम करना, अपने-अपने सूई धागे से कुछ न कुछ सिलने में व्यस्त रहना, खाल को हरकत में शामिल करना, ओछी आदतों के हवाले होने, नजरों के पलड़े पर रखना, वारदात को बैलून की तरह हवा में छोड़ना, बच्चे के मन में डर के द्वारपाल तैनात करना। समुद्र को पीछे ढकेलना और पहाड़ को समतल करना आदि इसके प्रमाण हैं। कवि इस प्रकार काव्य भाषा का नया व्याकरण रचने में व्यस्त है। इसमें अनेक अपरिचित शब्द भी पाठकों को मिले हैं। ऐसी रचनाओं से हिन्दी की संकीर्णता की नाकाबन्दी भी टूट रही है और हिन्दी काव्य को व्यापक आयाम मिल रहे हैं जो अब तक गंगा यमुना के दोआवे तक सीमित मान्यताओं से बाहर निकल कर व्यापक जन समूह में प्रवेश कर रही है।

हिन्दी में ऐसे युवा रचनाकारों का स्वागत है जो इसे व्यापक आधार प्रदान करें और हिन्दी साहित्य राष्ट्रीय सीमाओं तक ही नहीं, विश्व में दूर-दूर तक बसे भारतीयों के लिए भी रसास्वादन का साधन बन सके।

यह बानगी, आशा है, पाठकों में अवश्य स्वीकार्य होगी और फलत: हिन्दी काव्य जगत की समृद्धि में भी अपना अंगदान कर सकेगी।

—डा० परमानन्द पांचाल
232-ए, पाकेट-1, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली-1100091

काव्य में कृष्ण चरित

[पुस्तक ; काव्य में कृष्णचरित (आलोचना), लेखक: डॉ जयन्ती प्रसाद मिश्र, प्रकाशन: श्याम प्रकाशन, सी-2 कंचन अपार्टमेंटस, गीता कालोनी, दिल्ली 1996 संस्करण-पृष्ठ 366, मूल्य 130 रूपये]

'काव्य में कृष्णचरित' डॉ. जयन्ती प्रसाद मिश्र की एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक हैं, जिसमें हिन्दी में रचित समग्र कृष्णकाव्य का सर्वेक्षण तथा मूल्याकन किया गया है। भारत में कृष्णचरित के आधार पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिंदी में अनेक काव्य लिखे गए हैं। वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण तथा वेदव्यास कृत महाभारत' संस्कृत के ऐसे अमर ग्रन्थ हैं, जिन्होंने भारतीय संस्कृति के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य को भी युगों तक प्रभावित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. मिश्र ने यद्यपि हिन्दी में लिखित कृष्ण काव्यों का विवरण मुख्य रूप से प्रस्तुत किया है, पर आरंभ में उन्होंने संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में रचित प्रमुख कृष्ण काव्यों का विवरण भी दिया है, जिससे लगता है कि उन्होंने काव्य में कृष्ण चरित की पुरानी परम्परा का अनुसंधान करके उस के विकास को आधुनिक काल तक खोजा है।

प्रश्न किया है कि कृष्णचरित में ऐसा क्या है, जिसके अनुसंधान की आधुनिक काल में भी आवश्यकता बनी हुई है ? संम्भव है कि कुछ लोग कृष्णचरित पर केन्द्रित काव्यों और उन पर लिखी आलोचनात्मक पुस्तकों को रूढ़िवादी लेखन की संज्ञा देकर आधुनिक युग में उन की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाएं। आधुनिकता का दम्भ पालने वाले कभी-कभी यह कहते सुने जाते हैं कि सूरदास, मीरा, रसखान आदि की रचनाओं को आजकल पढ़ाने की क्या आवश्यकता है। विचित्र बात यह है कि लोग परम्परा की दुहाई देकर उस से जुड़ना भी चाहते हैं और उनकी आधुनिक रुचि से मेल न खाने वाली हर वस्तु तुरन्त रूढ़िवादी कह कर तिरस्कृत कर दी जाती है। उनका परम्परा के बिना काम भी नहीं चलता और उनका आधुनिकतामोह भी उन्हें तंग करता है। परम्परा को ठीक तरह से जानने की आवश्यकता है और उस साहित्य के माध्याम से गहराई से जाना जा सकता है। कृष्णचरित पर लिखे गये काव्य भारतीय परम्परा का एक अटूट हिस्सा हैं, भले ही वह समग्र परम्परा नहीं है। डॉ. जयन्ती प्रसाद मिश्र के प्रस्तुत ग्रन्थ से भारतीय परम्परा के एक अटूट हिस्से को जानने में मदद मिलती है। यही इसकी आधुनिक युग में प्रासंगिकता है।

कृष्ण ऐतिहासिक व्यक्ति हो या न हों, पर कृष्णचरित में जो जादू है, वह सदियों से भारतीय रचनाकारों के सिर पर चढ़कर बोलता आया है और बोल रहा है। डॉ० मिश्र ने श्रीकृष्ण का आविर्भाव ईसा के लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व माना है अर्थात आज से लगभग पाँच हज़ार वर्ष पूर्व। प्रश्न ऐतिहासिकता का नहीं है। किसी समाज में जो विश्वास सदियों से प्रचलित होते हैं, वे ऐतिहासिकता का अतिक्रमण कर जाते हैं। इस का अर्थ यह नहीं कि इतिहास की खोज न की जाए। इतिहास की खोज ऐतिहासिक आधारों पर अवश्य की जाए। पर अभी तक इतिहासकार और पुरातत्वविद अन्तिम रूप से यह नहीं खोज सके हैं कि मानव जाति कितनी पुरानी है। पर इतिहास के धुनी यदि यह खोजना चाहें कि कृष्ण ऐतिहासिक व्यक्ति हैं या नहीं, इस से उन का इतिहास प्रेम तो प्रकट होता है, पर परम्परा के बारे में उन का ज्ञान संदिग्ध हो जाता है। परम्परा में अतीत का इतिहास पर्यावाची शब्द नहीं हैं। परम्परा में ऐसा भी बहुत कुछ शामिल होता है जो ऐतिहासिक नहीं होता। भारतीय परम्परा में कृष्णचरित परम्परा का वह भाग है जो ऐतिहासिकता का अतिक्रमण करता है, लेकिन फिर भी कृष्ण की श्रृंगारिकता, उन की मानवीय लीलाएं, उनकी राजनीतिक सूझबूझ, उनका नायकत्व, न्याय के प्रति उन की पक्षधरता आदि कृष्णचरित की अनेक विशेषताएं भारतीय जनता को सदियों से प्रभावित करती आ रहीं हैं। कृष्णचरित का जादू इन्हीं लौकिक बातों में निहित है। कृष्ण ऐसा नायक है जो अलौकिक की तुलना में लौकिक अधिक है, यद्यपि आस्तिकों के लिए वह अलौकिक परब्रह्म है। इसीलिए मैंने ऊपर लिखा है कि इस पुस्तक से भारतीय परम्परा के एक भाग को समझने में मदद मिलती है।

हिन्दी में कृष्णचरित काव्यों में कृष्णचरित काव्यों की परम्परा कितनी पुरानी है ? इस बारे में डा. मिश्र ने राहुल साकृत्यायन तथा राम कुमार वर्मा के मतों के आधार पर हिन्दी के आदि कवि स्वयंभू की कृति रिट्ठेरे मिचरिउ (अर्थात हरिवंश पुराण) से कृष्णचरित काव्यों का आरम्भ माना है, पर उन्होंने न तो स्वयंभू के काल का उल्लेख किया है और न उन की कृति के रचनाकाल का पर उन का यह कहना कि स्वयंभू के बाद चौदहवीं सदी तक कोई उल्लेखनीय कृष्ण प्रबन्धकृति नहीं मिलती—"(पृष्ठ 17) मुझे विश्वसनीय नहीं लगता। यह उनके अध्ययन की सीमा हो सकती है, पर कृष्ण जैसे लोकप्रिय लौकिक नायक पर हिन्दी में पांच छः सौ वर्षों तक कोई उल्लेखनीय रचना नहीं हुई, मुझे इस पर विश्वास नहीं होता।

लेखक ने चौदहवीं सदी से बीसवीं सदी तक कृष्णकाव्यों की अनवरत परम्परा को एक पुस्तक में समेटना किसी भी शोधार्थी के लिए एक दुस्साहसपूर्ण कार्य हो सकता है, पर डा. जयन्ती प्रसाद मिश्र ने यह दुस्साहसपूर्ण कार्य बड़े साहस और धैर्य के साथ किया है। पर जैसाकि अपेक्षित था सात सौ वर्षों की इस साहित्य परम्परा तक वे कतरा कर निकल गये हैं अथवा उन का संक्षिप्त उल्लेख भर कर पाये हैं।

सधार कवि कृत 'प्रद्युमनचरित' (सन् 1354 ई0 में लिखित) से शुरु करके श्याम सुन्दर लाल दीक्षित द्वारा सन् 1947 ई0 में रचित 'श्याम सन्देश' तक चली कृष्ण काव्यों की परम्परा का विवेचन डा0 मिश्र ने किया है। सन् 1947 के बाद लिखित कृष्ण काव्य उनके अध्ययन क्षेत्र से बाहर होने के कारण छोड़ दिये गये हैं। पर विवेचित कृतियों मे हिन्दी की अनेक प्रसिद्ध तथा चर्चित कृतियां सम्मिलित हैं। कुछ की यहां चर्चा करना आवश्यक है। विशिष्ट कृतियों में 'सूरसागर' (सूरदास), भाषा दशमस्कन्ध, (नन्ददास) रास पंचाध्यायी (नन्ददास), भँवरगीत (नन्ददास) सुदामा चरित्र (नरोत्तमदास) सुदामाचरित (गंग कवि), रासपंचाध्यायी (रहीम), श्याम सनेही (आलम), सुदामा चरित (आलम), ब्रजेन्द्र विनोद (सोमनाथ) संग्राम-सार (कुलपति मिश्र), रासपंचाध्यायी (सोमनाथ), श्री कृष्ण विलास (सीता राम वर्मा), कृष्णायन (द्वारका प्रसाद मिश्र), प्रियप्रवास (हरिऔध) कृष्णचरित (नज़ीर) द्वापर (मैथिलीशरण), कृष्णायन (राधेश्याम कथावाचक), जयद्रथ वध (मैथिलीशरण), भ्रमरदूत (सत्य नारायण कविरत्न), उद्धव शतक (जगन्नाथ रत्नाकर) उद्धवशतक (रमा शुक्ल रसाल) आदि उल्लेख्य हैं। ये रचनाएं हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल, रीति काल आधुनिककाल से सम्बन्धित हैं। इन की भाषा ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली है, पर अधिकांश कृष्णकाव्य में लिखे गये हैं।

—डॉ. सुधेश

1335, पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067

स्पर्श

[पुस्तक: स्पर्श, लेखिका: आराधना चौधरी, मुद्रक: कोहली प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली, फैक्स-3734471, मूल्य: 65 रुपए।]

सुश्री आराधना चोधरी लेखन के क्षेत्र में ही नहीं अपितु राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में भी अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। 'स्पर्श' उनकी पहली कृति नहीं हैं। इससे पहले भी उनके अनेक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इस अनुभव की झलक उनके 'स्पर्श' उपन्यास में देखने को मिलती है। उपन्यास का कथा शिल्प, भाषा, शैली आदि संभी पाठक को उसे आद्योपांत पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

यह उपन्यास आचार्य वल्लभचार्य द्वारा प्रतिपादित पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों पर आधारित है। इसका कथानक 1641 के आस-पास की घटनाओं को लेकर बुना गया है। कृष्ण तृतीया के अवसर पर राजकुमारी रूपमंजरी की अंतरंग सखी इंदुमती द्वारा श्रद्धालुओं के समक्ष पृष्ठभूमि के रूप में कथा सुनाई गई है। वृद्धा संन्यासिन इन्दुमती स्वयं सभी घटनाओं की साक्षी है। घटनाक्रम वृन्दावन-मथुरा के आसपास घूमता है।

'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' तथा सोरो से प्राप्त रामचरितमानस की हस्तलिखित प्रति को आधार मानकर उपन्यासकार ने महाकवि तुलसीदास और नन्ददास को चचेरा भाई कहा है। ऐतिहासिकता में गोबरदास तथा सम्राट अकबर के सदाचारी व्यक्तित्व का पुट देकर सुश्री आराधना चौधरी ने सूझबूझ का परिचय दिया है।

समीक्षित कृति कुल 17 भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग पाठक को आगे के लिए कुछ न कुछ सोचने के लिए मजबूर कर देता है। उपन्यास से पाठक के मन में एक ओर जहां प्रेम, ईश्वर-भक्ति आदि भावनाएं जागृत होती हैं, वहीं दूसरी ओर उसमें त्याग की भावना भी प्रबल होती है। इसे 'पोथी जल विसर्जन' भाग में स्पस्ट रूप से देखा जा सकता है।

कथा प्रवाह, रोचक घटनाएं और संवेदनात्मक उद्देश्य के लिए लेखिका बधाई की पात्र हैं।

—नेत्र सिंह रावत

स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा भागवत ठाकुर

[पुस्तक—स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा भागवत ठाकुर, लेखक कमलेश्वरी प्रसाद मंडल, प्रकाशक: कौशिकी क्षेत्र हिन्दी साहित सम्मेलन मधेपुरा, बिहार, पृष्ठ संख्या:30, मूल्य: 10 रुपए])

श्री के.पी. मंडल द्वारा लिखित 'स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा भागवत ठाकुर' हालांकि एक लघु पुस्तिका है लेकिन इस पुस्तक अहमीयता इस बात से जाहिर होती है कि लेखक ने बिहार प्रान्त के मधेपु जिलान्तर्गत पिछला कोशी क्षेत्र के उदाकिशुनगंज अनुमंडल के एक छो सा गांव के अजस्त स्वतंत्रता सेनानी श्री भागवत ठाकुर के माध्यम से अंग्रे की गुलामी से देश की मुक्ति के लिये किये गये लोमहर्षक की कहानी अभिव्यक्ति है। इसमें ग्रामीण संघर्ष के माध्यम से सम्पूर्ण भारत की तस्व खिंचने के साथ-साथ अंधेरे में विलीन उन स्वतंत्रता सेनानियों की अ कीर्ति को उजागर करने का हर संभव प्रयास किया गया है जिनकी भक्ति, दिलेरी, अदम्य उत्साह, त्याग, समर्पण, निष्ठा एवं बलिदान ने स्वतं संग्राम की जिद्दोजहद की निर्णायक लड़ाई लड़ने में कहीं कोई कसर बा नहीं रखी और जिन्हें देश तो क्या खुद उनके गांव समाज के लोग भी न जान पाये।

श्री भागवत ठाकुर एक छोटे से अख्यात कुरसंडी गांव के अति नि परिवार में जन्म लिये, पले, बढ़े। ज्यादा शिक्षा भी नहीं पा सके। एक अ पिछड़ी जाति नाई कुल में आय गरीबी एवं मजदूरी के थपेड़ों को स 1024 ई० से ही स्वाधीनता आंदोलन के प्रति जागरूक एवं समर्पित हो कांग्रेस से जुड़े। 1929 ई० में गांधी जी के आव्हान पर कलकत्ता में वि वस्त्र की होली जलाने में शिरकत की स्वदेशी वस्त्रों के प्रति भाव जगा गा उठते "नहीं पहरव गेदा कपड़ा विदेशी।" पुलिस उन्हें पकड़ प्रताड़ित करती लेकिन अनन्य दृढ़संकल्प के साथ स्वाधीनता की मश जलाये रखते।

ऐसे अख्यात स्वतंत्रता सेनानी की जीवनी लिखकर श्री के. पी. मंड ग्राम्य जीवन में हुए स्वाधीनता संघर्ष की कहानी को जीवन्त कर दिया इसके माध्यम से राष्ट्र की कहानी को वाणी मिली है। ऐसे-ऐसे स्वाधी सेनानियों की कहानी ही भारत की कहानी है। लेखक इसके लिये बधा पात्र हैं। आमुख के रूप में सुख्यात लेख डा. प्रभुनारायण विद्यार्थी ने स मधेपुरा के स्वाधीनता संग्राम के परिदृष्य को प्रस्तुत कर इसे और सूचनापरक बना दिया है। वे भी साधुवाद के अधिकारी हैं।

—शान्ति कुमार स

देवमाला का हिमाचल

[पुस्तक: देवमाला का हिमाचल, लेखक: शान्ति कुमार स्याल, प्रकाशक: सन्मार्ग प्रकाशक, 16, यू.बी. बैंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110 007, मूल्य: 150/-, प्रथम संस्करण: 199;]

भारत में हिंदू धर्म में अनेक सम्प्रदाय हैं। विभिन्न सम्प्रदायों के पूजा अर्चना की विभिन्न पद्धतियां और तरीके व्याप्त हैं। विभिन्न समुदायों में विश्वास व्यक्त करने वाले व्यक्तियों की अपने धर्म और अपने ईष्ट देवता के प्रति गहरी आस्था है। भारत में यह परम्परा सदियों से चली आ रही है और यह हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

हिंदू समाज में धार्मिक कृत्यों का इतना अधिक महत्व है कि सामजिक रीतियों से इसका गहरा सामंजस्य और नाता है। प्रत्येक हिंदू परिवार कोई भी शुभ और मांगलिक कार्य का शुभारम्भ अपने सम्प्रदाय के नियमों और कर्मकाण्ड के अनुसार ही करते हैं और इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि मांगलिक कार्य भली-भांति और बिना किसी विघ्न के निष्पादित हो जाएं। इतना ही नहीं हिंदू समाज अनहोनियों, आर्थिक संकटों, बीमारियों, प्राकृतिक विपदाओं आदि से होने वाले दुष्परिणामों को अक्सर धर्म से जोड़ देता है और उसके लिए वह अपने धार्मिक कृत्यों में हुई किसी कमी की वजह को दोषी मानता है। श्री शान्ति कुमार स्याल की पुस्तक ''देवमाला का हिमाचल'' हिमालय पर बसे हिंदुओं के असंख्य मन्दिरों की गाथा प्रस्तुत करती है। पुस्तक में मन्दिरों के अस्तित्व में आने, उनकी पृष्ठभूमि, हिंदू समाज में उनकी मान्यता और उनसे जुड़ी हुई अनेक किंवदंतियों की गाथा का बखूबी वर्णन किया गया है। पुस्तक में जहां एक ओर भारत के प्रहरी ''हिमालय पर्वत'' के प्राकृतिक सौंदर्य के विवरण से पाठक मंत्रमुग्ध होते हैं, वहीं दूसरी ओर हिमाचल के विभिन्न मंदिरों में त्योहारों और पर्वों पर लगने वाले धार्मिक और सामाजिक उत्सवों और मेलों की सारगर्भित और रुचिकर जानकारी उपलब्ध है।

पुस्तक में यह उल्लेख मिलता है कि हिमाचल प्रदेश में अधिकांश व्यक्ति हिंदू धर्म को मानते हैं। मात्र 4 प्रतिशत लोग हैं अन्य धर्मों या सम्प्रदायों को मानते हैं। यहां के स्थानीय लोगों में देवी-देवताओं के प्रति अत्यधिक श्रद्धा है। वे देवी देवताओं के अलावा पर्वतों, नदियों, झीलों और वृक्षों आदि की पूजा भी करते हैं। इसके अलावा जीव-जन्तुओं के लिए भी उनके दिलों में उतनी ही श्रद्धा है, जितनी देवी-देवता उनके लिए श्रद्धेय और पूजनीय हैं। इस परिप्रेक्ष्य में हिमाचल की औरतें गांव और जनपदों में नाग-देवताओं की पूजा-अर्चना करती हुई दिखाई देंगी। वे नाग देवता को दूध पिलाती हैं और प्रचलित किंवदंतियों के अनुसार यदि नाग देवता दूध पी लेता है तो उनकी पूजा-अर्चना सफल होती है अन्यथा नहीं। हालांकि ऐसी परम्पराएं मात्र अन्धविश्वास से प्रेरित होती हैं परन्तु ऐसे जीव जन्तुओं के प्रति उनकी अटूट आस्था और सच्ची भक्ति और लगाव से की गई पूजा अर्चना से उनका निश्चित रूप से आत्मविश्वास बढ़ता है और उन्हें इस बात का संतोष मिलता है कि इस परिपाटी को अपनाने से निश्चित ही उन्हें सुख-सम्पदा की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामना पूरी होगी।

हिमाचल प्रदेश के समस्त जनपदों की भौगोलिक जानकारी और प्रत्येक जनपद में लगने वाले धार्मिक मेलों और वहां पर अवस्थित मंदिरों और पूजा स्थलों की प्रतिष्ठा, गरिमा, तथा समाज में व्याप्त उनके महत्व को सविस्तारपूर्वक वर्णन से इस पुस्तक को यदि संदर्भ ग्रंथ की संज्ञा दी जाए तो यह अतिश्योक्ति न होगी।

नगरों की भीड़-भाड़, प्रदूषण की फैली समस्या तथा शहरीकरण की बढ़ती हुई समस्या से जूझते हुए संभ्रांत वर्ग और उच्च-मध्य वर्ग के लोग राहत की सांस लेने, सैर-सपाटे और पर्यटन हेतु पहाड़ी स्थानों पर जाने के लिए लालायित रहते हैं। पुस्तक ऐसे सेनानियों के मार्गदर्शन हेतु अत्यधिक लोकप्रिय और लाभदायक सिद्ध होगी।

—सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा

****

"राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्त्व नहीं। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।"

लोकमान्य तिलक

****

हिन्दी दिवस/पखवाड़ा

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, कानपुर

इस वर्ष स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त एवं आयकर आयुक्त, कानपुर में हिन्दी दिवस, वृहद एवं भव्य रूप से मनाया गया। 14 सितम्बर को सार्वजनिक अवकाश होने के कारण ''हिन्दी दिवस'' से संबंधित समस्त कार्यक्रम 15 सितम्बर को आयोजित किए गए। इस अवसर पर हिन्दी दिवस संकल्प पारित करा कर समस्त अनुभागों में वितरित किया गया। राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से इस पर्व पर अनेक रंगारंग कार्यक्रमों का समावेश किया गया। सर्वप्रथम विभाग में एक ''काव्य संगाष्ठी'' का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पर्याप्त संख्या में भाग लिया। कविता पाठ करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साहवर्धन हेतु मुख्य आयकर आयुक्त द्वारा उन्हें पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गयी। समस्त श्रोताओं ने इस सरस तथा रुचिकर कार्यक्रम का आनन्द लिया तथा इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर निबन्ध प्रतियोगिता एवं वाद-विवद प्रतियोगिता का भी सफलतापूर्यक आयोजन किया गया जिसमें मुख्य आयकर आयुक्त एवं आयकर आयुक्त कार्यालयों एवं उनके अधीनस्थ कार्यालयों ने भाग लिया। उक्त प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को श्री टी. के. दास, मुख्य आयकर आयुक्त, कानपुर ने नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्री विश्वनाथ प्रसाद कैलखुरी, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने आयकर प्रभार कानपुर में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में हो रही वृद्धि की चर्चा करते हुए बताया कि आयकरर प्रभार कानपुर में लेखा, स्थापना संबंधी समस्त कार्य हिन्दी मे किया जा रहा है। निर्धारित कार्य संबंधी सभी रिकार्ड हिन्दी में रखे जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि श्री बी. एन. सिंह, आयकर आयुक्त, कानपुर की राजभाषा हिन्दी के प्रति विशेष अभिरुचि के कारण 10 आयकर अधिकारी, वार्डों को समस्त कार्य हिन्दी में सम्पादित किए जाने हेतु विनिर्दिष्ट किया गया है इससे विभाग का निर्धारण कार्य पर्याप्त मात्रा में हिन्दी में हा रहा है।

अन्त में मुख्य आयकर आयुक्त एवं आयकर आयुक्त ने राजभाषा हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विभाग के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक राजभाषा द्वारा किया गया।

आकाशवाणी, अहमदाबाद

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, अहमदाबाद में दिनांक 2-9-97 से 5-9-97 तक हिन्दी पखवाड़ा ''राजभाषा पर्व'' के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। राजभाषा पखवाड़ा का उद्घाटन श्रीमती साधना भट्ट, सहायक केंद्र निदेशक ने किया। उन्होंने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए हर्ष व्यक्त किया कि हर वर्ष इस बहाने हम लोग एक जगह एकत्रित होते हैं। हिन्दी का अच्छा माहौल बन जाता है। यद्यपि हिन्दी हमारी राजभाषा है उसके प्रति हमारी आत्मीयता बनी रहे, प्रेम और अपनापन बना रहे, वैसे भी जिस तरह हमें अपनी मातृभाषा से लगाव होता है, वैसा ही लगाव राजभाषा से भी होना चाहिए। हम सब स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती मनाने के साथ-साथ से संकल्प लें कि अपनी राजभाषा में ही अधिक से अधिक काम करेंगे। वैसे भी आप लोग हिन्दी में अच्छा काम कर लेते हैं। अच्छा कार्य करने के लिए ही हमें पिछले वर्ष 1995-96 में ''ख'' क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय (पश्चिम), मुम्बई द्वारा हमें प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात सीमा धमेजानी--हिन्दी अनुवादक ने हिन्दी दिवस/पखवाड़े का संचालन करते हुए सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया और बताया कि 1947 में देश आजाद हाने के पश्चात देश में चारों ओर यही प्रश्न था कि देश की राजभाषा कौन सी हो। राजभाषा तो वही हो सकती है जो ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा बोली ओर समझी जा सके। जाहिर है हिन्दी ही एक ऐसी भाषा थी अन्ततः 1949 में राजभाषा अधिनियम बना और 14 सितम्बर को हमारे संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया।

दिनांक 2-9-97 को 11.00 बजे हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के 12 अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

दिनांक 9 तथा 10 सितम्बर को हिन्दी कार्यशाला चलाई गई। 9 सितम्बर को डा. भगवत शरण अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग गुजरात यूनिवर्सिटी, प्रसिद्ध व्याख्याता के रूप में आमंत्रित थे। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदया ने उनका स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। उन्होंने राजभाषा के विकास पर प्रकाश डालते हुए कहा हरेक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा अच्छी लगती है। भाषा वैसे भी माध्यम है न कि लक्ष्य या उद्देश्य। सभी भाषाओं का अपना-अपना विशाल साहित्य है। भाषाएं तीन होती है जनभाषा, साहित्य भाषा तथा राष्ट्रभाषा। कई भाषाएं होने से एक संपर्क भाषा की आवश्यकता पड़ती है और भाषा समृद्ध हो यानि जो भाषा दूसरी भाषाओं के शब्दों को अधिक से अधिक अपना सके। हिन्दी भाषा विश्व में दूसरे स्थान पर है। सिनेमा और मीडिया द्वारा हिन्दी का प्रचार होता ही रहेगा वैसे भी हिन्दी भाषा के विकास को कोई रोक नहीं सकता।

10-9-97 को वक्ता के रूप में श्री दिनेश मिस्त्री, सहायक निदेशक राजभाषा, आयकर कार्यालय आमंत्रित थे। श्रीमती साधना भट्ट, सहायक केन्द्र निदेशिका एवं अध्यक्ष महोदय ने उनका स्वागत करते हुए बताया कि हमारे कार्यालय में राजभाषा में अच्छा काम होता है। अच्छा काम हाने की वजह से ही पिछले वर्ष हमारे कार्यालय को क्षेत्रीय कार्यालय बम्बई (पश्चिम) द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पहले भी हम लोग इस संदर्भ में पुरस्कार अर्जित कर चुके हैं।

दिनांक 11-9-97 को वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई थी लेकिन प्रतियोगिता से पहले सीमा धमेजानी, हिन्दी अनुवादक ने सर्वप्रथम महानिदेशालय से उसी दिन प्राप्त श्री ओ. पी. केजरीवाल महानिदेशक अपील सभी सदस्यों को पढ़कर सुनाई। तत्पश्चात प्रतियोगिता शुरू हुई। वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी कई लोगों ने बढ़ चढ़ कर वाद-विवाद किए और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

दिनांक 15-9-97 को दोपहर 12.00 बजे हिन्दी दिवस/पखवाड़े का समापन समारोह रखा गया था। समापन समारोह के आरम्भ में सीमा धमेजानी, हिन्दी अनुवादक ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस/पखवाड़े में तथा उसके दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं/हिन्दी कार्यशलाओं में भाग लेने के लिए तथा उसे सफल बनाने के लिए आभार व्यक्त किया। दिनांक 14.9.97 को रविवार की छुट्टी होने की वजह से 15.9.97 को हिन्दी दिवस मनाया गया।

तत्पश्चात् सभी विजयी तथा अन्य प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र वितरित किए गए। अन्य सभी भाग लेने वाले प्रतिभागियों को भी स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

महानगर टेलीफोन निगम लि०, नई दिल्ली

राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से भाषाई सद्भाव के रूप में इस वर्ष दिनांक 1 सितम्बर से 15 सितम्बर तक "हिन्दी पखवाड़ा" मनाया गया। पखवाड़े का शुभारम्भ मुख्य महाप्रबन्धक के संदेश को जारी करके किया गया जिसमें राजभाषा नियमों के पालन तथा अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का आग्रह किया। तत्पश्चात् हिन्दी के संबंध में विभिन्न महापुरुषों के विचारों के पोस्टर जगह-जगह लगाए गए तथा मुख्य-मुख्य स्थानों पर वैनर लगाए गए।

इस अवसर पर राजभाषा ज्ञान, नोटिंग/ड्राफ्टिंग तथा कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में उत्साह के साथ अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न अनुभागों में जाकर कर्मचारियों को सहायक साहित्य वितरित किया गया तथा दैनिक कार्य में आने वाली कठिनाइयों के हल सुझाए गए जिससे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में हो सके।

दिनांक 15.9.97 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह मनाया गया जिसमें श्री नरेश कुमार दुआ, मुख्य महाप्रबन्धक मुख्य अतिथि थे। समारोह सरस्वती वन्दना से आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम महाप्रबन्धक (प्रशा०) ने अपने स्वागत भाषण में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हालांकि हिन्दी हमारे देश के लगभग हर क्षेत्र में बोली व समझी जाती है तथापि इसका जितना विकास होना चाहिए था वह नहीं हुआ। उन्होंने आगे कहा कि हमें हिन्दी के प्रति अपने ऊपर पनपी हीन भावना तथा झिझक को दूर करना होगा। अपनी मानसिकता में परिवर्तन कर हिन्दी के प्रयोग को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाना होगा।

पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों को मुख्य महाप्रबन्धक महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् अपने सम्बोधन में मुख्य महाप्रबन्धक महोदय ने कहा कि समारोह में उपस्थित होकर उन्हें अपार हर्ष हो रहा है। उन्होंने भारत के लिए हिन्दी की अपरिहार्यता पर बल दिया तथा कहा कि यह भाषा हमारे हृदय की भाषा है हम दैनिक व्यवहार में कुछ भी बोलते हों किन्तु अपने दु:ख-सुख हम इसी में व्यक्त करते हैं। अत: हिन्दी में काम सम्भव न हो यह तर्क एकदम निराधार है। उन्होंने कर्मचारियों को आह्वान किया कि स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हमें इस दिशा में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर संविधान एवं राष्ट्र की अपेक्षाओं को पूरा करना है। तत्पश्चात् इस अवसर पर बाहर से आमंत्रित कवियों द्वारा काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। राष्ट्रगान के पश्चात् समारोह समाप्त हुआ। क्षेत्रीय महाप्रबन्धक कार्यालयों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा उप निदेशक (राजभाषा) ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

आयकर आयुक्त कार्यालय, पटियाला

आयकर आयुक्त कार्यालय, पटियाला में दिनांक 15 सितम्बर से 19 सितम्बर 97 तक हिन्दी दिवस सप्ताह मनाया। दिनांक 4.9.97 को आयकर भवन में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें पटियाला प्रभार के अधिकारियों ने भाग लिया। पटियाला में दिनांक 16.7.97 को हिन्दी के प्रयोग से संबंधित चर्चा का आयोजन भी किया गया। और इस बात पर जोर दिया गया कि अधिकारी/कर्मचारी अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करें। बहुत से अधिकारी अपना काम हिन्दी में कर रहे हैं। श्री जवाहर लाल नेगी, आयकर आयुक्त, पटियाला ने इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की कि अधिकारी अपने-अपने काम में राजभाषा के प्रयोग के महत्व के बारे में सचेत हैं। इस समय विभाग का 50% काम हिन्दी में किया जा रहा है। यह हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि हम अपने काम के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाएं क्योंकि अंग्रेजी हमारी भाषा नहीं है। उत्तर भारत में 94% लोग हिन्दी बोलते व समझते हैं। पटियाला "ख" क्षेत्र के अधीन आता है जहां राजभाषा विभाग 90% काम हिन्दी में किए जाने की अपेक्षा रखता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं।

आयकर विभाग में 16, 17 व 18 सितम्बर, 1997 को हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 19.9.97 को हिन्दी दिवस मनाया गया। विभाग के अधिकारी तथा स्टाफ के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। भाषा विभाग, पंजाब के सौजन्य से आयकर भवन के परिसर में कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ। भाग लेने वाले कवि श्री अमृतलाल शैदा, डा. बृज मोहन शर्मा, श्री हर्ष कुमार गर्ग, नाभा के श्री एम.आर. जिन्दल, श्री नन्द किशोर रजनीश तथा आयकर विभाग के श्री आर.के. काजला, श्री प्रदीप कुमार, श्री बलविन्द्र सिंह, श्री बलबीर सिंह, श्रीमती शैली पांधी तथा विभाग की महिला सदस्यों ने क्रमश: अपनी कविताएं, गीत, गजल आदि प्रस्तुत किए जिनका दर्शकों ने आनन्द लिया व सराहना की।

श्री जवाहर लाल नेगी, आयकर आयुक्त, पटियाला ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए तथा उन्हें मुबारकबाद दी। उन्होंने उनको भी मुबारकबाद दी, जिन्होंने प्रतियोगिताओं में भाग लिया। श्री नेगी ने उपस्थित कवियों तथा भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला के सदस्यों का उनके सहयोग के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने अधिकारियों व स्टाफ से अनुरोध किया कि हिन्दी दिवस मनाना ही काफी नहीं है, अपितु प्रत्येक दिवस, हिन्दी दिवस होना चाहिए तथा हमें अपना काम ईमानदारी से हिन्दी में करना चाहिए। उन्होंने दर्शकों से यह अनुरोध किया कि वे अंग्रेजी के प्रयोग का पागलपन छोड़ दें, तभी हम हिन्दी को उचित स्थान दे सकते हैं। हिन्दी दिवस मनाने का प्रयोजन केवल इकट्ठे बैठना नहीं है, बल्कि अपनी राष्ट्रभाषा व राजभाषा के प्रति संकल्प लेना होना चाहिए, ताकि कार्यालय कार्य में इसका अधिक से अधिक प्रयोग हो सके। उन्होंने सभी अतिथियों तथा उपस्थित आयकर विभाग के सदस्यों का धन्यवाद किया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में 15 सितम्बर से 19 सितम्बर, 1997 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवधि के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की अभिरूचि उत्पन्न करने तथा मानसिकता बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने इसमें पूरे मनोयोग से भाग लिया और हिन्दी में कार्य करने की लगन और उत्साह प्रदर्शित किया।

महानिदेशक की ओर से राजभाषा हिन्दी में कार्य करने हेतु ''अपील'' जारी की गई जो सर्वेक्षण के समस्त मण्डल कार्यालयों में प्रेषित की गई। इस अपील के द्वारा अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी में काम करने की मानसिकता बनी है।

सप्ताहभर के आयोजनों में हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि, हिन्दी निबन्ध वाद-विवाद व टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इन प्रतियोगिताओं में 80 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया, जिसमें 33 कर्मचारियों/अधिकारियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिताओं के दौरान अत्यन्त उत्साह देखा गया और मात्र औपचारिकतावश नहीं अपितु गम्भीरता से प्रतियोगियों ने भाग लिया। निदेशक स्तर तक के अधिकारियों ने प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

उपनिदेशक (राजभाषा), श्री सी.पी. सिंह ने विगत वर्षों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में राजभाषा के विकास एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और उत्तरोत्तर हिन्दी के विकास को इंगित करते हुए कर्मचारियों एवं अधिकारियों में राजभाषा हिन्दी में अपने दैनिक कार्य को करने के लिए प्रेरित किया।

समापन समारोह में महानिदेशक श्री अजय शंकर ने कहा कि राजभाषा में कार्य करने में हेय या हीन भावना नहीं होनी चाहिए यह दूसरे दर्जे का कार्य नहीं अपितु राष्ट्रीय महत्व का कार्य है और हिन्दी में कार्य करने की मानसिकता को बनाने की कर्मचारियों/अधिकारियों से अपील की। अन्त में सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं सांत्वना पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र महानिदेशक द्वारा प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक श्री जोगेन्द्र सिंह ने किया।

पंजाब नैशनल बैंक, रोहतक

पंजाब नैशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 13 सितम्बर 1997 को रोहतक में हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया। समारोह की अध्यक्षता रोहतक क्षेत्र के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री एम.के. मित्तल ने की। श्री मित्तल ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति पूर्ण सम्मान व्यक्त करते हुए आह्वान किया कि हिन्दी सरल और सुबोध भाषा है। अत: बैंक के समस्त कार्य हिन्दी में किए जाने चाहिए। समारोह में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डा. नरेश मिश्र तथा संस्कृत विभाग के प्राध्यापक डा. सुरेन्द्र कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। पंजाब नैशनल बैंक के सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), श्री महीपाल यादव ने हिन्दी दिवस तथा राजभाषा के महत्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर हिन्दी टंकण, हिन्दी निबन्ध तथा कविता एवम् हास्य व्यंग्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

विजया बैंक, आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद

विजया बैंक, आंचलिक कार्यालय हैदराबाद द्वारा सम्पूर्ण अगस्त माह ''हिन्दी माह'' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर पत्र लेखन के अतिरिक्त हिन्दी निबंध, वाक्-स्पर्धा, श्रुतलेखन, शब्द सम्पदा, प्रश्नोत्तरी देशभक्ति-गान, अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें आंचलिक कार्यालय तथा नगरद्वय की शाखाओं के कर्मचारियों ने अमित उत्साह से भाग लिया।

20 सितम्बर को प्रेस क्लब आडिटोरियम, हैदराबाद में हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उस्मानिया यूनिवर्सिटी कालेज ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइन्सस के प्राचार्य, प्रोफेसर टी. मोहनसिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उप महाप्रबंधक श्री यतिराज हेग्डे ने मुख्य अतिथि सहित सभी उपस्थित अधिकारियों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने आजादी की लड़ाई के दौरान, विविध प्रान्तों के राष्ट्रवादी नेताओं के हिन्दी प्रेम की चर्चा करते हुए, यह संकल्प लेने का अनुरोध किया कि जन-संपर्कमें सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाएं तथा आंतरिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करते हुए उत्तरोत्तर प्रगति करें।

श्रीमती आर.टी. पुष्पा, प्रबंधक (रा.भा.) ने राजभाषा कार्यान्वयन रिपोर्ट पढ़ने के साथ ही साथ मुख्य अतिथि का परिचय करवाया।

उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री ओ. मोहनसिंह ने हिन्दी के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीय भाषाओं के प्रयोग की आवश्यता को रेखांकित किया। दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार प्रसार के इतिहास की चर्चा करते हुए, उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमारा द्वेष अंग्रेजी भाषा से नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता को भाषिक पहचान देने के लिए राजभाषा के तौर पर अपने देश की भाषा का प्रयोग करना है। सरस ढंग से उन्होंने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण से उपस्थित कर्मचारियों को मंत्र मुग्ध किया।

इस अवसर पर बैंक के कर्मचारियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंचन किया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

आकाशवाणी, पुणे

आकाशवाणी, पुणे केन्द्र में 1 सितम्बर, 97 से 18 सितम्बर, 97 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया और 18 सितम्बर, 97 को हिन्दी दिवस मनाया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान महानिदेशालय, आकाशवाणी, नई दिल्ली से प्राप्त महानिदेशक, श्री ओ. पी. केजरीवाल की अपील सभी अधिकारियों/कर्मचारियों में परिचालित की गई।

इस कार्यालय के 10.8.97 के समसंख्यक परिपत्र के द्वारा हिन्दी दिवस/पखवाड़े के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दी गई थी। हिन्दी पखवाड़े के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया।

हिन्दी दिवस समारोह 18 सितम्बर, 97 को कार्यालय के सभागृह में आयोजित किया गया। अपने स्वागत भाषण में डॉ. अशोक कुमार शर्मा, उपनिदेशक ने हिन्दी का अधिक उपयोग करने का आह्वान किया, साथ ही हिन्दी दिवस मनाने तथा राजभाषा की महतवपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

हिन्दी दिवस समारोह में आमंत्रित मुख्य अतिथि, राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्या संस्थान, पुणे के निदेशक, डॉ. पी. सी. शर्मा के हाथों प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को पुरस्कार दिये गए। उन्होंने हिन्दी में हो रहे कार्य तथा कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति जागरूकता की सहाहना की। उसी प्रकार राष्ट्रभाषा के महत्व तथा उसके प्रति सर्मपण की भावना और एकजुट होकर उन्होंने कहा जिस तरह से आजादी हासिल करने का संकल्प लिया गया था उसी तरह से हिन्दी में अधिक कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को बधाई दी, साथ ही प्रतियोगिताओं के निर्णायक यूनियन बैंक की मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्रीमती मधुराय, पुणे टेलिफोन की सहायक निदेशक, श्रीमती सरोज जोशी, आयुद्ध तकनीकी संस्थान के इंजिनियर (ई) डॉ. आर.सी. त्रिपाठी, श्री राकेश श्रीवास्तव, यूनाइटेड कमर्शियल बैंक की श्रीमती पुष्पामंश, तथा बैंक ऑफ इंडिया की मुख्य राजभाषा अधिकारी डॉ. शशी शर्मा, का सम्मान किया गया।

सीरी, पिलानी (राज.)

केन्द्रीय इलेक्ट्रानिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में 8 से 12 सितम्बर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती का वर्ष होने के कारण इस बार कई नई प्रतियोगिताओं को जोड़कर इस आयोजन को आकर्षक बनाया गया। संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के सक्रिया सहयोग से हिन्दी सप्ताह में कुल 15 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें कुल मिलाकर 335 सह-कर्मियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सहकर्मियों ने इस वर्ष प्रतिभागिता के लिए गहरी अभिरुचि का प्रदर्शन किया और समस्त प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं—हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि, मूल हिन्दी टिप्पण/आलेखन, हिन्दी शब्दावली, हिन्दी श्रुतलेख (अहिन्दी भाषी), हिन्दी श्रुतलेख (हिन्दी भाषी), कविता पाठ (स्वरचित), कविता पाठ (अन्य कवि), हिन्दी/उर्दू शायरी, व्याख्यान माला, वैज्ञानिक/तकनीकी लेखन, वाद-विवाद, राजभाषा स्लोगन, तकनीकी पत्र प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता। प्रश्नमंच में हिन्दी साहित्य, व्याकरण, राजभाषा, देश की स्वतंत्रता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रशासनिक कामकाज, सामान्य ज्ञान इत्यादि से संबंधित प्रश्न पूछे गए जो कि ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सूचनाप्रद थे। इसी कारण सभी कर्मचारी अत्यंत उत्साहित ओर उत्तर देने के लिए आतुर दिखाई दिए। पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले कर्मचारियों को तत्काल पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर सीरी विद्यामंदिर के छात्र-छात्राओं द्वारा "वर्तमान आरक्षण नीति देश के विकास में बाधक है" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें वक्ताओं ने बड़े उत्साह एवं प्रभावशाली ढंग से पक्ष-विपक्ष में अपने संशक्त विचार प्रस्तुत किए।

8 से 12 सितम्बर तक आयोजित हिन्दी सप्ताह के अंतिम दिन हिन्दी दिवस समारोह आयोजित किसा गया जिसमें मंच पर आसीन वक्ताओं ने राजभाषा के संबंध में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी अवसर पर पुस्कार वितरण भी किया गया।

हिन्दी सप्ताह के समापन दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह पर अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में हिन्दी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. अवतार सिंह ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कई ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश डाला तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी भाषा की भूमिका के बारे में बताया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं का स्रोत संस्कृत है जो कि हमारे धर्म, कर्म, संस्कृति, परंपराओं व रीति-रिवाजों की भाषा है और उसी से निकली है हमारी भाषा हिन्दी। यह सत्य है कि आज विश्व के बदलते परिदृश्य में हिन्दी भाषा का स्वरूप संस्कृतनिष्ठ नहीं रह गया है, परन्तु संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण हिन्दी में विदेशी भाषाओं के शब्द आ गए हैं जो कि स्वीकार करने होंगे। उन्होंने कहा कि यह एक मिथक है कि हिन्दी भाषा से देश की प्रगति में व्यवधान पड़ेगा। विश्व के अनेक विकसित देश अपनी भाषा के बलबूते पर ही विकसित हो पाए हैं। उन्होंने हिन्दी की स्थिति पर दर्द महसूस किया तथा अपने भावों को एक कविता के माध्यम से पुस्तुत किया "हिन्दी हूं, हिन्दुस्तानी हूं, जग में पहचानी जाती हूं पर घर में बेगानी हूं।" अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि विश्व के 190 देशों में केवल 5-6 देशों में ही अंग्रेजी भाषा राजभाषा के रूप में प्रचलित है। अन्यथा सभी देश अपनी-अपनी भाषा में कार्य करते हैं। उनका मानना था कि शुद्ध विचार चाहे किसी भी भाषा के हों, हमें स्वीकार करने चाहिएं तभी हमारी उन्नति होगी। इसके समर्थन में उन्होंने ऋग्वेद के एक श्लोक का उल्लेख किया "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" अर्थात् हमें शुद्ध विचारों का स्वागत करना चाहिए वे चाहें कहीं से आएं। उनके स्त्रोत गौण हैं, मुख्य हैं उनमें दिये भाव। इसी में हमारे समाज व देश का कल्याण निहित है। यह हमारी वैदिक परंपरा रही है।

अपने व्याख्यान से उन्होंने श्रोता समूह को भाव विभोर कर दिया। बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से आडीटोरियम में एक उत्साह एवं जोश दिखाई दिया और श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर उनका व्याख्यान सुना। कुछ का विचार था कि एक वरिष्ठ वैज्ञानिक का वेदों, पुराणों, भारतीय संस्कृति व परंपरा पर मजबूत पकड़ होना विलक्षण संयोग की बात है जो कि सराहनीय व अनुकरणीय है। इस व्याख्यान से एक नई बात सामने आई कि डॉ. अवतारसिंह एक ख्याति प्राप्त इन्ट्रीगल योग के विशेषज्ञ हैं जो कि अरविन्द दर्शन पर कई व्याख्यान दे चुके हैं, इसी प्रकार जैन दर्शन पर भी विचारोत्तेजक व्याख्यान कई बार दे चुके हैं। इस अवसर पर उन्होंने संकल्प लिया कि अब जो भी कार्य वे करेंगे सब हिन्दी माध्यम ही करेंगे तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित व प्रोत्साहित करेंगे।

इस अवसर पर बोलते हुए संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री नरेशपाल ने राजभाषा प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इस संस्थान में राजभाषा के उपयोग की दिशा में काफी प्रयास किया जा रहा है। वर्ष 1996-97 की प्रगति रिपोर्ट की जानकारी देते हुए उन्होंने भावी योजनाओं की जानकारी दी तथा आश्वासन दिया कि राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में संसाधनों को जुटाने के लिए ये सतत प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि राजभाषा के उपयोग के संबंध में यदि कोई सहकर्मी कोई सुझाव देना चाहे तो वे उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए कार्यान्वित करने का प्रयास करेंगे। अपने व्याख्यान में उन्होंने कई रोचक संस्मरण एवं उदाहरण देते हुए सहकर्मियों को राजभाषा के प्रयोग के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी।

समारोह में अतिथियों का स्वागत करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य श्री त्रिदेवरंजन शर्मा ने कहा कि हिन्दी सप्ताह की समस्त प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों की संख्या देखकर संबल मिला क्योंकि पुरस्कार पाना या न पाना यह महत्वपूर्ण नहीं है। खेल भावना के साथ सम्मिलित होना ही अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आह्वान किया कि भविष्य में भी इस भावना को बनाए रखना चाहिए।

समारोह के अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डॉ अवतारसिंह, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए।

विशेष पुरस्कार

राजभाषा विभाग द्वारा ली जाने वाली हिन्दी आशुलिपि परीक्षा में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करते के लिए श्री ओमप्रकाश शर्मा को तथा हिन्दी टंकण लेखन में शतप्रतिशत अंक लाने के लिए श्री सुधिरचन्द्र सिंह को पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर तकनीकी शोधपत्र हिन्दी में प्रस्तुत करने के लिए संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री श्याम नारायण मिश्र को भी विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री श्याम नारायण मिश्र ने उपस्थित श्रोता समूह को सप्ताह पर्यन्त किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी। अपने संक्षिप्त व्याख्यान में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जिस हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में विधिवत मान्यता मिली है वह देश के मजदूरों, नौकरी पेशावरों, सैलानियों, किसानों, जन साधारण व्यक्तियों, साधु-संतों, फकीरों इत्यादि के विचार-विनिमय की भाषा है जिसे बोलने वालों की संख्या नब्बे प्रतिशत है और यही भाषा 21वीं सदी के भारत को सशक्त भाषी बनेगी। इसका प्रभाव है—आज की इलेक्ट्रानिक मीडिया पर हिन्दी का बढ़ता हुआ प्रभाव, जिसने हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बना दिया है। समारोह के समापन पर हिन्दी अधिकारी ने हिन्दी सप्ताह से जुड़े सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा सभी के सक्रिय सहयोग के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। हिन्दी सप्ताह के सभी कार्यक्रमों, आयोजनों का संचालन तथा समन्वयन कार्य श्री श्याम नारायण मिश्र, हिन्दी अधिकारी द्वारा बड़े प्रभावी ढंग से संपन्न किया गया।

केनरा बैंक, जालन्धर

15 सितम्बर को केनरा बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय, जालन्धर में हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया गया। उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए बैंक के सहायक महाप्रबन्धक श्री पी एस कामत ने क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन में हासिल प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा कि हम हिंदी में काम करते हुए बिल्कुल भी नहीं सोचना चाहिए। हमारे रास्ते में कठिनाइयां अवश्य हैं परंतु उनसे मुकाबला करना होगा। केनरा बैंक न केवल हिंदी बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं में भी ग्राहक सेवा प्रदान करने में हमेशा अग्रणी रहा हैं। हमें इस प्रथा को और आगे बढ़ाना होगा।

इस अवसर पर आमंत्रित अजीत समाचार के वरिष्ठ पत्रकार श्री सिमर सदोष ने हिंदी मास के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए तथा वर्ष 1996-97 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग देने वाले कर्मचारियों को श्रेष्ठता प्रमाणपत्र प्रदान किए। उन्होंने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि केनरा बैंक से मुझे संतुष्टि मिली। यहां अनूठा हिंदी प्रेम देखने को मिलता है। हिंदी का किसी से विरोध है ही नहीं। उसका विरोध तो अंग्रेजी से है।

इस अवसर पर कर्मचारियों ने गीत गायन व कविता पाठ कर कार्यक्रम को रंगारंग बनाया। इस अवसर पर आयोजित हिंदी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता में पहले स्थान पर बूटामंडी जालन्धर शाखा के श्री पी एस बतरा, दूसरे स्थान पर बी एस सी चौक शाखा जालन्धर के श्री अश्विनी कुमार, एवं तीसरे स्थान पर क्षेत्रीय कार्यालय के श्री किशोरी लाल रहे। मंच पर विराजमान मंडल प्रबन्धक श्री वाई एल मदान एवं जालन्धर शाखा के मुख्य प्रबन्धक श्री आर के भट्ट ने सांस्कृतिक प्रतियोगिता का निर्णय किया।

- क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा चलाए गए हिंदी मास की समाचार पत्रों में धूम रही। मुख्य समारोह का दूरदर्शन पर प्रसारण भी किया गया।

यूको बैंक, नागपुर

यूको बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के तत्वाधान में दिनांक 15.9.97 को अपराह्न प्रभारी अधिकारी श्री प्रभाकर एस० ठाकरे की अध्यक्षता में ''हिंदी दिवस'' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दैनिक हिंदी समाचार पत्र ''युगधर्म'' के संपादक श्री चंद्रमोहन द्विवेदी आमंत्रित थे। कार्यक्रम का संचालन बैंक के हिंदी अधिकारी श्री प्रकाशचन्द्र गोडबोले ने किया।

सर्वप्रथम उन्होंने मुख्य अतिथि तथा उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत किया। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय ने मुख्य अतिथि श्री द्विवेदीजी का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। प्रस्ताविक भाषण हिंदी अधिकारी ने दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी एक सीधी साधी और सरल भाषा है। एकता ही जननी है। हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार उत्थान के लिए हमें प्रयत्नशील होना चाहिए।

बैंक के अन्य अधिकारियों ने भी हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री द्विवेदीजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे कोई भी समझ सकता है। यह एक सम्पर्क भाषा है। हिंदी के प्रति समर्पित होना चाहिए। यह किसी पर लादी नहीं जा रही है, क्योंकि हिंदी के अलावा अंग्रेजी भाषा में काम करने की छुट है। उन्होंने बताया कि कामनवेल्थ में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रथम भारतीय हैं, जिन्होंने हिंदी में भाषण दिया था। हिंदी को उसका स्थान दिलाना है तो यह कार्य उच्च स्तर पर से ही लागू करना चाहिए। निचले स्तर पर यह कार्य हो रहा है। राजस्थान के न्यायालयों में बहुत सा कार्य हिंदी में किया जा रहा है।

मई दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता की गई थी। उत्तीर्ण प्रतिभागियों को श्री द्विवेदीजी के हाथों पुरस्कार पदान किए गए।

अध्यक्ष महोदय श्री ठाकरे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राष्ट्रभाषा के प्रति हमें अभिमान होना चाहिए। हिंदी में काम करना सरल है। निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना है तो हमें इसके लिए सघन प्रयास करने चाहिएं। आम बैंकों में काफी काम हिंदी में हो रहा है। ग्राहक सेवा इसी माध्यम से दी जा रही है।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

बैंक के मुख्य कार्यालय स्तर पर दिनांक 1 सितम्बर 1997 से 15 सितम्बर 1997 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह दिनांक 15 सितम्बर 1997 को मुख्य कार्यालय, बैंक हाऊस, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री बी० डी० नारंग ने की। बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर बैंक की गृह पत्रिका ''पी० एस० बी० राजभाषा अंकुर'' के स्वतंत्रता विशंषांक का विमोचन बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सुरेन्द्र सिंह कोहली ने किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (राजभाषा) ने माननीय वित्तमंत्री जी के संदेश को पढ़ कर सुनाया। इस अवसर पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, हिन्दी कार्यान्वयन प्रतियोगिता, कार्टून प्रतियोगिता, हिन्दी वाक् प्रतियोगिता, आशुभाषण प्रतियोगिता, वरिष्ठ अधिकारियों के लिए वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेता प्रतियोगियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा कार्यकारी निदेशक ने पुरस्कृत किया। समारोह के अंत में महाप्रबंधक स० गुरपाल सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुख्यालय मुख्य अभियंता स्वास्तिक परियोजना

मुख्यालय मुख्य अभियंता स्वास्तिक परियोजना में विगत वर्षों के अनुरूप इस वर्ष भी दिनांक 1 सितम्बर से 15 सितम्बर, 97 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का प्रारम्भ माननीय

मुख्य अभियंता ने किया। उन्होंने हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस शुभ-अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई हमारी हिंदी भाषा जन-जन की भाषा है। अत: सभी कर्मचारी इस भाषा को सरलता से समझ सकते हैं। अत: सभी कर्मचकरी इसे अपनाने एवं अपने कार्यालयी पत्र-व्यवहार में प्रयोग करने का भरसक प्रयास करें। तत्पश्चात मुख्य अभियंता ने कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न आयोजनों के संनबंध में विस्तृत जानकारी दी एवं सभी कर्मचारियों से हिंदी पखवाड़े के दौरान अधिक से अधिक राजभाषा में ही काम करने की सलाह दी।

पखवाड़े के दौरान दिनांक 11 सितम्बर, 97 को मुख्यालय के कार्मिकों के लिए निबंध, अनुवाद एवं भाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी भाषी एवं अहिंदी भाषी क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य समारोह 15 सितम्बर, 97 को आयोजित किया गया। समारोह में सर्वप्रथम वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सात प्रतियोगियों ने भाग लिया। स्टाफ अधिकारी-2 (कार्मिक) ने वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों के नाम घोषित किए। सभी विजयी प्रतियोगियों को मुख्य अभियंता के कर-कमलों द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री एन. सी. मित्रा, मुख्य अभियंता, स्वास्तिक परियोजना ने की। अपने समापन भाषण में मुख्य अभियंता ने हिंदी पखवाड़े के दौरान परियोजना में हिंदी की प्रगति के लिए किए गए प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया तथा कहा कि प्रत्येक कर्मचारी को इसी प्रकार भविष्य में भी राजभाषा में ही अपने-अपने कार्यालयी कार्यों को करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने हिंदी जानने वाले कर्मचारियों से आग्रह किया कि अहिंदी भाषी साथियों को इस संबंध में बराबर सहयोग दें तथा उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्होंने अधिकारी वर्ग से भी आग्रह किया कि वे भी व्यक्तिगत रूचि लेकर प्रत्येक अनुभाग में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु आवश्यक कार्यक्रम बनाये, क्योंकि बिना उनके रूचि के आवश्यकता अनुरूप प्रगति होना संभव नहीं। अत: सभी कर्मचारी/अधिकारी यह संकल्प लें कि वे हिंदी प्रगति के लिए अपना पूरा सहयोग देगें। हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े के दौरान अयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुस्कार प्रदान किए गए।

मुख्यालय दीपक परियोजना

मुख्यालय दीपक परियोयना द्वारा 1 सितम्बर से 15 सितम्बर 97 रक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी जिसमें दीपक के अधीनस्थ इकाइयों ने भी स्वेच्छापूर्वक भाग लिया पखवाड़े के दौरान हिंदी प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय में अनेक प्रकार के हिंदी संबंधी पोस्टर लगाए गए तथा सारा काम-काज हिंदी में करने के लिए आदेश दिये गये। पखवाड़े के दौरान हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी पखवाड़ा समारोह की अध्यक्षता करते हुए कर्नल के.सी.के. नायर ने कहा कि हमें कार्यालय के सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी का अधिक-से अधिक प्रयोग करना चाहिए जिससे सभी अच्छी प्रकार समझ सकें और लिख सकें। कार्यालय में रायभाषा हिंदी की महत्ता को ध्यान में रखते हुए अपना सभी कांम-काज हिंदी में करें तथा राजभाषा हिंदी के गौरव को बनाये रखे।

पूर्वी भण्डार (ग्रेफ) द्वारा 99 सेना डाकघर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भण्डार प्रभाग में हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन बडी धूमधाम से किया गया। इस दौरान हिंदी तथा अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिन्दी टंकण, हिन्दी में अधिक काम तथा हिन्दी भाषण की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन सभी प्रतियोगिताओ में हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतियोगिताओं में अधिकांश कर्मचारियों ने भाग लिया।

1 सितम्बर को हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ ले0 कर्नल, राकेश कुमार, कमान अधिकारी, पूर्वीभण्डार प्रभाग ने किया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान सभी प्रतियोगिताएं और कार्यक्रम हिंदी अनुभाग की देख-रेख में आयोजित किए गए।

दिनांक 15 सितम्बर को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में बोलते हुए कमान अधिकारी महोदय ने सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अपील की कि वे केवल हिंदी दिवस/पखवाड़े के दौरान ही हिन्दी में काम करने तक सिमित न रहें बल्कि इसी रफ्तार से इसे पूरे साल करते रहें जिससे हिंदी की प्रगति को सुनिश्चित किया जा सके। इस सुअवसर पर हिंदी इस सुअवसर पर हिन्दी अनुवादक योगेन्द्र सिंह यादव तथा हिन्दी टंकक निरंजन कुमार सिंह सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान करने के साथ ही हिन्दी दिवस/पखवाड़े का समापन कर दिया गया।

विजया बैंक

इस वर्ष 14 सितम्बर रविवार होने की वजह से हिन्दी दिवस, प्रधान कार्यालय के अनुदेशों के अनुसार 15.9.97 को मनाया। अगस्त 97 हिन्दी माह के रूप में मनाया गया और अनेक हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी वाक् आशुभाषण, एकल गीत, समूह गीत, निबंध, पत्र-लेखन आदि आयोजित की गईं।

डॉ. ओमकार एन. कौल जो केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर में प्रोफेसर एवं उप-निदेशक के पद को सुशोभित कर रहे हैं, इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। क्षेत्रीय प्रधान श्री मेघराज शेट्टी ने इस समारोह की अध्यक्षता की। क्षेत्र की सहायक प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री गौरी वी.एम. ने राजभाषा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। स्टाफ सदस्यों ने चुटकुलों, हास्यप्रद समाचार, गीतों से सभी का मनोरंजन किया। कैप्टन पी. एम. जोशी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

राष्ट्रीय गान के गायन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

कार्यालय मंडल अभियंता दूरभाष, कटनी

सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिये, यदि हम अपने कार्यालय का कार्य हिन्दी में ही करने का प्रयास करें, तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। सरकारी कामकाज न केवल सितम्बर माह में बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में करें। राष्ट्र भाषा देश की सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता को मजबूत करती है। हिन्दी में कार्य करना वास्तव में राष्ट्र प्रेम का प्रतीक है।

हिन्दी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से दूरसंचार हिन्दी पखवाड़ा के तहत 115 प्रतियोगियों ने राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हिन्दी के प्रति आत्मीय लगाव का परिचय दिया है।

उपरोक्त सारगर्भित उद्‌गार दूरसंचार हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह पर मंडल अभियंता, सूक्ष्म तरंग, श्री उमाचरण लाल भटनागर, उपमंडल अधिकारी (दूरभाष), श्री जगदीश कुमार माथुर, उपमंडल अभियंता-(प्रकाश तन्तु) श्री श्याममोहन दुबे, वरिष्ठ साहित्यकार श्री मोतीलाल जैन ''विजय'', ने समारोह से उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच व्यक्त किये। पुरस्कार वितरण के पूर्व विभागीय रचनाकारों ने सरस काव्य पाठ किया जिसमें सर्वश्री मकबूल अहमद खान, गोविंददास गुप्ता, विजय अग्रहरि, संजीव मिश्रा, बन्दू सिंह, रामसेवक मिश्रा, विश्वनाथ, राजमणि शर्मा, एवं श्री नीमा प्रसाद बंशकार आदि प्रमुख थे।

समारोह का संयोजन एवं सफल संचालन प्रभारी, राजभाषा जनसम्पर्क-प्रकाश प्रलय या मंडल अभियंता दूरभाष, कटनी ने किया।

विगत वर्ष उत्कृष्ट कार्य सम्पादन के लिये अतिथि उपमंडल अधिकारी दूरभाष, श्री जगदीश माथुर ने सर्व श्री इन्तयाज खान. राजनारायण तिवारी, द्वारका प्रसाद विश्वकर्मा एवं श्री बांके बिहारी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल होने वाले प्रतियोगियों को आगत अतिथियों ने पुस्कार वितरित किये।

हिन्दी पखवाड़ा में विशिष्ट भूमिका के लिये श्री रामकृष्ण सिंह, दूरभाष पर्यवेक्षक को सम्मानित किया गया।

समारोह समापन के पूर्व प्रभारी राजभाषा जनसम्पर्क, श्री प्रकाश प्रलय ने राजभाषा अनुभाग द्वारा प्राप्त उपलब्धि के लिये महाप्रबंधक दूरसंचार जिला जबलपुर, श्री गोकुल सिंह, मंडल अभियंता दूरभाष, कटनी, श्री पी.डी. स्नेही, प्रोफेसर सत्यनारायण अग्रवाल, प्रोफेसर मोतीलाल जैन, प्राचार्या-सुश्री राजेन्द्र कौर लाम्बा, विमला नायक, विनयशंकर सेठ, जगदीश माथुर, आदि अधिकारियों कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

समन्वय निदेशालय, पुलिस बेतार

सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रति जागरुकता और अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति मनोवृत्ति और मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिये तथा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति के उद्देश्य से समन्वय निदेशालय, पुलिस बेतार के मुख्यालय और देश की विभिन्न राजधानियों में स्थित बाह्य कार्यालयों में दिनांक 15.09.97 से 30.09.97 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उद्‌घाटन निदेशक श्री कमलेश डेका के कर कमलों द्वारा किया गया। इस समारोह का संचालन श्री सत्य प्रकाश भारद्वाज, हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया। श्री सुधाकर पांडेय, पूर्व संसद सदस्य और नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमंत्री समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस मुख्यालय के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त श्री एम.एस. पोपली. संयुक्त निदेशक ने भी भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए तथा अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। हिन्दी समारोहों का सुचारु रुप से संचालन करने के लिए श्री सोहन लाल. उप-निदेशक (बीजलेख) की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था जिसके श्री पी. सी. शर्मा, सहायक निदेशक एवं श्री सत्य प्रकाश भारद्वाज, हिन्दी अधिकारी सदस्य थे।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान इस मुख्यालय में ऐसा वातावरण देखा गया कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित थे। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। निदेशक ने यह आदेश दिया कि प्रत्येक वृहस्पतिवार को मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया जाए और बैठक की समस्त कार्रवाई हिन्दी में की जाए।

हिन्दी में कार्य करने के लिए इस मुख्यालय के और बाह्य कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियो को प्रोत्सकहित करने के लिए अनेक हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है:—

(क) अधिकारियों के लिये हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (एक)	1000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार (एक)	750/- रुपये
तृतीय पुरस्कार (एक)	500/- रुपये
सांत्वना पुरस्कार (दो)	200/- रुपये प्रत्येक

(ख) कर्मचारियों के लिये हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (एक)	1000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार (एक)	750/- रुपये
तृतीय पुरस्कार (एक)	500/- रुपये
सांत्वना पुरस्कार (दो)	200/- रुपये प्रत्येक

(ग) अहिन्दी भाषी अधिकारियों के लिये हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (एक)	1000/- रुपये

द्वितीय पुरस्कार (एक)	750/- रुपये
तृतीय पुरस्कार (एक)	500/- रुपये
सांत्वना पुरस्कार (पांच)	200/- रुपये प्रत्येक

(घ) हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (एक)	1000/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार (एक)	750/- रुपये
तृतीय पुरस्कार (एक)	500/- रुपये
सांत्वना पुरस्कार (तीन)	200/- रुपय प्रत्येक

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के लिए अधिकारियों की झिझक को दूर करने के उद्देश्य से और उनको सरकार की राजभाषा नीति एवं इससे संबंधित बनाये गए नियमों का ज्ञान कराने के लिए तथा उनकी कठिनाइयों को दूर करने हेतु अधिकारियों के लिए दिनांक 22-09-97 से 20-09-97 तक एवं कर्मचारियों के लिये 29-09-97 से 30-09-97 तक अलग-अलग हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशालाओं में भाषण देने के लिए हिन्दी के विद्वान वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। वक्ताओं के हिन्दी ज्ञान और उन्हें हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकतर व्यक्तियों का हिन्दी में कार्य करने के लिए रूझान हुआ है। यह इस कार्यालय के व्यक्तियों के लिए एक उपलब्धि है।

यह भी उल्लेखनीय है इस मुख्यालय में व्यक्तियों का हिन्दी का ज्ञानवर्धन करने के लिए अलग से एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की गई है। पुस्तकालय के लिए प्रतिवर्ष उच्चकोटि के हिन्दी के विद्वानों की कृतियाँ खरीदी जाती हैं। हिन्दी पढ़ने के लिए स्टाफ को आकर्षित करने के उद्देश्य से हिन्दी में प्रकाशित अनेक पत्रिकाएं और समाचार पत्र आदि खरीदे जाते हैं।

समन्वय निदेशालय पुलिस बेतार एक तकनीकी कार्यालय है जिसमें सम्पूर्ण कामकाज तकनीकी किस्म का होता है फिर भी प्रत्येक स्तर पर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। यहाँ पर यह उल्लेख करते हुए हर्ष है कि बेतार प्रणाली में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। आशा है कि शीघ्र ही हिन्दी में बेतार संदेशों का प्रसारण संभव हो जाएगा। हिन्दी में बेतार संदेशों का प्रसारण पुलिस दूरसंचार के इतिहास में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

दिनांक 30-09-97 को निदेशक श्री कमलेश डेका की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़े और हिन्दी कार्यशाला का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्री एम0 एस0 कठैत उप-निदेशक, राजभाषा ने समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में भाग लिया तथा समारोह का संचालन श्री सत्य प्रकाश भारद्वाज, हिन्दी अधिकारी द्वारा किया गया।

श्री कमलेश डेका ने इस मुख्यालय में और इसके बाह्य कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग में अब तक हुई प्रगति पर हर्ष व्यक्त किया तथा हिन्दी अधिकारी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रति आप लोगों के उत्साह से ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी राजभाषा शीघ्र ही सभी लोगों द्वारा अंगीकार कर ली जाएगी और अपने स्थान पर प्रतिष्ठित होगी। उन्होंने आगे कहा कि हम जितना अपनी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं उतना अन्य किसी भाषा में नहीं। अत: हमारी प्रगति हमारी अपनी भाषा पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि यद्यपि मेरी मातृभाषा आसामी है फिर भी राष्ट्र भाषा हिन्दी बोलने, लिखने और पढ़ने में मेरे हृदय में एक अनूठे आनन्द की अनुभूति होती है।

श्री डेका ने आगे कहा कि सरकार रायभाषा नीति को पोषित करने के लिए और हिन्दी को अपने स्थान पर प्रतिष्ठित करके अंग्रेजी से निजात पाने के लिए यह हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम अपना दैनिक कामकाज हिन्दी मे करने का संकल्प लें और यह हमार संविधान की मांग है।

श्री सुधकर पाण्डेय जी ने कहा कि यद्यपि हम स्वतंत्र हो गए हैं किन्तु अंग्रेजियत की गुलामी हमारे ऊपर अब भी हावी है। जब तक हमारी मनोवृत्ति, मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा और हिन्दी को अपनाने के लिए हमारी इच्छा शक्ति नहीं होगी तब तक हिन्दी कामकाज की भाषा नहीं हो सकेगी और हिन्दी केवल वार्षिक समारोहों तक ही सीमित रह जाएगी। अत: हमें अपनी मनोवृत्ति को बदलना है ताकि हम हिन्दी को गौरवान्वित कर सकें।

अतं में श्री सत्य प्रकाश भारद्वाज, हिन्दी अधिकारी ने कहा कि 50 वर्ष पूर्व हमारी भारत माता तो स्वतंत्र हो गई किन्तु अंग्रेजी भारत माता की जिह्वा पर अब भी सवार है। पूर्ण आजादी के लिए भारत माता की जिह्वा से अंग्रेजी को अलविदा करना होगा।

प्रचार-प्रसार

समन्वय निदेशालय पुलिस बेतार में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से और कार्मिकों की मानसिकता में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से आयोजित किए गये उपरोक्त कार्यक्रमों का दिल्ली से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रों (दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, वीर अर्जुन, और सच का साया) द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया।

—सत्यप्रकाश भारद्वाज

भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम

दिनांक 15.9.97 से 26.9.97 तक भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) कानपुर में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 15.9.97 को निगम में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ निगम के कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर.एस. शर्मा के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

समारोह के इस अवसर पर निगम के अधिकारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। निगम के कं० प्रशासनिक अधिकारी श्री बी.पी. शर्मा ने उपस्थित

अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक ने हिन्दी पखवाड़े के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा— पूरे देश को एकता के सूत्र में मजबूती के साथ पिरोने के लिए एक भाषा का होना आवश्यक है। इसी कारण हिन्दी को राजभाषा का गौरव प्राप्त हुआ है। हिन्दी में काम करना अति आसान है। अत: सभी को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए संकल्प लेने का सुझाव दिया।

निगम में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में निगम के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

दिनांक 16.9.97 को टिप्पण और प्रारूप लेखन, दिनांक 17.9.97 को निबन्ध, दिनांक 18.9.97 को टंकण, दिनांक 19.9.97 को बोध वाक्य, शब्द अर्थ, दिनांक 20.9.97 को श्रुतलेख, दिनांक 22.9.97 को अनुवाद, दिनांक 23.9.97 को वाद-विवाद और दिनांक 24.9.97 को कविता पाठ का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

दिनांक 26.9.97 को निगम के कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री पी.एन. खेर की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री खेर ने हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने को राष्ट्र का सम्मान कहा। उन्होंने कहा यद्यपि निगम में हिन्दी प्रचार-प्रसार के बहुत से काम हुए हैं परन्तु अभी भी कुछ शेष हैं, उन्हें पूरी लगन से पूर्ण करना है और अन्त में विजेता प्रतियोगियों को अपने कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किया और सभी को धन्यवाद देते हुए हिन्दी में कार्य करने का सुझाव दिया।

चाणक्य नीति

असंतुष्ट रहने वाला पंडित कभी गुणवान नहीं होता क्योंकि उसके पूजने वाले संतोष न होने के कारण उससे नकार करने लगते है।

* *

संतोष से काम लेने वाला राजा कभी गुणवान नहीं होता, क्योंकि अगर वह संतोष करके बैठ जाएगा तो उसके सत्य का विस्तार नहीं होगा।

* *

जिस प्रकार शेर की चुका जाने से हाथी का कपाल और मोती मिलता है, ठीक इसी प्रकार जो भी जैसा रहता है। वैसे ही उसके घर का वातावरण रहता है।

* *

शिक्षक कोई भी हो उसका सब स्थानों पर सम्मान होता है। अनपढ़ भले ही कितना ही धनवान क्यों न हो, पढ़े-लिखे आदमी के सामने वह छोटा ही नजर आएगा।

* *

इस संसार में दिखावे के बिना सब कुछ व्यर्थ है। यदि सांप में जहर न हो तो उसे फुकार कर ही अपना डर बनाए रखना चाहिए वरना उसे छोटे छोटे बच्चे मार डालेंगे।

* *

बुध्दि के बिना ताकत भी बेकार है। जिस मनुष्य के पास ताकत है पर बुध्दि नहीं, ऐसा मनुष्य अपने से भी कमजोर आदमी से हार जाता है।

* *

अपने दायरें को तोड़ने वाला अपनी सीमा से बाहर जाने वाला प्राणी सदा धोखा खाते है। इसलिए हर प्राणी को अपने हालात अपनी ताकत और अपनी श्रध्दा के अनुसार ही जीना चाहिए।

* *

जिसने रूप, रस, अभिमान पर विजय पा ली वही सारे संसार को अपने वस में कर सकता है।

* *

'यह जीवन अस्थाई है'' इस बात को सदैव ध्यान में रखकर इस जीवन के हर क्षण का उपयोग करें क्योंकि हर चीज मौत के साथ दम तोड देती है।

* *

कार्यशाला

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) राजस्थान, जयपुर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा) में संयुक्त हिन्दी कार्यशाला दिनांक 16.6.1997 से 20.6.1997 तक आयोजित की गई।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर. पी. कटारिया, कल्याण अधिकारी द्वारा किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए श्री कटारिया ने कहा कि हिन्दी कार्यशाला का आयोजन तभी सार्थक होगा जब सभी प्रशिक्षणार्थी न केवल स्वयं बल्कि अन्य कार्यालय-कर्मियों के लिए भी प्रेरणा के आधार बन कर हिन्दी के कार्य में जुटें। उन्होंने कार्यशाला के दौरान हिन्दी के कार्य में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों के निराकरण को भी ध्यान में रखे जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

पांच दिवसीय पूर्णकालिक कार्यशाला में 25 प्रशिक्षणार्थियों को 30 कार्य घंटों को गहन प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षकों द्वारा हिन्दी के प्रयोग संबंधी जानकारियों के साथ-साथ विभिन्न समूहों की कार्य-प्रणालियों तथा उसमें हिन्दी के प्रभावी प्रयोग के अवसरों के बारें में भी प्रशिक्षणर्थियों को जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण के दोरान राजभाषा अनुभाग के अनुभाग अधिकारी श्री अशोक कुमार शर्मा द्वारा प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया गया कि हिन्दी के प्रयोग में आने वाली समस्याओं के तुरन्त समाधान हेतु वे राजभाषा अनुभाग से सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होंने विभागीय पत्रिका ''लेखा परीक्षा अर्चना'' में प्रकाशनार्थ सामग्री देने तथा राजभाषा अनुभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग देने का भी अनुरोध किया।

दिनांक 20.6.1997 को सम्पन्न समापन समारोह में श्री प्रभाकर जोशी, हिन्दी अधिकारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को उत्साहपूर्वक कार्यशाला में भाग लेने तथा हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों की निरन्तर बढ़ रही संख्या का उल्लेख करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। श्री जोशी ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश में हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा का कार्य बखूबी कर सकती है। उन्होंने हिन्दी की विशाल शबदावली तथा अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाविष्ट करने की विशेषता पर भी बल दिया। श्री जोशी ने कहा कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी भूमिका का सही ढ़ंग से निर्वाह करने को कटिबद्ध हो तो ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो हिन्दी के विकास को अवरुद्ध कर सके।

राष्ट्रीय आवास बैंक, प्रधान कार्यालय लोधी रोड, नई दिल्ली

दिनांक 5 मई, 1997 को राष्ट्रीय आवास बैंक के नई दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय में सहायक प्रबंधक वर्ग के अधिकारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के महाप्रबंधक श्री पी. के. हाण्डा ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए महामहिम राष्ट्रपति जी के राजभाषा आदेशों की गरिमा का उल्लेख किया ओर कहा कि हिन्दी में कार्य करना सभी अधिकारियों का दायित्व है एवं सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन दृढ़ता से किया जाना चाहिए। इस अवसर पर विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित पंजाब नेशनल बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक एवं दिल्ली बैंक नराकास के सदस्य सचिव, श्री पी. डी. लखनपाल ने कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों को राजभाषा नीति की उपयोगी जानकारी एवं दूसरे प्रमुख वक्ता भारतीय खाद्य निगम के प्रबंधक (हिन्दी) श्री प्रफुल्लचन्द्र पाठक ने अधिकारियों की हिन्दी वर्तनी संबंधी समस्याओं का समाधान किया। संदर्भ साहित्य के रूप में अधिकारियों को ''कार्यालय प्रवीणता'' पुस्तक भेंट की गयी।

दिनांक 27 जून, 1997 को राष्ट्रीय आवास बैंक के नई दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय में प्रबन्धक एवं उंप प्रबन्धक वर्ग के अधिकारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री यू.एस. पाण्डे ने कार्यशाला का उद्घाटन किया एवं उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि बैंक के दैनंदिन कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देना हमारा कर्त्तव्य है। इस अवसर पर विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित श्रीमती गार्गी गुप्त, संस्थापिका, भारतीय अनुवाद परिषद् ने कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों को राजभाषा नीति के अतिरिक्त राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली समसयाओं एवं उनके समाधान पर सारगर्भित जानकारी दी। साथ ही उन्होंने हिन्दी भाषा के सामाजिक स्वरूप को भी स्पष्ट किया। सभी अधिकारियों को संदर्भ साहित्य का वितरण भी किया गया।

केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

इस कार्यालय में दिनांक 26 से 30 अगस्त, 1997 तक प्रशासनिक वर्ग के कार्मिकों हेतु कार्यशाला चलाई गई। इसका उद्घाटन दिनांक 26.8.97 को संस्थान के निदेशक महोदय ने किया तथा प्रभारी अधिकारी ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। निदेशक महोदय ने सभी कार्मिकों से अनुरोध किया कि वे अधिकाधिक प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयत्न करें तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित टिप्पण एवं आलेखन तथा हिन्दी पत्राचार के लक्ष्य को शीघ्र पूरा करने का हरसंभव प्रयास करें। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, द. म. रे., एवं सदस्य-सचिव, नराकास थे। मुख्य अतिथि के तौर पर उन्होंने संविधान में हिन्दी का प्रावधान, शिक्षा नीति, राजभाषा की आवश्यकता, भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन आदि बातों पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में उन्होंने कम्प्यूटर की उपयोगिता तथा इनमें हिन्दी में कार्य करना कितना सरल है एवं हिन्दी में उपलब्ध नवीन प्रौद्योगिकी आदि पर प्रकाश डाला। संस्थान के सभी प्रशासनिक वर्ग के कार्मिकों ने इसमें अपनी रुचि दिखाई। इस कार्यशाला का संचालन श्री एस.आर. यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने की हैं।

गुणता आश्वासन (इं.उ.), फरीदाबाद

वरिष्ठ गुणता आश्वासन स्थापना (इं.उ.) फरीदाबाद ने गुणता आश्वासन निदेशालय (इं.उ.) नई दिल्ली के आह्वान पर स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 35 अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अतिरिक्त महानिदेशालय से एन.एस. नेगी, श्री जे.के. सहगल एवं श्री एस.एम. धुन्ना ने भाग लिया। ले. कर्नल आर. ई. कुलकरनी ने मंच का संचालन किया एवं कार्यशाला की उपयोगिता पर बल दिया। श्री सुरेन्द्र मोहन धुन्ना ने ''फाइलों पर टिप्पणी'' विषय पर व्याख्यान दिया तथा श्रीवी. के. सहगल ने राजभाषा संबंधी संविधानिक प्रावधान पर जानकारी दी। ले. कर्नल जी. पी. कृष्णमूर्ति ने 15 अनिवार्य विषयों की जानकारी दी तथा ले. कर्नल एन. एस. नेगी ने विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का वर्णन किया। कार्यशाला के समापन के पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं श्री धुन्ना को सेवा मुक्त होने के उपलक्ष में पुरस्कार दिए गए। ले. कर्नल कृष्णामूर्ति ने कार्यशाला की सफलता पर सबको बधाई दी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर के तत्वावधान में 5 सितम्बर, 1997 को आयकर कार्यालय में ''संयुक्त हिन्दी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जालंधर नगर के केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/ बैंकों /निगमों आदि से 25 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को ''संघ की राजभाषा नीति'', ''देवनागरी लिपि की संशोधित वर्तनी'', ''सामान्य शब्दावली का संक्षिप्त ज्ञान'' दिया गया व हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग व पत्राचार का अभ्यास करवाया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन सर्वकार्यभारी अधिकारी, हि.शि.यो. व अपर आयकर आयुक्त, श्री टी. लाल ने किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिन्दी जानने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में काम करने के प्रति झिझक को दूर करना है। उन्होंने प्रतिभागियों से आशा व्यक्त की कि वे कार्यशाला के इस उद्देश्य को पूरा करने में अपना सक्रिय सहयोग देंगे। कार्यशाला के आयोजन में सहायक आयकर आयुक्त (प्रशा०), श्रीमती प्रभजीत कौर ने अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया। प्रशिक्षण कार्य दूरदर्शन केन्द्र, केनरा बैंक व आयकर विभाग के राजभाषा अधिकारियों द्वारा दिया गया। कार्यशाला का संचालन सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया।

आयकर आयुक्त, पटियाला प्रभार, पटियाला

वर्ष 1997 के हिन्दी पखवाड़े के दौरान 4.9.97 को आयकर आयुक्त, पटियाला प्रभार, पटियाला के अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन श्री आर. भारद्वाज, अपर आयकर आयुक्त (ऑडिट) व राजभाषा अधिकारी/सर्व कार्यभारी अधिकारी, हिन्दी शिक्षण योजना, पटियाला द्वारा किया गया। अध्यक्ष श्री आर. भारद्वाज ने अपने उद्घाटन भाषण में अधिकारियों को संबोधित करते हुए उपस्थित अधिकारियों/आमंत्रित वक्ताओं का हार्दिक स्वागत किया और कहा कि यह कार्यशाला विशेष रूप से इसलिए आयोजित की जा रही है, क्योंकि पिछली दो तिमाहियों में प्रभार का हिंदी पत्राचार लक्ष्य अपेक्षित प्रतिशत से कम रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने के लिए तथा आप सबको कार्यालयीन हिन्दी का व्यवहारिक अभ्यास करवाने के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई है तथा कार्यशाला में विशेष रूप से आमंत्रित श्री आर.सी. श्रीवास्तव, उप निदेशक (राजभाषा), दिल्ली, श्री राजन लाल शर्मा, राजभाषा अधिकारी, मुख्य प्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), चण्डीगढ़ तथा श्रीमती रंजना पाहूजा, सहायक निदेशक (राजभाषा), पटियाला द्वारा राजभाषा नियमों तथा अधिनियमों, अंग्रेजी हिन्दी शब्दावली, अंग्रेजी-हिन्दी टिप्पणियां तथा भाषा की वर्तनी के संबंध में विशेष रूप से जानकारी दी गई।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री आर.सी. लाल श्रीवास्तव ने सारगर्भित भाषण द्वारा अधिकारियों को राजभाषा नियमों एवं अधिनियमों की जानकारी देते हुए इस कदर प्रेरित किया और अधिकारियों के ध्यान को नियंत्रित किए रखा कि समय बीतने का एहसास नहीं हुआ। अधिकारियों ने उनके भाषण में अत्यधिक दिलचस्पी दिखाई।

श्री राजन लाल शर्मा, राजभाषा अधिकारी व मुख्य प्रबन्धक, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला ने भाषा की वर्तनी के संबंध में जानकारी देते हुए अनेक शब्दों के उदाहरण प्रस्तुत किए जिससे अधिकारियों को वर्णों की वास्तविकता का ज्ञान मिला।

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने कार्यालयों में प्रयोग में लाई जाने वाली अंग्रेजी हिन्दी टिप्पणियों का अभ्यास करवाया।

श्रीमती रंजना पाहूजा ने अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली की विस्तृत रूप से जानकारी दी, जिसका व्यवहारिक कार्य में विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।

अंतिम सत्र में अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री योगराज सैनी, आयकर उपायुक्त, चण्डीगढ़ रेंज, चण्डीगढ़ ने कहा कि इस कार्यशाला में भाग लेकर हम सबने बहुत कुछ सीखा है जो मुश्किलें कार्यालयीन कार्यों को हिन्दी में करने में आती हैं उनका पर्याप्त रूप से समाधान हुआ है। भाषा के संबंध में आरम्भिक स्तर पर आने वाली दिक्कतों का भी सामना करने में हम अपने आप में विश्वास महसूस करते हैं। हम आयकर आयुक्त के आभारी हैं जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन को दिशा देने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन करवाया। हम आश्वासन देते हैं कि कार्यालय में हम सभी अपने-अपने कार्य को अधिक से अधिक हिन्दी में स्वयं करेंगे तथा स्टाफ के सदस्यों से भी करवाएंगे।

श्री आर. भारद्वाज, आयकर उपायुक्त ने कार्यशाला का समापन करते हुए कार्यशाला के आयोजकों, वक्ताओं तथा उपस्थित अधिकारियों का धन्यवाद किया और कहा कि इस कार्यशाला में हमने जो कुछ सीखा है उसके आधार पर हम कुछ स्तर तक कार्यालय कार्य को हिन्दी में करवा सकते हैं। दिल्ली

से उपस्थित हुए श्री आर.सी. श्रीवास्तव, श्री राजन लाल शर्मा, श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा तथा श्रीमती पाहूजा का धन्यवाद किया।

अंत में श्रीमती पाहूजा ने आमंत्रित वक्ताओं, कार्यशाला के आयोजकों, उपस्थित अधिकारियों का तथा कार्यशाला के अध्यक्ष श्री आर. भारद्वाज, अपर आयकर आयुक्त (ऑडिट), पटियाला के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया। उनका कहना था कि उपरोक्त अधिकारियों के सहयोग के बिना इस कार्यशाला का आयोजन सम्भव नहीं था एवं इस कार्यशाला का इस आशा से समापन किया जाता है कि उपस्थित अधिकारी यहां प्राप्त प्रशिक्षण का लाभ उठाकर अपने-अपने कार्यालयों के कार्यों को अधिक से अधिक हिन्दी में करवाएंगे तथा स्वयं भी करेंगे, जिससे पटियाला प्रभार राजभाषा विभाग द्वारा ''ख'' क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, दरीबाखान

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की इकाई एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की शाखा राजपुरा दरीबा खान के राजभाषा विभाग के तत्वावधान में सम्पूर्ण कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करने की प्रेरणा देने एवं कार्य के दौरान आने वाली कठिनाइयों के निराकरण हेतु दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला दिनांक 21.8.97 से 22.8.97 तक आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में क० राजभाषा अधिकारी डॉ० जयप्रकाश शाकद्विपीय ने राजभाषा हिन्दी संबंधी संवैधानिक उपबंधों, अधिनियम, नियम, हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण, विराम चिह्न, टिप्पणी लेखन, पत्राचार, देवनागरी में तार प्रेषण, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं आदि के बारे में जानकारी दी।

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं लेखक श्री जगदीश चन्द्र शर्मा ने हिन्दी शब्दों के अर्थ परिवर्तन के सिद्धान्तों के बारे में जानकारी देते हुए परिवर्तन हुए शब्दों का व्यावहारिक अभ्यास करवाया तथा सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार अधिकाधिक कार्य हिन्दी में ही करने पर जोर दिया।

इकाई के उपमहाप्रबन्धक, श्री अशोक कुमार सिन्हा ने इस प्रकार की कार्यशालाओं का महत्व बताते हुए कहा कि टिप्पणी एवं पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है, उन्होंने तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दों के लिए आम बोलचाल के सरल शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखने पर जोर दिया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री कान सिंह चौधरी, महाप्रबन्धक ने कहा कि इकाई में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास प्रशंसनीय हैं, उन्होंने कार्यशाला के प्रतिभागियों से अपना सभी कार्य हिन्दी में ही करने का आह्वान किया।

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मुख्य प्रबन्धक (अंयस्क सज्जीकरण) श्री रंजीत कुमार गौड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि यद्यपि इस इकाई में कम्पनी की अन्य इकाइयों की अपेक्षा पत्राचार की अच्छी स्थिति है किन्तु फिर भी हमें शत-प्रतिशत पत्राचार के लक्ष्य को हासिल करने हेतु सभी के सहयोग की आवश्यकता है। उन्होंने प्रशिक्षित होने वाले कर्मचारियों को सरल हिन्दी प्रयोग करते हुए सभी काम यथासंभव हिन्दी में ही करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर कार्यशाला के प्रतिभागी सर्व श्री रतन लाल बाहेती, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री एसक्के० शर्मा, श्री राम चन्द्र चौधरी एवं श्री कृष्णपाल सिंह राठौड़ ने भी कार्यशाला की उपयोगिता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि ने ''हिन्दी प्रयोग पुरस्कार योजना'' के विजेताओं श्री गोविन्द लाल विजयवर्गीय एवं श्री डालचन्द जाट को नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यशाला के प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य भी प्रदान किया गया।

समापन समारोह का संचालन डॉ० जयप्रकाश शाकद्विपीय, क० राजभाषा अधिकारी ने किया।

इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लि०

इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड में 26 अगस्त, 1997 को कार्यपालकों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

निगम के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री दिलीप कुमार ने कार्यशाला का उदघाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ईसीआईएल में हिन्दी के कार्यान्वयन के संबंध हुए निरीक्षण के बारे में अधिकारियों को जानकारी दी एवम् अधिकारियों से निवेदन किया कि वे अधिकाधिक पत्राचार हिन्दी में करें। उन्होंने अधिकारियों से यह भी कहा कि समय-समय पर आयोजित होने वाली हिन्दी कार्यशाला से फायदा उठाकर निगम में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में अपना सक्रिय योगदान दें, ताकि हम राजभाषा के प्रसार एवम् प्रचार के संबंध में निगम की प्रतिष्ठा स्थापित कर सकें।

कार्यशाला दो भागों में आयोजित हुई। प्रात: प्रारम्भिक सत्र में श्री प्रवीण कुमार चोपड़ा, सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु खनिज प्रभाग, हैदराबाद ने ''राजभाषा नीति, अधिनियम एवम् नियम'' विषय पर विस्तार रूप से अधिकारियों को जानकारी दी। दूसरे सत्र में श्री गजानन पाण्डेय, सहायक निदेशक (राजभाषा), एन.एफ.सी. ने ''हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण'' विषय पर अधिकारियों को सम्बोधित किया। उन्होंने हिन्दी भाषा का प्रयोग करते समय वर्तनी संबंधी होने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों के बारे में अधिकारियों को अवगत किया।

परमाणु ऊर्जा विभाग

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, तमिलनाडु

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी परनी संयंत्र, तूतीकोरिन (तमिलनाडु) में 29 एवं 30 जुलाई, 1997 को संयंत्र के 18 कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस शुभ अवसर पर संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री के. श्रीनिवासन ने कहा कि हिंदी कार्यशाला का मूल उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है जिससे हिंदी में काम करने की झिझक दूर हो।

राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचिन के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री एम. श्रीधरन ने कहा कि हिंदी कहीं भी किसी पर थोपी नहीं जा रही है। सरकार हिंदी पढ़ने वालों को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा दे रही है। इसलिए हिंदी के बारे में प्रचलित गलतफहमियों को दूर कर राजभाषा हिंदी को सहजतापूर्ण अपनाएं। इस बारे में राजभाषा विभाग द्वारा देश के कोने-कोने में स्थापित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों का सहयोग लें।

श्री डब्ल्यू.एस.ए. कान्तैया, उप महाप्रबंधक ने अपने भाषण में कहा कि किसी भी देश की आत्मा उसकी राष्ट्रभाषा होती है और उसका सम्मान करना प्रत्येक देशवासी/नागरिक का कर्त्तव्य है। अत: सरकारी कर्मचारी होने के नाते, राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार में यथोचित सहयोग देना चाहिए।

श्री सी.जी. सुकुमारन, निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) भारी पानी बोर्ड, मुंबई ने कहा कि भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन के कर्मचारियों द्वारा दर्शाए गए हिंदी मोह को और बढ़ावा दिया जाएगा।

श्री एम.पी. महाजन, महाप्रबंधक, भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन ने कहा कि हिंदी और तमिल की लिपियों में काफी समानताएं हैं। इसलिए तमिल भाषियों को हिंदी सीखना आसान है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रशिक्षण संबंधी निश्चित की गई लक्ष्य सीमा को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी राष्ट्र की अनमोल धरोहर को समय की कसौटी पर खरा उतारना है।

इस हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एस.पी. श्रीवास्तव ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हिंदी सीखने के लिए भारत सरकार ने बहुत सी सुविधाएं प्रदान की हैं। अत: प्रशिक्षार्थियों को इन सुविधाओं का पूरा लाभ उठाना चाहिए। भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में गत सालों में हुई हिंदी गतिविधियों की प्रगति की उन्होंने सराहना की।

समापन सत्र के दौरान प्रशिक्षार्थियों ने कार्यशाला के बारे में अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के द्वारा उन्हें अपनी भूली हुई हिंदी को ताजा करने का मौका मिला है और कार्यशाला का आयोजन सुनियोजित ढंग से किया गया है।

सीरी, पिलानी

देश की स्वाधीनता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने दिनांक 21-22 अगस्त, 1997 को प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। संस्थान के प्रशासनिक अनुभागों के 40 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में सम्मिलित होकर संस्थान में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में योगदान दिया।

दो दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में अपने आधार व्याख्यान (की-नोट एड्रेस) में संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डॉ. परमेश्वर दास व्यास ने इस कार्यशाला के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा भविष्य में इस प्रकार के आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. व्यास के अनुसार यह एक व्यावहारिक कार्यशाला थी जिसमें प्रशासन नियंत्रक से लेकर अवर श्रेणी लिपिक तक के कर्मचारी आमने-सामने बैठकर संस्थान के कामकाज में हिन्दी के उपयोग को बढ़ाने की दिशा में प्रयत्नशील दिखाई दिए। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रशासन कार्मिकों ने अपना काम हिन्दी में करने का निश्चय किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के प्रयासों से निर्धारित लक्ष्य पूरे होंगे तथा संस्थान के प्रशासनिक कामकाज में एकरूपता आएगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस दिशा में सामने आने वाली सभी कठिनाइयों को दूर करने की दिशा में संस्थान की ओर से हर संभव सहायता देने का प्रयास किया जाएगा।

कार्यशाला के उद्देश्य की चर्चा करते हुए संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री नरेश पाल ने उपस्थित अतिथियों को बताया कि सामान्य तौर पर इस कार्यशाला का उद्देश्य अपनी राजभाषा को सम्मान प्रदान करना है क्योंकि स्वाधीन भारत के तीन प्रतीक चिह्नों (राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान एवं राष्ट्रभाषा) का आदर करना प्रत्येक देशवासी का परम कर्त्तव्य है। प्रशासनिक हिंदी कार्यशाला के आयोजन के पीछे छिपे विशेष उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से अपने प्रशासनिक सहयोगियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है। उनकी झिझक व संकोच को दूर करके नियमित अभ्यास की ओर ले जाना है, ताकि ये लोग अपना दैनिक कामकाज हिन्दी के माध्यम से करने लगें। अपने सशक्त एवं रोचक व्याख्यान में कई उदाहरणों द्वारा उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों में आत्मविश्वास बढ़ेगा, कामकाज में एकरूपता आएगी, सुगमता आएगी। अपने व्याख्यान को समाप्त करते हुए उन्होंने प्रतिभागियों का आह्वान किया कि वे ऐसी हिन्दी का उपयोग करें जिसे वे आसानी से लिख सकते हों। शब्दकोश, शैली इत्यादि के चक्कर में न पड़कर सरल, स्पष्ट व सुगम हिन्दी का प्रयोग करने की सलाह देने के बाद उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्य को अवश्य पूरा करेगी।

उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी श्री स्वतन्त्र कुमार सदाना ने कार्यशाला के महत्व व आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा आश्वासन दिया कि इस प्रकार की कार्यशालाएं नियमित रूप से हर तीन माह बाद करवाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला के संयोजक एवं संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री श्याम नारायण मिश्र ने उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए कार्यशाला की उपयोगिता एवं अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के कार्यक्रम की चर्चा करते हुए उन्होंने विभिन्न सत्रों में दिए जाने वाले व्याख्यानों,

अभ्यास कक्षाओं, प्रदर्शन सामग्री इत्यादि पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में विभिन्न वक्ताओं द्वारा व्याख्यान दिए गए।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, दरीबाखान

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की इकाई राजपुरा दरीबा खान में अधिकारियों को राजभाषा हिंदी का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान देने के उद्देश्य से दिनांक 29.9.97 से 30.9.97 तक दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दो दिवसीय कार्यशाला में डॉ॰ जयप्रकाश शाकद्विपीय, क. राजभाषा अधिकारी ने पत्राचार, देवनागरी में तार, पदनाम, टिप्पणी लेखने का अभ्यास करवाया तथा राजभाषा हिन्दी के नियम, अधिनियम तथा संवैधानिक व्यवस्थाओं, हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण आदि की जानकारी दी।

शब्दों का अर्थ परिवर्तन विषय पर श्री जगदीश चन्द्र शर्मा, गिलुण्ड ने जानकारी दी तथा वरिष्ठ उप ज़िला शिक्षा अधिकारी श्री शिवनारायण शर्मा ने शुद्ध हिन्दी लेखन पर अपना लेख पढ़ा।

कार्यशाला दिनांक 30.9.97 को मुख्य प्रबन्धक (अयस्क सज्जीकरण) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री रंजीत कुमार गौड़ के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हमें अपना संपूर्ण कार्यालयीन कार्य सरल हिन्दी में करना चाहिए, हो सकता है प्रारंभ में हमें शब्दों के प्रयोग में कठिनाई हो, लेकिन प्रयास से एवं नियमित अभ्यास से यह कमी स्वत: ही दूर हो जाएगी।

कार्यशाला के प्रतिभागियों में से श्री ए.के. जैन, श्री यू.एम. पारीक, श्री हेमराज मालवी, श्री के.एस. सिवाराव, श्री बालूराम मेनारिया ने भी कार्यशाला की उपयोगिता पर विचार व्यक्त किए।

प्रतिभागियों को विशेष रूप से कार्यशाला के लिए तैयार किया गया संदर्भ साहित्य ''कार्यशाला संदर्शिका'' दी गई।

कार्पोरेशन बैंक, मंगलूर

कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय ने अपने लिपिकीय कर्मचारियों के लिए दो दिन की हिन्दी कार्यशाला, अपने कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय बलमट्टा, मंगलूर में 10 और 11 जुलाई, 1997 को आयोजित की।

श्री एस. सूर्य नारायणन, प्राचार्य, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने कर्मचारियों को अपनी शाखा/कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने की सलाह दी। श्री एन. चन्द्रशेखरन, वरिष्ठ प्रबंधक ने ऐसे कार्यक्रमों का भरपूर लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। स्थानीय शाखाओं/प्रधान कार्यालय से कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय ने प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम/नियम से अवगत कराया। श्री प्रभाकर पंडा, राजभाषा विभाग ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन भी उन्होंने किया।

इस कार्यशाला में पर्याप्त मार्गदर्शन श्री पी.के. मेनन, उप महाप्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक ने दिया। इस अवसर पर मंगलूर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारियों श्री टी.जी. शेष शयन, श्री प्रकाश पई, श्री नवीन चन्द्र आर्य, श्री किशोर काकडे और डॉ. वि.एस. सारदा, श्रीमती शोभा चन्द्रहास और श्रीमती शांता किणी ने कार्यशाला में व्याख्यान दिए। श्री दीपक वैद्य एवं श्री रत्न कुमार शेणै ने कार्यशाला आयोजन में निष्ठापूर्वक सहयोग दिया। श्री मध्वराज एवं श्रीमती अनुराधा ने कर्मचारी सुविधा सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यशाला समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सी.एम. तिवारी थे। डॉ. ज.प्र. नौटियाल, प्रबंधक एवं प्रभारी ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम सफल रहा व समस्त प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मुख्यालय दीपक परियोजना

मुख्यालय दीपक परियोजना में दिनांक 1 सितम्बर से 6 सितम्बर 97 तक छ: दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर्नल के.सी.के. नायर ने की। उन्होंने कहा कि हम सब इस कार्यशाला से प्रेरणा लें कि अपना सरकारी काम-काज अधिक-से-अधिक हिन्दी में करें। कार्यशाला के द्वारा कार्यसाधक कर्मचारियों में हिन्दी में काम करने की झिझक और कठिनाइयों को दूर करना है। साथ ही राजभाषा नीति, हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण और प्रोत्साहन योजना के बारे में प्रशिक्षित कराना भी है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग बढ़ाने के लिए सहयोग की आवश्यकता है। तत्पश्चात कर्नल के.सी.के. नायर ने प्रतिभागियों का हौंसला बढ़ाने हेतु प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

भारत हेवी प्लेट एण्ड वेसल्स लिमिटेड, विशाखापट्टणम

आंध प्रदेश के विशाखापट्टण्म शहर में भारत हेवी प्लेट एण्ड वेसल्स लिमिटेड के प्रशिक्षण एवं विकास संस्थान में 25 और 27 जून, 1997 को राजभाषा कार्यान्वयन एकक के तत्वावधान में कंपनी के विभिन्न विभागों के कार्यपालकों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला चलाई गई। 26 जून, को बी.एच.पी.वी. के वाणिज्य प्रभाग के मुख्य महाप्रबंधक श्री बी. राधामोहन राय द्वारा हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री बी. राधामोहन राय ने कहा कि तेलुगु भाषियों के लिए हिन्दी भाषा पढ़ना और लिखना सरल है, इसे आसानी से सरख सकते हैं। कार्यालयी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग करना प्रत्येक कर्मचारी का कर्त्तव्य है।

मानव संसाधन प्रभाग के महा प्रबंधक एवं बी.एच.पी.वी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री वी.वी. रमणमूर्ति ने इस समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने भाषण में हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन की

आवश्यकताओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी और कहा कि भारत का प्रत्येक नागरिक हिन्दी जानता है इसलिए हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है।

आंध्र विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती सैसद मेहरून इस समारोह की मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की उपयोगिता के बारे में हिन्दी भाषा के प्रसार एवं विकास में केन्द्र सरकार के कार्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं दूरदर्शन का योगदान महत्वपूर्ण है।

हिन्दी कार्यशाला के प्रथम सत्र 26 जून को सुबह 8-30 बजे से 9-30 बजे तक "प्रतिभागियों द्वारा पंजीकरण एवं राजभाषा का प्रयोग"—विषय पर श्रीमती वी. सत्यनारायण, बी. एच. पी. वी. अंशकालिक प्राध्यापिका द्वारा चलाया गया। दूसरा सत्र सुबह 10.45 बजे से 12.15 बजे तक "राजभाषा अधिनियम एवं नियम" विषय पर हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के राजभाषा अधिकारी श्री ओ. सत्यनारायण राव द्वारा वक्तव्य दिया गया। तीसरा सत्र दोपहर 1.15 बजे से 2.45 बजे तक डी.सी.आईएल. के उप प्रबंधक (हिन्दी) श्री बी. रामनारायण द्वारा "हिन्दी में पत्राचार की पद्धतियां-कंपनियों में अभ्यास" विषय पर चलाया गया। चौथा ओर अंतिम सत्र 3.00 बजे से 4.30 बजे तक "राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन" विषय पर एच. पी. सी. एल. के हिन्दी अधिकारी श्री टी. महदेव राय ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

दिनांक 27.6.1997 को सुबह 8.30 बजे प्रथम सत्र "हिन्दी में टिप्पणी लेखन में व्यावहारिक अभ्यास" विषय पर बी. एच. पी.वी. के अंशकालिक प्राध्यापक श्री पी.एल.एन. मूर्ति द्वारा चलाया गया। दूसरा सत्र सुबह 9.45 बजे से 11.15 बजे तक "व्यावहारिक हिन्दी और अनुवाद" विषय पर विशाखा इस्पात संयंत्र के कनिष्ठ अधिकारी (हिन्दी) श्री बी. पापाजी द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तीसरा सत्र सुबह 11.15 बजे से 12.30 बजे तक "राजभाषा हिन्दी और व्याकरण की साधारण जानकारी" विषय पर हिन्दी शिक्षण योजना के प्राध्यापक के रामसिंह शेखावत द्वारा व्याख्यान दिया गया। चौथा और अंतिम सत्र म. 1.15 बजे से 2.45 तक "कार्यालयी टिप्पणी तथा प्रारूप लेखन में प्राथमिक सिद्धांत और अभ्यास" विषय पर भी उन्होंने ही व्याख्यान दिया।

इसके उपरान्त दोपहर ठीक 3.15 बजे हिन्दी कार्शाला का समापन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला संबंधी अपने विचार एवं सुझाव हिन्दी में दिए गए। कनिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री एस. ए. रशीद द्वारा कार्यशाला संबंधी रिपोर्ट संक्षेप में प्रस्तुत की गई। सभाध्यक्ष श्री एन.के.एम. मोदरी, वरिष्ठ प्रबंधक (का.आं.सं.) ने अपने भाषण में कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दी। इस कार्यशाला में 17 कार्यपालकों को श्री एन.के.एम. पोदरी ने प्रमाणपत्र प्रदान किए। कनिष्ठ हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन से सभा समाप्त हुई।

समिति समाचार

केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय

इस कार्यालय की पुर्नगठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 26वीं बैठक दिनांक 27.6.1997 को श्री जेड. बी. नगरकर, आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 24 सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में सर्वप्रथम पिछली बैठक में किए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा की गई। समिति को सूचित किया गया कि दिनांक 24.6.97 को मुख्यालय में ''प्रेम ही जीवन है'' विषय पर राजभाषा संगाष्ठी का आयोजन किया गया। हिन्दी पत्राचार के बारे में चर्चा करते हुए यह बताया कि जिन अनुभागों/प्रभागों द्वारा हिन्दी पत्राचार निर्धारित लक्ष्य से कम किया जा रहा है उन्हें इसमें अपेक्षित सुधार करने के लिए पत्र भेज दिया जाए। समिति को यह सूचित किया गया कि आयुक्त कार्यालय में दो कर्मचारी ऐसे हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है। इन कर्मचारियों को यह सुझाव दिया गया कि वे अपने प्रयत्नों से प्राइवेट उम्मीदवार के रूप में आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करें। जिन कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग/हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण नहीं दिया गया है, उन्हें हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर में प्रशिक्षण देने के लिए नामित करने के बारे में की गई कार्रवाई से समिति को अवगत किया गया। फाइलों पर हिन्दी में टिप्पण लिखने के संबंध में समिति को बताया गया कि आयुक्त कार्यालय में फाइलों पर अधिक से अधिक टिप्पणियां हिन्दी में लिखी जा रही हैं। इस संबंध में अध्यक्ष ने कहा कि यह प्रयास किया जाए कि कम से कम प्रत्येक फाइल पर कुछ न कुछ टिप्पणी हिन्दी में लिखी जाए।

इस्पात मंत्रालय, नई दिल्ली

इस्पात मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन यमिति की बैठक दिनांक 30.6.98 को संयुक्त सचिव श्री नरेश नारद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मंत्रालय के विभिन्न अनुभागों, डेस्कों आदि द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कार्य की प्रगति की समीक्षा की। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विखापट्टणम्, कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने अपने कार्यालयों की हिन्दी की प्रगति से समिति को अवगत किया। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री सी. आपाराव, महाप्रबंधक (कार्मिक) ने बैठक में कहा कि उनके उपक्रम में भारत सरकार की सभी प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं और इन योजनाओं के अतिरिक्त निगम ने अपने स्तर पर भी अनेक योजनाएं चालू की हुई हैं। हिन्दी पुस्तकों की खरीद के संबंध में उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष निगम द्वारा 2 लाख रूपये की हिन्दी की पुस्तकें खरीदी गई। कुद्रेमुख आयरन कंपनी लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री मंगल प्रसाद ने कहा कि उनके उपक्रम में सभी कर्मचारियों को हिन्दी आती हैं लेकिन उन्हें हिन्दी में काम करने में कठिनाई महसूस होती है। इस संबंध में अध्यक्ष ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि अधिकारी एवं कर्मचारी अपना काम हिन्दी में करने लिए कितनी रुचि लेते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहन क्षणिक हैं और प्रेरणा शाश्वत है। इसलिए हिन्दी में काम करने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को मानसिक रूप से प्रेरित किया जाना आवश्यक है। अध्यक्ष, कुद्रेमुख आयरन और लिमिटेड को यह भी निर्देश दिए कि वे सभी फार्म तथा मानक मसौदे आदि हिन्दी में तैयार कराएं जिससे कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने में स्वतंत्रता होगी ओर उनकी रुचि भी बढ़ेगी।

नराकास, पटियाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पटियाला की 25वीं बैठक 25.4.97 को आयकर आयुक्त एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री लाल नेगी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में 31 अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में फाइलों पर टिप्पणयां हिन्दी में लिखने आशुलिपिकों को हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए नामित करने, कर्मचारियों, अधिकारियों के लिए उनके कार्यालयों की प्रकृति के अनुरूप कार्यशालाएं आयोजित करने तथा तकनीकी कार्यों से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रशिक्षण की अनिवार्यता आदि विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई और समुचित निर्णय भी लिए गए। अध्यक्ष ने सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि अधिकतर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी भाषा का ज्ञान है फिर भी अपेक्षित मात्रा में हिन्दी में कार्य नहीं हो रहा है। इसके लिए सभी अधिकारियों को अपने कार्यालयों में आवश्यक प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि पटियाला में केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों की संख्या लगभग 60 है। परन्तु इसमें से कुछ कार्यालय अपनी रिपोर्ट नहीं भेजते हैं। हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए अधिकारियों को स्वयं हिन्दी में काम करना चाहिए जिससे कि वे आदर्श स्थापित कर सकें। अंत में उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

मुख्य आयकर आयुक्त, पटना

पटना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 2.5.97 को मुख्य आयकर आयुक्त श्री शिवाकांत झा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। जिन कार्यालयों से हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्टें प्राप्त नहीं हुई हैं उन सदस्यों से कहा गय कि वे अपनी तिमाही प्रगति रिपोर्टें निर्धारित प्रोफार्मा में भरकर यथासमय भेजें। जिन कार्यालयों द्वारा राजभाषा नियम, धारा (3) का अनुपालन नहीं किया जा रहा है, उन्हें इसकें शत-प्रतिशत अनुपालन करने के लिए कह गया। इसी प्रकार जिन कार्यालयों द्वारा हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में नहीं दिया जा रहा है तथा मूल पत्राचार के अंतर्गत भी निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप हिन्दी में नहीं किया जा रहा है, उनसे भी इस दिशा में समुचित कदम उठाने के लिए कहा गया। बैठक में सह भी निर्णय किया गया कि कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पण और प्रारूपण का व्यावहारिक प्रशिक्षण तथ राजभाषा विषयक नियमों आदि की जानकारी देने के लिए कार्यशालाओं व आयोजन किया जाए। अंत में समिति के अध्यक्ष श्री शिवाकांत झा ने अप व्यक्तव्य में कहा कि हिंदी में काम करते समय हमें देशी या विदेशी शब्द को प्रयोग करने में झिझकना नहीं चाहिए। ऐसा कदापि नहीं है कि अंग्रेज

लिखने से हम कहीं अधिक सम्मान प्राप्त करते हैं। अगर किसी व्यक्ति में ऐसी धारणा है तो वहां गलत है।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, इलाहाबाद

केन्द्रीय परिमंडल, के. लो. नि. वि. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 3.6.1997 को इंजीनियर आर. एस. सिंह, निर्माण सर्वेक्षण, सह कार्यपालक इंजीनियर (मुख्य) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों की समीक्षा की गई। सदस्य सचिव ने समिति को बताया कि अधीनस्थ मंडल कार्यालयों ने अपने से संबंधित विभिन्न मदों पर समुचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है ओर इस संबंध में यथावश्यक निर्देश भी कर दिए गए हैं। अध्यक्ष ने निर्देश दिए कि कार्यपालक इंजीनियर भविष्य में अपने मंडल से संबंधित अनुपालन रिपोर्ट 15 दिनों के भीतर भेजना सुनिश्चित करें जिससे कि वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त हो सके। इलाहाबाद केंद्रीय परिमंडल की प्रगति पर अध्यक्ष द्वारा संतोष व्यक्त किया गया और उन्होंने कहा कि इस प्रगति को यथावत बनाए रखा जाना चाहिए। उप केन्द्रीय उपमंडल को प्रथम, द्वितीय तथा वाराणसी केन्द्रीय उपमंडल-I में हो रही हिन्दी की प्रगति पर भी अध्यक्ष द्वारा संतोष व्यक्त किया गया ओर उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं सहयोगियों को इस प्रगति के लिए बधाई दी। कार्यपालक इंजीनियर को यह निर्देश भी दिया गया कि वे लगनऊ केन्द्रीय उपमंडल-5 तथा 2 के सहायक इंजीनियरों को हिन्दी की प्रगति में सुधार लाने के लिए अपने स्तर पर निर्देश जारी करें।

बैंक नाराकास, अहमदाबाद

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की बैठक 9 जुलाई, 1997 को बैंक के महाप्रबंधक श्री रमेश शाह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अधिकारियों ने भी भाग लिया। सर्वप्रथम सदस्य सचिव ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत किसा तथा समिति के पूर्व सदस्य सचिव श्री शिवशंकर वर्मा की सेवाओं के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात् बैंकों की हिन्दी के कामकाज की प्रगति की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान नगर के विभिन्न बैंकों में हिन्दी के कामकाज को आगे बढ़ाने और राजभाषा के प्रचार-प्रसार पर गम्भीरता से विचार किया गया। राजभाषा विभाग के हिन्दी शिक्षण योजना के उप निदेशक श्रीमती शिल्पा माहले ने विभिन्न प्रकार के हिन्दी प्रशिक्षणों की विस्तृत जानकारी दी और यह अनुरोध भी किया कि प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों को इन सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड, धनबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद की बैठक 30.6.97 को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के अध्यक्ष, सह प्रबंध निदेशक श्री ए. के. सहाय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में धनबाद नगर के केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, राष्ट्रीयतकृत बैंकों/निगमों/उपक्रमों आदि के विभागाध्यक्ष सदस्यों के रूप में उपस्थित थे। बैठक में सर्वप्रथम अध्यक्ष द्वारा समिति के सदस्यों का स्वागत किया गया। अपने उद्‌बोधन में समिति के अध्यक्ष ने कहा कि इस प्रकार की बैठकों को प्रभावशाली बनाया जाना चाहिए और जो निर्णय बैठकों में लिए जाएं उन्हें क्रियान्वित भी किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि समिति की बैठकों में सदस्य कार्यालयों के विभागाध्यक्षों की उपस्थिति अनिवार्य है। उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों से यह भी अनुरोध किया कि वे भविष्य में इस बैठक में नियमित रूप से उपस्थित होते रहे। बैठक में राजभाषा अधिनियम एवं नियम के अर्न्तगत जारी किए गए सभी सामान्य आदेश, वार्षिक कार्यक्रम, हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट आदि पर विचार-विमर्श किया गया और इस संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए।

आयकर आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, रायपुर

केन्द्रीय उत्पाद सीमा शुल्क एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, रायपुर के मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक17.6.1997 को श्री सी. सेन, आयुक्त की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। समिति को बताया गया कि पिछली बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। समिति को यह भी बताया गया कि मुख्यालय को वर्ष 1996-97 की अवधि में राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य निष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए "अमर कंटक" नामक हिन्दी पत्रिका के छः अंक प्रकाशित हो चुके हैं और इसकी प्रतियां संबंधित कार्यालयों को भेजी जा रही हैं की जानकारी भी समिति को दी गई। जबलपुर प्रभाग द्वारा हिन्दी पत्राचार के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं किया गया हैं। इस संबंध में यथावश्यक कार्रवाई करने के लिए संबंधित अधिकारी को कहा गया।

आकाशवाणी, कडपा

आकाशवाणी, कडपा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 1.5.1997 को अधीक्षण अभियंता श्री जे. वेंकटरमन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सदस्य सचिव ने बताया कि पिछली बैठक में फैसिस्ट कंपनी से हिन्दी मैनुअल टाइपराइटर खरीदने के लिए जो निर्णय लिया गया था, इस संबंध में अभी समुचित कार्रवाई नहीं हो पाई है। तथापि लेखाकार ने समिति को यह आश्वासन दिया कि अगली बैठक होने से पहले टाइपराइटर की खरीद हो जाएगी। कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर करने के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने का भी निर्णय किया गया। समिति को यह भी बताया गया कि पिछले सत्र में प्राज्ञ में उत्तीर्ण हुए 2 अभ्यर्थियों को एकमुश्त पुरस्कार ओर नगद पुरस्कार देने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

पश्चिम रेलवे, कोटा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की बैठक 1.9.97 को मंडल रेल प्रबंधक, कोटा श्री लाजपत राय थापर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में सर्वप्रथम सदस्यों का स्वागत किया और कहा कि हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट देखने से पता चलता है, कि अनेक कार्यालय ऐसे हैं, जहां निर्धारित लक्ष्यों से बहुत कम काम हिन्दी में हो रहा है। उन्होंने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे बपना सारा कामकाज निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखकर हिन्दी में करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। उन्होंने यह भी कहा कि सभी कार्यालय अपनी प्रगति रिपोर्टों को समय से भेजें ताकि उनकी रिपोर्टों की समीक्षा की जा सके। अपने वक्तव्य में उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि इस बैठक में कार्यालय प्रधान उपस्थित न होकर वे अपने किसी सहासक या कर्मचारी को भेज देते हैं, जिससे बैठक में उचित निर्णय लेने में असुविधा होती है। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने सभी कार्यालय प्रधानों से पुन: अनुरोध किया कि वे बैठक में स्वयं उपस्थित हों और यदि किसी अपरिहार्य कारण से उपस्थित न हो सके तो अपने दूसरे वरिष्ठ अधिकारी को बैठक में उपसिंति होने के लिए नामित करें।

हिन्दी की प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की चर्चा करते समय यह निर्णय लिया गया कि जिन कार्यालयों से प्रगति रिपोर्टें प्राप्त नहों हो पाई हैं उन्हें पत्र भेजे जाएं और यदि संभव हो तो उनसे सम्पर्क भी किया जाए। मूल पत्राचार के अंतर्गत जिन कार्यालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं पाई गई, उनके सदस्यों को भविष्य में इस दिशा में आवश्यंक सुधार लाने के लिए कहा गया गौर इस संबंध में संबंधित कार्यालयाध्यक्षों ने इस संबंध में आश्वासन भी दिए।

सिंडिकेट बैंक, बीजापुर

बीजापुर, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 25.6.97 को मंडल प्रबंधक श्री ह. वे. कामत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के प्रधान, बैंकों एवं उपक्रमों के प्रबंधक एवं प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक में सदस्य कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में विचार-विमर्श किया गया और सदस्यों के द्वारा उठाई गई समस्याओं का भी समाधान किया गया। समिति को बताया गया कि वर्ष 1996-97 के लिए समिति की ओर से नगर राजभाष चलशील्ड प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें दिल्ली दूरसंचार प्रबंधक के कार्यालय को प्रथम स्थान, केनरा बैंक उच्च तकनीक कृषि शाखा को द्वितीय और सिंडिकेट बैंक मुख्य शाखा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इन कार्यालयों के प्रधानों को चलशील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

रेल इंजन कारखाना, जमालपुर

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 30.4.97 को श्री अरूण कुमार तिवारी, मुख्य कारखाना प्रबंधक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में अध्यक्ष ने राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रयोग-प्रसार के लिए कारखाना का संकल्प दुहराया। उन्होंने कहा कि हिन्दी में किए जा रहे कार्यों को और आगे बढ़ाने के लिए प्रयास जारी रहने चाहिए। अपने वक्तव्य में उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी की सेवा करना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य तो है ही साथ ही यह हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। इसके बाद पिछली बैठक के कार्यवृत की पुष्टि की गई।

कारखाना में हिन्दी की प्रगति की समीक्षा करते समय समिति को बताया गया कि धारा 3(3) के अन्तर्गत शत-प्रतिशत प्रलेख हिन्दी-अंग्रेजी द्विवाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं और पत्राचार में 98% हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। स्थानीय फार्मों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है तथा रजिस्टरों, डायरियों, फाइलों आदि पर भी विषय द्विभाषी रूप में लिखे गए हैं। इस बारे में अध्यक्ष ने सभी शाखा अधिकारियों को निर्देश दिए कि अनुशासनात्मक मामलों में केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाए। कर्मचारियों के हिन्दी शिक्षण, हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण के संबंध में चर्चा करते समय समिति को बताया गया कि सभी आशुलिपिकों एवं टंककों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है और हिन्दी शिक्षण के लिए 26 अहिन्दीभाषी कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

आकाशवाणी, मुम्बई

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, मुम्बई की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 21.5.97 को केन्द्र निदेशक श्रीमती उर्वशी जोशी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम पिछली बैटक में किए गए निर्णयों पर चर्चा की गई। इसके बाद हिन्दी प्रगति की समीक्षा की गई और संबंधित अनुभागों आदि को वार्षिक कार्यक्रम 1997-98 में उल्लिखित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास करने के लिए आवश्यक प्रयास करने के लिए कहा गया।

आकाशवाणी, जयपुर

आकाशवाणी, जयपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 14.4.97 को केन्द्रीय अभियंता श्री विरेन्द्र कुमार सिंगला की अध्यक्षता में हुई। बैठक में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विभिन्न मदों पर चर्चा की गई। हिंदी ज्ञान एवं प्रशिक्षण के संबंध में चर्चा करते समय यह निर्णय किया गया कि यह केन्द्र ''क'' क्षेत्र में आता है और यहां कार्यरत सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान प्राप्त है। अत: इन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। इस केन्द्र में धारा 3(3) का शत-प्रतिशत अनुपालन हो रहा है और हिंदी मे प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिंदी में दिए जा रहे हैं। तकनीकी अनुभाग के कार्यों को भी अधिक से अधिक हिंदी में ही किया जा रहा है। इसके अलावा बैठक में वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करने, स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में प्रतियोगिताएं आयोजित करने तथा राजभाषा से संबंधित पुस्तकों को खरीदने आदि के संबंध में भी निर्णय लिए गए।

केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क आयुक्त कार्यालय, सूरत

इस आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 13.6.97 को अध्यक्ष एवं आयुक्त श्री एस.के. भारद्वाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सदस्यों का स्वागत करते हुए अध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य मे कहा कि राजभाषा नीति के अनुसार कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का उत्तरदायित्व है। इस संबंध में उन्होंने गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति पर भी बल दिया। बैठक में राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों की ओर सभी उपस्थित सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का भी अनुरोध किया।

राजभाषा संगोष्ठी

आयकर कार्यालय, जालन्धर

जालन्धर नगर के केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/बैंकों/निगमों/उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों/कर्मियों की वार्षिक संगोष्ठी आयकर कार्यालय जालन्धर में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में 29 व्यक्तियों ने भाग लिया। संगाष्ठी का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति व आयकर आयुक्त, श्रीमती एस. के. औलख ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए अनुरोध किया कि वे राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 1997-98 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्रिय योगदान दें, ताकि राजभाषा विभाग के तथा बाहर से आने वाले अन्य उच्च-अधिकारियों को यह प्रभाव मिले कि जालन्धर में सभी कार्यालय राजभाषा हिन्दी में काम के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने सदस्यों से यह उम्मीद भी की, कि वे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर की राजभाषा संबंधी सभी गतिविधियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे।

इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से वर्ष 1997-98 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने, हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत कक्षाओं/परीक्षाओं के आयोजन तथा राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अन्य मुद्दों पर प्रभावी रूप से चर्चा की गई। संगाष्ठी का संचालन सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किया गया। सर्वकार्यभारी, अधिकारी, हिन्दी शिक्षण योजना व अपर आयकर आयुक्त रेंज-1, जालन्धर श्री टी. लाल ने सदस्यों को उचित मार्ग दर्शन प्रदान किया।

अखिल भारतीय नागर विमानन राजभाषा सम्मेलन

देश की स्वाधीनता की स्वर्ण जयंती के अवसर पर और हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य में नागर विमानन मंत्रालय के तत्वावधान में 3 सितम्बर, 1997 को मुम्बई में अखिल भारतीय नागर विमानन राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर नागर विमानन मंत्री श्री सी.एम. इब्राहिम, मंत्रालय के सचिव श्री महाराज कृष्ण काव, संयुक्त सचिव श्री आज्ञा पाल सिंह, संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति की संयोजिका श्रीमती वीणा वर्मा, नागर विमानन हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्यगण तथा अनेक वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय स्तर पर पहली बार आयोजित इस ऐतिहासिक सम्मेलन में नागर विमानन सैक्टर में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई और इस बात का जायजा लिया गया कि किन-किन क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जा सकता है। विमानन क्षेत्र के विभिन्न कार्यों में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में आने वाली कठिनाइयां एवं उनके समाधान के बारे में भी विचार-विमर्श किया गया। सम्मेलन की प्रस्तावना मंत्रालय के निदेशक (राजभाषा) श्री रघुनाथ सहाय द्वारा प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज के रंगों वाली आकर्षक ''स्मारिका'' तैयार की गई थी, जिसका विमोचन संसद सदस्य एवं संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति की संयोजिका श्रीमती वीणा वर्मा ने किया। अपने उद्बोधन में श्रीमती वीणा वर्मा ने नागर विमानन में हिन्दी के प्रयोग पर सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी को अब पोस्टरों एवं मंचों से कार्यालय की डेस्कों पर प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए और संगठनों द्वारा प्रकाशित की जा रही आकर्षक गृह पत्रिकाओं को यात्रियों के ज्ञानवर्धन व मनोरंजन के लिए उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

नागर विमानन मंत्री ने अपने आशीर्वचन में सरल एवं सुग्राह्य शब्दों का प्रयोग करने पर बल दिया। उन्होंने इस अवसर पर विभिन्न संगठनों द्वारा ''राजभाषा के प्रयोग'' से संबंधित आकर्षक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया, जो मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सभी संगठनों द्वारा अपने-अपने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को दर्शाते हुए लगाई गई थी।

इस अवसर पर नागर विमानन मंत्री जी ने हिन्दी में अच्छा काम करने वाले संगठनों और कर्मचारियों को अपने कर-कमलों से पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

समारोह के अंतिम सत्र के अंत में विभिन्न संगठनों के कर्मचारियों द्वारा तैयार किया गया ''अनेकता में एकता'' नामक एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। मंगलाचरण श्लोकों से प्रारंभ होकर यह रंगारंग कार्यक्रम राष्ट्रीय गान के साथ समाप्त हुआ।

सोलापुर के मंडल कार्यालय में विचार-गोष्ठी

भारतीय स्वाधीनता की स्वर्ण जयंती मनाने के लिए बनाई गई कार्ययोजना के तहत सोलापुर के मंडल कार्यालय में दिनांक 14 अगस्त 97 को ''राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त'' के जीवन तथा कार्य पर विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री डी. लाकरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जाने-माने हिन्दी साहित्यिक डॉ. भगवानदास तिवारी उपस्थित थे। विचारगोष्ठी के प्रारंभ में राजभाषा अधिकारी श्री पांडुरंग गुंगले ने स्वाधीनता की पूर्व संध्या पर आयोजित इस विचारगोष्ठी में उपस्थितों का स्वागत करते हुए आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट किया और कहा कि, ''हिन्दी साहित्य के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास के बाद मैथिलीशरण गुप्त जी की रचनाओं का रसास्वादन करने वालों की संख्या सर्वाधिक है क्योंकि उनकी कृतियों में सहजता और स्पष्टता के अतिरिक्त राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कृति की अप्रतिम झांकी दिखाई देती है। उन्होंने बताया कि गुप्त जी ने अपनी कृतियों के जरिए देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम और मानवता की भावनाएं जागृत करने के साथ-साथ हिन्दी को वास्तव में राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए प्रचारक का कार्य किया।

इस अवसर पर उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री एस.पी. खाडे जी ने कहा कि ''राजभाषा विभाग द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन किया जाता है और इसकी मुख्यालय द्वारा सराहना की जाती है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी अधिकारी और

कर्मचारी इससे प्रेरणा लेकर अपने-अपने कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करें।

इस अवसर पर राजभाषा अधीक्षक श्रीमती रोहिणी अत्रे ने मैथिलीशरण गुप्त जी की काव्यप्रतिमा और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से दिये गये संदेश का सोदाहरण विस्तृत विवेचन किया। राजभाषा सहायक कु. चित्रा चव्हाण ने प्रमुख अतिथि डॉ. भगवानदास तिवारी और उनकी साहित्य साधना का परिचय कराया।

मुख्य अतिथि डॉ. भगवानदास तिवारी जी ने मैथिलीशरण गुप्त जी की समग्र साहित्य यात्रा का समालोचन करते हुए कहा कि गुप्त जी ने भली-भांति जान लिया था कि कविता केवल मनोरंजन का विषय नहीं बल्कि उपदेश का विषय है और इसी को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतवासियों के मन में स्वदेश और स्वभाषा पर अतीव प्रेम करने का महान संदेश दिया है। डॉ. तिवारी ने बताया कि गुप्त जी ने भारत की प्रादेशिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को ध्यान में रखकर कविता के माध्यम से लोगों में आदर्श गांधीवाद और नवतावाद के बीज बोकर राष्ट्रीय एकता, बंधुत्व और सामंजस्य बनाए रखने के लिए देशवासियों का मार्गदर्शन करने का उल्लेखनीय कार्य किया है।

मंडल रेल प्रबंधक डा. लाकरा ने कहा कि देश को आजादी दिलाने में साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अतः स्वतंत्र भारत को आदर्श देश बनाने हेतु गुप्त जी की सीख और असीम देशभक्ति का सच्चे दिल से अनुकरण करने की अत्यंत आवश्यकता है।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

राजभाषा क्लब दुर्गापुर की ओर से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन नेताजी भवन में किया गया। इस कवि सम्मेलन में देश के प्रख्यात साहित्यकार एवं प्रमुख कविगण ने गजल, गीत, हास्य-व्यंग्य आदि विधाओं से श्रोताओं को विभोर कर दिया।

इस सम्मेलन में श्री शैल चतुर्वेदी, श्री कुंवर बेचैन, श्री कैलाश गौतम, डा॰ उर्मिलेश, श्री अंसार कम्बरी, श्री ओम नारायण शुक्ल, डा॰ शंकर सहर्ष, आदि कवियों ने कविता पाठ किए।

सर्वप्रथम मुख्य संरक्षक व प्रबंध निदेशक दुर्गापुर स्टील प्लांट, ए एस पी के कार्यपालक निदेशक एवं कार्यपालक (का. एवं प्रशा.) ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इसके उपरान्त मुख्य अतिथि श्री एस.जी. सिंह, प्रबंध निदेशक, दुर्गापुर स्टील प्लांट एवं विशिष्ट अतिथि श्री आर.एल. शर्मा, कार्यपालक निदेशक, ए एस पी ने सभी कवियों को शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। तत्पश्चात कार्यपालक निदेशक श्री आर.पी. सेठ ने स्मारिका का विमोचन किया।

अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य संरक्षक व प्रबंध निदेशक डी.एस.पी. ने कहा कि यह वर्ष साहित्यिक दृष्टिकोण से इसलिए महत्वपूर्ण है कि इस वर्ष महाप्राण निराला व गोरखपुरी फिराक की जन्मशती मनाई जा रही है। दुर्गापुर के हिन्दी व अहिन्दी भाषियों के बीच यह कवि सम्मेलन एक मज़बूत सूत्र होगा जिसमें इन्हें बांधा जा सकता है। राजभाषा क्लब के संरक्षक व कार्यपालक निदेशक, ए एस पी श्री आर.एल. शर्मा ने राजभाषा क्लब की जानकारी दी। कार्यपालक निदेशक (का. एवं प्रशा.) श्री टी. तिवारी ने अपने वक्तव्य में राजभाषा क्लब के क्रियाकलापों की चर्चा की व संक्षेप में कवियों का परिचय देते हुए उन्हें मंच पर बुलाया। कवि सम्मेलन का संचालन प्रखर साहित्यकार व कवि डा॰ उर्मिलेश ने किया व अध्यक्षता हास्य व्यंग्य के धवलागिरी एवं देश के प्रसिद्ध कवि श्री शैल चतुर्वेदी ने की। कवि सम्मेलन का प्रारंभ श्री अंसार कवि के सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद श्री शंकर सहर्ष ने अपने व्यंग बाणों की वर्षा से वातावरण प्रफुल्लित कर दिया तथा व्यंग के मशहूर कवि श्री ओम नारायण शुक्ल ने भी हास्य व्यंग द्वारा श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। श्रोता बोर न हों इसलिए अंसारी कम्बरी की गजलों ने वातावरण को रसमय बना दिया। कुंवर बेचैन ने सागर और नदी की कविता से वातावरण को तरोताजगी दी। कैलाश गौतम ने लोक गीतों, दोहों एवं भोजपुरी गीतों से श्रोताओं को मुग्ध कर लिया जिनमें अमावशा का मेला, पप्पू की दुलहन इत्यादि थीं।

डा॰ उर्मिलेश ने सन् 75 से अपने अनेक प्रकार के राष्ट्रीय गीतों से श्रोताओं को नई दिशा दी। श्रोताओं की तालियां रात भर गूंजती रहीं। शैल चतुर्वेदी की भावमुद्रा से ही ऐसा लगता था कि सारे वातावरण में हास्य व्यंग टपक रहा हो। उनका हेप्पी बर्थ डे, केशरी जी जाना नहीं मुझे छोड़ के आदि लोकप्रिय कविताएं सुनने को मिलीं।

कार्यशाला संदर्शिका

कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान देने के उद्देश्य से सरकारी कार्यालयों, सरकारी उपक्रमों, बैंकों आदि में हिन्दी कार्यशालाएं चलाई जाती हैं। कार्यशालाओं के प्रतिभागियों को संदर्भ साहित्य भी दिया जाता है। इसी संदर्भ साहित्य की पूर्ति के लिए हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, राजपुरा दरीबा खान के कं॰ राजभाषा अधिकारी एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के शाखा मंत्री डॉ॰ जयप्रकाश शाकद्विपीय के सम्पादन में कार्यशाला संदर्शिका का प्रकाशन किया गया है, जिसका विमोचन दरीबा खान के महाप्रबन्धक श्री कान सिंह चौधरी ने हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 22.9.97 को किया।

संदर्शिका में हिन्दी गीत, मानक हिन्दी वर्णमाला, सरकारी काम-काज में सरल हिन्दी का प्रयोग, गणन संख्याएं शब्दों में, संघ की सरकारी भाषा नीति, अष्टम अनुसूची में मान्यता प्राप्त भाषाएं, "सामान्य आदेश", राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976, विराम चिह्न, हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण, टिप्पणी लेखन, देवनागरी में तार, हिन्दी प्रयोग पुरस्कार योजना, बोर्ड, नाम पट्ट आदि बनाने तथा मुद्रण कार्य हेतु राजभाषा निर्देश, हिन्दी प्रारूप लेखन, सरकारी पत्रों के प्रकार व सरकारी पत्रों के नमूने, अपूर्ण पर्यायवाची शब्द, शब्द युग्म, हिन्दी (अंग्रेजी) में सामान्य टिप्पणियां जैसे महत्वपूर्ण विषयों के अतिरिक्त शुद्ध हिन्दी लेखन एवं अर्थ परिवर्तन के बारे में विशेष लेख दिए गए हैं।

प्रतियोगिताएं

हिन्दी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन योजना 96-97

सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयकर आयुक्त जालन्धर प्रभार में वर्ष 1996-97 से नकद पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई।

इस योजना के अंतर्गत पूरे जालन्धर प्रभार से 21 कार्मिकों से कार्य का रिकार्ड तथा नमूने प्राप्त हुए। इन कार्मिकों के कार्य की जांच-पड़ताल हेतु एक मूल्यांकन समिति गठित की गई, जिसके अध्यक्ष, श्री टी. लाल, अपर आयकर आयुक्त और सदस्य, श्री के.सी. शर्मा, आयकर अधिकारी तथा श्री भूपिन्दर सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा) थे। इस समिति द्वारा 26.8.97 को प्रस्तुत रिपोर्ट में की गई सिफारिशों को आयकर आयुक्त महोदया ने अपनी सहमति प्रदान की। इस योजना के अन्तर्गत 21 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

युवा कार्यक्रम और खेल विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के युवा कार्यक्रम और खेल विभाग में हिंदी पखवाड़े के दौरान 15 सितम्बर, 1997 को आयोजित हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता में विभाग के सभी राजपत्रित अधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की खास बात यह थी कि विभाग के सचिव श्री भास्कर बरूआ, भारतीय प्रशासनिक सेवा (असम-63), संयुक्त सचिव श्री प्रदीप कुमार सिन्हा तथा संयुक्त सचिव श्रीमती आशा स्वरूप और उप सचिव और अवर सचिव स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। श्री बरूआ असमिया भाषा-भाषी हैं। इस प्रतियोगिता में भाग लेकर उन्होंने न केवल हिंदी के कार्य में अपनी अत्यधिक रूचि दिखाई बल्कि अपने विभाग के अधिकारियों के लिए एक आदर्श भी प्रस्तुत किया है। सचिव और संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेकर एक मिसाल कायम की है, भारत सरकार के किसी भी मंत्रालय/विभाग के इतने वरिष्ठ अधिकारियों ने इस प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं में इससे पूर्व शायद ही कभी भाग लिया हो। उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता में विभाग के संयुक्त सचिव श्री प्रवीण कुमार सिन्हा ने 100 में से 98 अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा इस प्रकार की पहल अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य करती है जिससे राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए एक अनुकूल वातावरण बनता है।

प्रशिक्षण

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, मुम्बई के 50वें सत्र का समापन समारोह

अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, मुम्बई के 50वें सत्र का समापन समारोह दिनांक 30 जून, 1997 को अपराह्न 3.00 बजे आयोजित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, पश्चिम क्षेत्र, मुम्बई की उप निदेशक, श्रीमती सुधा श्रीवास्तव 'मुख्य अतिथि' एवं हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, मुम्बई के श्री रमेश कुड़िया, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित होकर प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया।

अतिथियों का स्वागत एवं परिचय देने के उपरांत केन्द्र प्रभारी ने प्रशिक्षणार्थियों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के विविध गतिविधियों की चर्चा करते हुए श्रीमती साधना त्रिपाठी, केन्द्र प्रभारी ने प्रशिक्षणार्थियों से यह विश्वास व्यक्त किया कि वे प्रशिक्षण के दौरान बताए गए अनुवाद तकनीक का कार्यालयीन अनुवाद में ध्यान रखेंगे तथा अनुवाद को अधिक सार्थक और उपयोगी बनाएंगे।

श्रीमती सुधा श्रीवास्तव, उप निदेशक ने 50वें सत्र के प्रशिक्षणार्थियों की ओर से ब्यूरो को भेंट की गई सरस्वती की प्रतिमा का अनावरण किया और अपने उद्बोधन में अनुवादकों को कंप्यूटर से जुड़ने की बात कही और बताया कि राजभाषा विभाग ऐसे कंप्यूटर प्रोग्राम आयोजित कर रहा है, जिनमें वे अपने कार्यालय के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। अनुवादकों का कंप्यूटर के साथ जुड़ना निःसंदेह आज के युग के साथ चलना साबित होगा। श्री कुड़िया, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने श्री पवन कुमार शर्मा, हिन्दी अनुवादक, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, अहमदाबाद को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 'स्वर्ण पदक' एवं कु० संगीता श्रीवास्तव, हिन्दी अनुवादक, आयकर विभाग, मुम्बई को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर 'रजत पदक' प्रदान किए। श्री कुड़िया ने बताया कि अनुवाद का क्षेत्र काफी विस्तृत है। अतः अनुवादक को अपना दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक रखना चाहिए। अधिक-से-अधिक अभ्यास और व्यापक दृष्टिकोण सही अनुवाद करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

केन्द्र के प्रशिक्षण अधिकारी, श्री नरेश कुमार ने मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथि को धन्यवाद देते हुए समारोह के समापन की घोषणा की।

आदेश-अनुदेश

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) का 28-10-97 का कार्यालय ज्ञापन संख्या-12024/5/197-रा. भा. (का-2)

विषय—नई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन।

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि राजभाषा विभाग ने देश के विभिन्न नगरों में तीन (3) नई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया है। समितियों के नाम, अध्यक्ष का नाम एवं पता, बैठकें आयोजित करने के माह एवं समितियों को दी जाने वाली राशि के सम्बन्ध में विवरण निम्नलिखित है:

समिति का नाम	अध्यक्ष का नाम, पदनाम एवं कार्यालय का पता	बैठकों के आयोजन समिति को दी जाने हेतु निर्धारित माह वाली प्रतिपूर्ति राशि (रूपये, प्रति बैठक)
1. आदिलाबाद	श्री आर. सी. मोदी शाखा प्रबंधक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्तालय: भूतड़ा बिल्डिंग, गांधी चौक, आदिलाबाद-504001.	मई/नवम्बर 1500/-
2. मालदा	श्री एन. विश्वास मंडल रेल प्रबंधक, मालदा (पश्चिम बंगाल)	जुलाई/जनवरी1500/-
3. हल्दिया	श्री एस. चक्रवर्ती, उपाध्यक्ष, कलकत्ता पत्तन न्यास, हल्दिया गोदी परिसर, प्रशासनिक कार्यालय, जवाहर टाउन पभवन, हल्दिया टाउनशिप (पश्चिम बंगाल)	मई/नवम्बर 1500/-

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों से अनुरोध है कि अपने नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों के नाम/पदनाम एवं पतों की सूची तैयार करके उसकी एक प्रति अतिशघ्र राजभाषा विभाग को भिजवा दें।

3. समितियों की बैठकों पर होने वाले खर्च की प्रतिपूर्ति के रूप में प्रति समिति, प्रति बैठक 1500/ रू. (3000/ रू वार्षिक अधिकतम) की राशि राजभाषा विभाग के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा, निधारित प्रपत्र में खर्च/उपयोग प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर प्रदान की जाएगी।

4. समितियों के अध्यक्षों से अनुरोध है कि समितियों की बैठकें निर्धारित माहों में अवश्य ही आयोजित करवाने की व्यवस्था करें। बैठक की सूचना, बैठक के आयोजन की तिथि से कम से कम 15 दिन पूर्व राजभाषा विभाग (मुख्यालय), नई दिल्ली एवं सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्तालयों को भिजवाने की कृपा करें ताकि बैठक में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व सुचिश्चित किया जा सके। समिति के गठन के उद्देश्यों एवं कार्यकलापों से सम्बन्धित एक स्वत: स्पष्ट टिप्पण इसके साथ आपकी जानकारी के लिए संलग्न किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में अन्य किसी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए राजभाषा विभाग (मुख्यालय) अथवा सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन से सम्पर्क करें।

पाठकों के पत्र

"राजभाषा भारती का अंक 75, मिला, धन्यवाद। "राजभाषा भारती" में प्रकाशित सामग्री को देखकर प्रसन्नता हुई। कई व्यक्तियों के इसमें अच्छे लेख प्रकाशित हुए हैं।

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन की आपने काफी जानकारी दी है। भारतीय भाषा संगम के अन्तर्गत अनेक भाषाओं की कविताओं के रूपान्तरण भी अच्छे लगे।

ऐसी सुन्दर पत्रिका के प्रकाशन और संपादन के लिए मेरी हार्दिक बधाइयां स्वीकार करें।

—सिद्धेश्वर प्रसाद, राज्यपाल, त्रिपुरा, राजभवन, अगरतला-799006.

"राजभाषा भारती" के अंक 73 और 74 मिले। दोनों अंक विषय चयन और प्रस्तुति आकर्षक और भव्य हैं। मेरी अशेष आत्मीय बधाई अंगीकार करें।

उपर्युक्त दोनों अंकों में मेरी रचनाएं-"प्रेरणा पुंज"-प्रज्ञा चक्षु डा. भरत मिश्र और हिंदी भाषा का विकास नामक पुस्तक की समीक्षा प्रकाशित हुई हैं। आपने मेरे लेखन को सम्मानित किया, उसके लिए में हृदय से आभारी हूँ।

—डा. रामप्यारे तिवारी, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, लखेश्वरी हाउस, महाराजा हाता, आरा-802301. (बिहार)

"राजभाषा भारती" (त्रैमासिक) अंक 75 प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका का हमने अवलोकन किया तथा यह पाया कि राजभाषा भारती में पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन पर प्रकाशित विशेष सामग्री पठनीय है। इसके अतिरिक्त "वली दकनी", "संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक इतिहास", "अनुवाद में गलतियां", "समकालीन हिंदी आलोचना का मध्यम पुरूष" इत्यादि लेख ज्ञानवर्धक हैं।

—नरसिंह राम, सहायक निदेशक (रा. भा.), परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयत्र तूतीकोरिन, तमिलनाडु।

"राजभाषा भारती" का त्रैमासिक अक्तूबर-दिसंबर, 1996 अंक मिला। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका के संपादक मंडल की प्रशंसा को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं हो पा रहा। इसमें जहां एक ओर डा. पूरन चन्द टण्डन का "भाषिक न्याय और न्याय की भाषा" तथा "सामाजिक परिवर्तन और अनुवाद" नामक आर.पी. सिंह के लेख बहुत ही प्रभावी रहे वहीं दूसरी ओर विश्व हिंदी दर्शन की रिपोर्ट ने यथार्थ से अवगत कराया। भारतीय भाषा संगम के माध्यम से विभिन्न भाषायी कवियों की कल्पना को हु-ब-हू हिंदी में व्यक्त करने का विभिन्न रूपान्तरकारों ने हर संभव प्रयास किया है।

—श्री एस. आर. यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा), केन्द्रीय बारानी, कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, सईदाबाद, डाकघर, हैदराबाद-500059.

राजभाषा भारती के अंक 75 के लिए धन्यवाद। इस अंक की बहुमूल्य सामग्री के लिए आपको बधाई देता हूँ। विशेष रूप से डा. परमानन्द पांचाल का "वली दकनी", डा. शशि तिवारी का "संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक इतिहास" और डा. पूरन चन्द टण्डन का "भाषिक न्याय की भाषा" उल्लेखनीय हैं। इनमें भी अन्तिम दो इसलिए आकर्षक हैं क्योंकि वे भारतीय भाषाओं के मूल संस्कृत से सम्बद्ध हैं। संस्कृत सब प्रादेशिक भाषाओं की प्राणदायिनी शक्ति है। इन लेखों का भाषा सौष्ठव ही नहीं, अपितु अनुसंधानात्मक शैली इनकी विशेषता है।

आशा है कि आपकी पत्रिका भविष्य में भी इस प्रकार की सामग्री का प्रकाशन करती रहेगी।

—डा. कृष्ण लाल, आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

"भारतीय भाषाएं नदियाँ हैं और हिन्दी महानदी। हिन्दी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है। हमें इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिन्दी के बिना हमारा काम चल नहीं सकता।"

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

"जो लोग देश में हिंदी चलाने के विरोधी हैं उन्हीं के कारण तमिलनाडु में तमिल, बंगाल में बंग्ला, आंध्र में तेलगू और केरल में मलयालम का प्रचलन रुका हुआ है। यह एक ऐसा जटिल षड्यंत्र है जिसे जनता को बारीकी से समझना चाहिए। यह षड्यंत्र यदि सफल हो गया तो भारत का इतिहास विफलता बोध से ग्रस्त हो जाएगा और हम जिन मनसूबों के साथ किस्मत को बदलने और सभ्यता को नई दिशा की ओर मोड़ने की तैयारी कर रहे हैं वे धूल में मिल जाएंगे।"

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

पं. सं. 3246/77

आई एस एस एन 0970-9398

संविधान में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

351 संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भण्डार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार, (गृह मंत्रालय) लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार फोटोलिथो मुद्रणालय फरीदाबाद द्वारा मुद्रित ।